
इतवार का एक दिन
अरहान

इतवार का एक दिन

मेरे सफ़र का हिस्सा
बनने के लिए आभार।

अरहान

अरहान

पंक्ति प्रकाशन

पहला संस्करण: जुलाई, 2025
ISBN : 978-81-981755-1-9
मूल्य : ₹ 249

प्रकाशक : पंक्ति प्रकाशन
इतवार का एक दिन (कहानी संग्रह)

मुद्रक : थॉमसन प्रेस (इंडिया) लिमिटेड
आवरण : ईशिता सरकार
टाइप सेटिंग : अनु पाल

First Edition : July, 2025
ISBN : 978-81-981755-1-9
Price : : ₹ 249

Publisher : Pankti Prakashan
Email : panktihouse@gmail.com
Phone : 9129374050

Itwaar Ka Ek Din
Story Collection by *Arhaan*

माँ को समर्पित

दो शब्द लेखक के

कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे लिखना छोड़ देना चाहिए और ख़ुद को एक हारा हुआ इंसान मानकर मुझे बस अपने सर्वाइवल के लिए लड़ना चाहिए। मुझे इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि मैं कितना कमा रहा हूँ। पहले मैं ऐसा नहीं सोचता था और मेरे ख़याल से शायद कभी किसी को ऐसे सोचना भी नहीं चाहिए। पर आजकल मुझे लग रहा है कि मैं शायद जीवन में न जाने क्या ही कर रहा हूँ। कुछ भी सही नहीं है। सब कुछ तितर-बितर सा है। ऐसा लग रहा है जैसे सब कुछ ख़त्म सा हो गया है।

मैंने इन दिनों लिखना छोड़ दिया है। मुझे लगने लगा है कि मेरे अंदर लेखक जैसी कोई बात नहीं है। बस कुछ एक जैसे अंत और प्रारूप वाली कहानियाँ लिख देने से कोई लेखक नहीं हो जाता है। जब भी मुझे लगता है कि मैं अब एक लेखक नहीं रहा तब मैं हरुकी मुराकामी का कोई भी नया उपन्यास उठाता हूँ और उसे पढ़ना शुरू कर देता हूँ। मुराकामी के उपन्यास को पढ़कर लगने लगता है कि जैसे मेरे अंदर भी एक लेखक है और मैं भी कुछ बेहतरीन लिख सकता हूँ। मुराकामी को पढ़ते ही मेरे अंदर कहानियों के कई नए प्लॉट हिलोरे मारने लगते हैं। कई किरदार मेरी आँखों के सामने ठीक वैसे ही रक़्स करने लगते हैं जैसे सड़ चुकी लाशों में धीरे-धीरे कीड़े बिलबिलाने लगते हैं।

मेरे दिमाग़ में कई सारी कहानियाँ है जो बस इसलिए नहीं आ पाती क्यूँकि मैं उन कहानियों के बारे में सही ढंग से सोचता नहीं हूँ या फिर सोचना नहीं चाहता। एक लड़की जिसकी लाश कुछ दिनों पहले उसकी छत पर पड़ी मिली थी वो अब भी इस इंतज़ार में है कि मेरे द्वारा लिखा जाने वाला कोई किरदार उसके असली क़ातिल का पता लगाएगा और दुनिया के साथ-साथ उसे भी बताएगा कि उससे जीने का हक़ छीनने वाले शख़्स का चहरा कैसा दिखता है। मेरे उपन्यास की लड़की अभी भी मेरे उपन्यास के उन पन्नों का इंतज़ार करती है जहाँ उसे इस बात का पता चल जाए कि आख़िर उसे मारा किसने।

मेरी एक कहानी में कुछ बिल्ली के बच्चे गुम हैं। वो कई दिनों से लापता हैं और उन्हें ढूँढ़ने वाला कोई नहीं। किसी ने इस बात की फ़िक्र भी नहीं की कि वो बिल्ली के बच्चे आख़िर कहाँ गए। ये बिल्ली के बच्चे मुराकामी के किसी उपन्यास में गुम हो गए होंगे। उन्हें मुझसे उम्मीदें हैं कि एक दिन मैं जब उनकी कहानी पूरी कर पाऊँगा तो सभी को पता चल जाएगा की वो कहाँ गुम हैं। गुम हो जाने वाली बिल्लियों की तस्वीरें किसी दीवार पर कैसी लगेंगी मैं इस कहानी को लिखकर महसूस करना चाहता हूँ।

मेरी एक कहानी में किरदार अब भी एक चाय की दुकान में बैठा चाय पी रहा है। मैंने उसे कहा था "अगर तुम्हारी बीवी तुमसे प्यार नहीं करती और वो शादी वाले दिन से ही कह रही है कि वो अपने प्रेमी से बहुत प्यार करती है और उसके साथ ही जीना चाहती है तो तुम्हें एक बार के लिए उसे उसके प्रेमी से मिलवा देना चाहिए और दोनों की शादी करा देनी चाहिए।" वह आदमी काफ़ी अच्छा था। उसने तुरंत ही मेरी बात मान ली और अपनी बीवी से तलाक़ लेकर उसने उसकी शादी उसके प्रेमी से करा दी। वह आदमी जानता है कि उसके इस क़दम से उसके घरवाले और उसके आस-पास के लोग उसका जीना हराम कर देंगे लेकिन वो आराम से इस चाय की दुकान में चाय पी रहा है। उसे बस यह बात कचोट रही है कि जब उसकी बीवी अपने प्रेमी के सच्चे प्यार के लिए उसे तलाक़ लेने पर मजबूर कर सकती है और अपनी बात कहने का हिम्मत रख सकती है तो क्या उसकी प्रेमिका को भी शादी के बाद अपने पति से ये सब कहना ज़रूरी नहीं था? उसे यह सब एक बार कहना ज़रूर चाहिए था। लेकिन इसकी प्रेमिका ने शादी के पाँच दिन बाद ही शिमला के मॉल रोड पर अपनी पति के साथ खींची गई तस्वीर के कैप्शन में लिखा था "बेस्ट हबी इन द वर्ल्ड।" वह आदमी चाय पीते-पीते यह सोच रहा है कि क्या उसकी बीवी तलाक़ लेने के बाद उसके साथ खींची गई शादी वाले दिन की तस्वीर के कैप्शन में यह लिखेगी "बेस्ट हबी इन द वर्ल्ड।"

मैं ऐसी कई कहानियाँ लिखना चाहता हूँ। मेरे पास ऐसी बहुत कहानियाँ हैं। मेरे अंदर अवसाद का एक काला खंडहर है जिसके ताखों पर ऐसी ही कई कहानियों के पन्ने रखे गए हैं। समानांतर ब्रह्मांड जैसी कोई चीज़ होती होगी तो

मेरी कई कहानियों के किरदार किसी न किसी ब्रह्मांड में ज़िंदा होंगे। शराब पी रहे होंगे, किसी से टूट के प्यार कर रहे होंगे या फिर किसी लाश को दफ़नाने के लिए किसी बारिश वाले दिन गीली मिट्टी पर फावड़े चला रहे होंगे। मैं अपने जीवन में बहुत सारी चीज़ें उस तरह से नहीं पा सका जैसा मैं चाहता था लेकिन मैं अपनी कहानियों में वो सब ढूँढ़ना चाहता हूँ वो सब पाना चाहता हूँ जो मैं अपनी असल ज़िंदगी में चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं उन बच्चों के बारे में लिखूँ जो जन्म लेने के कुछ ही दिनों के बाद गिनती करना सीख जाते हैं। मैं इन बच्चों के बारे में अपनी किसी एक कहानी में यह लिखना चाहता हूँ कि यह बच्चे पिछले जन्म में अपनी प्रेमिकाओं की पीठ के तिल गिनते-गिनते मारे गए थे। मैं इन बच्चों के बारे में ऐसा लिखने के बाद कभी भी उनके माता-पिता से माफ़ी नहीं माँगूँगा। इसमें माफ़ी माँगने जैसी कोई बात है भी क्या?

तालाब की उस देवी ने मुझसे माफ़ी माँगी थी क्या? मैं जब लकड़ी काट रहा था और लकड़ी काटते-काटते जब मेरी लोहे की कुल्हाड़ी तालाब में गिरी तो कहानी के अनुसार तालाब से तालाब की देवी सोने की कुल्हाड़ी लेकर आई और उन्होंने पूछा की ये तुम्हारी कुल्हाड़ी है। मैंने नहीं कहा। वो फिर तालाब के अंदर गई और दूसरी बार जब वो बाहर आयी तब उनके हाथ में चाँदी की कुल्हाड़ी थी। मैंने दूसरी बार भी कहा ये मेरी कुल्हाड़ी नहीं है। तालाब की देवी तीसरी बार पानी के अंदर गई और तीसरी बार वो जब तालाब से बाहर आयी तब उनके हाथ में मेरी लोहे की कुल्हाड़ी थी। उन्होंने मुझे मेरी कुल्हाड़ी मुझे वापिस लौटा दी और मुझसे कहा की तुम बहुत ईमानदार हो। मैं ख़ुश हुआ। वो पानी के अंदर गई और फिर कभी बाहर नहीं आई। मैंने थोड़ा इंतज़ार किया। मुझे लगा शायद वो दुबारा वापिस आए और मुझसे कहे की मैं तुम्हारी ईमानदारी से ख़ुश हूँ। इतना कहकर वो मुझे चाँदी और सोने दोनों की कुल्हाड़ियाँ दे दे। और मैं ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर लौट आऊँ और अपनी प्रेमिका को चिट्ठी में लिखूँ की मैं गाँव वापिस आ रहा हूँ तुमसे शादी करने। शहर में मुझे नौकरी मिल गई है। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। तालाब की देवी वापिस नहीं आई और कहीं किसी गाँव में एक लड़की ने तालाब में डूब कर अपनी जान दे दी। शायद, इसी तरह की लड़कियाँ मरने के बाद दुबारा जन्म लेना नहीं चाहती होंगी और

उन्हें तालाब की देवी बना दिया जाता होगा। मुझसे किसी ने माफ़ी नहीं माँगी। न ही उस लड़की ने न ही तालाब की देवी ने। माफ़ी माँगना हमेशा ज़रूरी है क्या।

माफ़ी माँगना हमेशा ज़रूरी नहीं है। मैं पिछले एक घंटे से ये लिख रहा हूँ और अब तक मैंने बस ढाई सौ शब्द लिखे हैं। मैंने घड़ी से माफ़ी नहीं माँगी है। और मैं कभी माँगूँगा भी नहीं। मुझे लगता है कि एक दिन घड़ी को दीवार से नीचे उतरकर बाज़ार जाना चाहिए और एक जोड़ी अच्छे कपड़े में इंसान की शक्ल में मुझसे किसी बार या शराबख़ाने जैसी जगह पर मिलकर मुझसे माफ़ी माँगनी चाहिए। मैं सिर्फ़ दस मिनट लेट था और उन लोगों ने उस लड़की को तालाब से निकालकर किसी ख़ाली जगह में जला दिया था। घड़ी को उन दस मिनटों के लिए मुझसे माफ़ी माँगनी चाहिए और बदले में मुझे एक अच्छी शराब पिलानी चाहिए। पर क्या ऐसा मुमकिन है? बिलकुल नहीं। मैंने सत्ताईस सालों में अलग-अलग दीवारों पर न जाने कितनी घड़ियों को दीवार पर चिपके देखा है। इनमें से कोई घड़ी कभी दीवार से नीचे उतरकर नहीं आई। घड़ियाँ कभी दीवार से नीचे नहीं आती। ये बस अपनी जगह चिपकी-चिपकी अपने शरीर से वक़्त को ठीक उस तरह नीचे गिरा देती हैं जैसे साँप एक ख़ास समय के बाद अपनी केंचुलियाँ छोड़कर निकल जाते हैं। मेरी कहानियों के कई किरदार इसी तरह अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर वक़्त की इन्हीं केंचुलियों के बारे में बात सोचते हुए फ़ीलिंग नॉस्टैल्जिक जैसे स्टेट्स डालते हैं।

अनुक्रम

प्रेत या किताब

कौन से लोग तुम्हें कब और कहाँ तलाश रहे होंगे तुम्हें इसका कोई अंदाज़ा नहीं होगा और कोई अंदाज़ा होना भी नहीं चाहिए। अगर तुम्हें इस बात का अंदाज़ा हो जाए कि लोग तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं तो तुम एक न एक दिन गाहे-बगाहे किसी गली नुक्कड़ पर लड़कियाँ घूरते, चाय की दुकान पर चाय पीते। सब्जी की दुकान से मटर खरीदते या फिर किसी दारुख़ाने में दारु पी के हंगामा करते हुए मिल जाओगे। उनकी तलाश पूरी हो जाएगी और तुम्हारी तलाश में भटकने वाले लोग कम हो जाएँगे।

तुम्हें पता है तुम्हारी खिड़की से ठीक सामने वाला जो घर है न उसमे एक पागल लड़की का प्रेत रहता है। तुम विश्वास नहीं करोगे। पर ऐसा लोगों का मानना है। लोगों ने देखा है एक लड़की को उस घर में। छत पर किताबें लिखते हुए। मैंने भी देखा था उसे एक बार, छत की मुंडेर पर औंधी-सी बैठी किताब लिख रही थी। मुझे नहीं पता की वो किताबें क्यूँ लिखती है पर इतना ज़रूर पता है कि अब तक उसने इतनी सारी किताबें तो ज़रूर लिख ली होंगी जितनी तुम्हारे घर की लाइब्रेरी में होंगी। किताबें लिखने के लिए प्रेत होना ज़रूरी होता होगा शायद।

"चाय में कितनी शक्कर होनी चाहिए?"

"एक चम्मच?"

"दो चम्मच?"

"तीन चम्मच"

दाल में कितना नमक होना चाहिए?

एक चुटकी?

दो चुटकी?

तीन चुटकी?

तुम्हारे बस्ते में कितनी किताबें होनी चाहिए?

एक किताब ?

दो किताब ?

तीन किताब ?

सौ किताब ?

जीवन में कितना प्यार ज़रूरी है ?

एक किलो ?

दो किलो ?

तीन किलो ?

चार किलो ?

आँकड़े सब कुछ नाप सकते हैं क्या ?

हाँ !

तुम कितनी दफ़ा मरे हो ?

आँकड़े झूठे होते हैं

लोग जलते है। लोग किताबें लिखते हैं। लोग किताबें जलाते हैं। किताबें जलती हैं। किताबें लोगों को जलाती हैं। लोग किताबों से बाहर जलते हैं। लोग किताबों के अन्दर जलते हैं। लोग किताब लिखकर जला देते हैं। लोग किताब जलाकर उसकी राख से किताब लिख देते हैं। पहले लोग लोग थे किताबें किताब थी। लोग अब किताब हो चुके हैं, किताब अब लोग हो चुकी है। बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियों में बहुत सारे लोग अज्ञातवास काट रहे हैं किताबों के रूप में।

पागल लड़की का प्रेत लिखता है किताबें। पर तुम्हारे घर में कोई खिड़की नहीं है। वो आईना है। जहाँ से दिखता है पागल लड़की का एक प्रेत किताबें लिखते हुए। तुम आदमी नहीं हो। प्रेत नहीं हो। तुम क्या हो। तुम किताब हो क्या। मैं प्रेत हूँ क्या। ये सब सपना है क्या ? हम पागल हैं क्या ?

गुम हो जाने वाले लोग क्या बनते होंगे ?

प्रेत या किताब ?

• • •

भूरी आँखों वाली लड़की

आज आसमान पहले से काफ़ी ज़्यादा नीला है। उस स्केच पेन से भी ज़्यादा नीला जिसे मैंने बचपन में एक दुकान से चुराया था। मेरे पास उस दिन एक ही स्केच पेन खरीदने के पैसे थे और मैं नीले रंग का स्केच पेन ही खरीदने वाला था लेकिन जब उस भूरी आँखों वाली लड़की ने गुलाबी स्केच पेन खरीदा तब मैंने उसकी पसंद को अपनाते हुए गुलाबी स्केच पेन खरीद लिया। खरीदने को तो मैंने गुलाबी स्केच पेन खरीद लिया, लेकिन मेरी आँखें अब भी उस नीले स्केच पेन पर थी। मैं अगर उस दिन वो नीला स्केच पेन नहीं चुराता तो मेरी आँखें उसी नीले स्केच पेन पर लटकी होती और मैं उस दुकान से जाने के बाद शायद अंधा हो जाता। इसलिए, मैंने वो नीला स्केच पेन चुरा लिया। स्केच पेन चुराने के बाद मेरी आँखें डर और ख़ुशी से चमकने लगी। मेरी आँखों में उस समय शायद कोई चमकता तारा टूट कर गिर गया था। उस टूटते तारे में इतनी चमक थी दुकानदार ने तुरंत यह भाँप लिया कि मैंने कुछ चुराया है। वो दुकानदार भी शायद बचपन में चोर रहा होगा या फिर उसे भी कोई भूरी आँखों वाली लड़की पसंद आई होगी। उसे यह भी पता चल गया था कि मैंने वो चुराया हुआ स्केच पेन अपने पैंट के इलास्टिक में छिपाया है।

मैं अच्छे घर से था इसलिए दुकानदार ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा। उसने वो नीला स्केच पेन मुझसे छीन लिया और मेरा हाथ पकड़कर मुझे मेरे घर ले गया। उसने पूरी बात मेरी माँ को बता दी। मेरी माँ उस समय उस भूरी आँखों वाली लड़की की माँ से बात कर रही थी। भूरी आँखों वाली लड़की की माँ को भी पता चल गया कि मैंने एक स्केच पेन चुराया है। वो मुस्कुराई। मैं उस समय टीवी पर सिर्फ़ कार्टून देखता था इसलिए मुझे उसकी मुस्कुराहट का अर्थ समझ नहीं आया। बाद के दिनों में जब मैने स्टार प्लस के सीरियल देखने शुरू किए तब मुझे उसकी मुस्कुराहट का अर्थ समझ आया।

उस दिन मेरी माँ ने मुझे उस दुकानदार, उस भूरी आँखों वाली लड़की और उसकी माँ के सामने एक थप्पड़ मारा और दुकानदार को सॉरी बोलने के लिए कहा। दुकानदार हँसा और कहा, "जाने दीजिए बच्चा है।" मैं बच्चा था लेकिन न जाने क्यों मुझे उस दिन भूरी आँखों वाली लड़की की मुस्कुराहट और दुकानदार की हँसी को देखकर लगा कि शायद मुझे बच्चे की जगह एक बड़ा लड़का होना चाहिए था। मैं अगर बड़ा लड़का होता तो शायद उस दुकानदार को बाद में बहुत मारता। बहुत। इसलिए नहीं कि उसने मेरी चोरी की शिक़ायत मेरे माँ से की। इसलिए कि उसने हँसते हुए कहा जाने दीजिए बच्चा है।

बाद के दिनों में मैं जब बड़ा हुआ तब मैंने कभी स्केच पेन नहीं चुराया। मेरी बाजुओं में मछलियाँ आने लगी थी। मेरी मूँछ घनी हो गई थी। मेरी आवाज़ भारी हो गई थी और कई बार टीवी पर मैं लड़का-लड़की को चूमते देख अजीब सा हो जाता था। मुझे बड़ा होना शुरुआती दिनों में थोड़ा अजीब लगा लेकिन फिर बाद में मुझे ये रोमांचित करने लगा। मैं स्केच पेन की जगह उस भूरी आँखों वाली लड़की के दिल को चुराने की कोशिश में लग गया।

भूरी आँखों वाली लड़की अब गुलाबी स्केच पेन की जगह गुलाबी दुपट्टे के साथ नज़र आती। बड़े हो जाने के बाद हम सब में शायद एक मिलावटीपन आ जाता है। भूरी आँखों वाली लड़की जो बचपन में घर-घर खेलते समय मुझे चूम लेती थी बड़े होने के बाद जब भी मुझसे मिलती नज़रें झुका लेती। नज़रें झुकाकर लड़कियाँ कितना कुछ बोल लेती हैं मुझे उस भूरी आँखों वाली लड़की ने ही सिखाया था। भूरी आँखों वाली लड़की की माँ मेरे बड़े हो जाने के बाद भी कई बार वैसे ही मुस्कुराई थी जैसे बचपन में मेरे स्केच पेन चुराने के बाद माँ से मार खाने पर मुस्कुराई थी।

बड़े हो जाने के बाद जब पहली दफ़ा मैं शराब पीकर घर आया था और मेरी माँ ने मुझे काफ़ी सालों के बाद मारा था तब भी भूरी आँखों वाली लड़की की माँ अपनी बालकनी से मुस्कुराई थी। मेरे और उस भूरी आँखों वाली लड़की के घर की बालकनियों में ज़्यादा फ़ासला नहीं था। इसलिए एक दिन जब उस भूरी आँखों वाली लड़की मुझे अपने घर की बालकनी से चूम रही थी तब

उसकी माँ मुस्कुराने की जगह चिल्लाई थी। उस दिन सिर्फ़ मैं मुस्कुराया था। मैं इतनी ज़ोर से मुस्कुराया था कि मेरी मुस्कुराहट से नीले स्केच पेन की स्याही गिरने लगी थी ये अलग बात थी कि मेरे हाथों में उस भूरी आँखों वाली लड़की का गुलाबी दुपट्टा था। भूरी आँखों वाली लड़की की माँ उस दिन के बाद से मेरे सामने कभी नहीं मुस्कुराई। मुस्कुराने की बारी मेरी थी। मैं अब भूरी आँखों वाली लड़की की माँ को देखकर ठीक वैसी ही मुस्कान बिखेरता जैसे उस समय चलने वाले एक फेमस धारावाहिक 'कसौटी ज़िंदगी की' में उर्वशी ढोलकिया मुस्कुराती थी।

भूरी आँखों वाली लड़की को भी यह पता चल गया था कि बचपन में घर-घर खेलते समय चूमने और बड़े हो जाने के बाद बालकनी-बालकनी खेलते हुए चूमने में एक बहुत बड़ा अंतर होता है। उतना ही बड़ा अंतर जितना एक गुलाबी स्केच पेन और नीले रंग के स्केच पेन में होता है। वो मुझसे कट-कटकर रहने लगी। उसे पता था कि मैंने उसका दिल चुरा लिया है लेकिन वो बड़े होने से ज़्यादा सहम गई थी। वो अब बालकनी में अपने कपड़े सुखाने नहीं आती थी। मैं बालकनी में बैठा-बैठा उसका इंतज़ार करता लेकिन वो नहीं आती। उसके कपड़े सुखाने उसकी माँ आती और मुझे देखकर वो उसके उन कपड़ों पर गुलाबी दुपट्टा ओढ़ा देती। मुझे उस दिन पता लगा कि कुछ ख़ास तरह के कपड़ों को भी नंगे हो जाने का डर होता है। उसकी माँ की ये हरक़त मुझे अंदर तक कुरेद गई। मैंनें उस दिन अपने आप को घण्टों आईने में देखा। मैं कहीं से भी रंजीत, सुधीर, प्रेम चोपड़ा, अजीत, क़ादर ख़ान (विलेन वाला) या शक्ति कपूर जैसा नहीं दिखता था। मेरी एक दूर की बुआ मुझे देख के मेरी माँ को कहती थी कि भाभी गोलू एक़दम आमिर ख़ान की तरह लगता है। देखिएगा ये लड़की लेकर नहीं भागेगा लड़की लोग इसको लेकर भागेगी। मैं बुआ की बात सुनकर मुस्कुराता लेकिन मेरी माँ कहती कि "ये पता नहीं कौन-कौन से दिन दिखाएगा तुम नहीं जानती।" मेरी माँ ये बात शायद ऊपरी मन से कहती थी। बुआ द्वारा मुझे आमिर ख़ान कहे जाने पर मेरी माँ भी मुस्कुराई थी। मेरी माँ को मेरी उस दूर की बुआ की बात अच्छी लगती थी।

भूरी आँखों वाली लड़की की बुआ जब आई थी तब एक दिन उसने मुझे भूरी आँखों वाली लड़की को देखकर मुस्कुराते हुए देख लिया था। उसने भूरी आँखों वाली लड़की की माँ को कहा था "भाभी, अब ज़माना पहले जैसा नहीं रहा। देख सुनकर रिया का भी कहीं रिश्ता तय कर दीजिए नहीं तो पछताना पड़ सकता है। हमको रिया का भी रहन–सहन कुछ सही नहीं लगता और बाक़ी अगल–बगल के लड़कों के बारे में क्या ही कहें। उस दिन भूरी आँखों वाली लड़की के चेहरे पर मैंने अजीब सा दुःख देखा। भूरी आँखों वाली लड़की की माँ ने अपनी ननद से बहुत दुःखी आवाज़ में कहा था, "जवान बेटी छाती पर मूसल के समान होती है।" मुझे उस दिन भूरी आँखों वाली लड़की की माँ पर बहुत दया आई थी।

उस दिन के बाद से मैंने भूरी आँखों वाली लड़की की तरफ़ देखना भी बंद कर दिया। मुझे अचानक से लगने लगा कि मैं अब तक कोई पाप कर रहा था। मुझ जैसे ही लोगों की वजह से माँओं को बेटियाँ छाती पर मूसल की तरह लगने लगती है। भूरी आँखों वाली लड़की को यह पता नहीं था कि मैं साहित्य पढ़ने लगा हूँ और बहुत कुछ समझने लगा हूँ। भूरी आँखों वाली लड़की को मेरी ये बेरुखी इतनी खल गई कि एक दिन उसने मुझे बालकनी के बगल में मौजूद कोने वाली जगह पर अकेला पाकर चूम लिया। अचानक से चूमा जाना लड़कों के लिए गिलास में जलपरी मिल जाने जैसा होता है। मैं अचानक से चूमे जाने को साहित्य में ढूँढ़ नहीं पाया और मैं भी उसे चूम बैठा। हम दोनों जब एक–दूसरे को चूम रहे थे तब शायद कहीं दूर किसी समंदर में कोई जलपरी शांत नीले पानी में गुलाबी सूरज का चित्र बना रही थी। मेरे होंठ काले थे लेकिन उस दिन अचानक से गुलाबी होने लगे, उस जलपरी द्वारा बनाए जा रहे सूरज से भी ज़्यादा गुलाबी। वो जलपरी उस दिन अपने सूरज को पूरी तरह गुलाबी रंग में रंग देती लेकिन भूरी आँखों वाली लड़की की माँ और बुआ आ गई। मैंने उस दिन नीले रंग का कुर्ता पहना हुआ था जिसके कॉलर पर गुलाबी छींटे आ गए थे। मैं वहाँ से चला गया। मुझे शायद जाना नहीं था। मुझे नहीं जाना चाहिए था।

मैं कुछ देर बाद जब वापिस आया था तब देखा कि वो भूरी आँखों वाली लड़की जमीन पर औंधी लेटी हुई है। उसके होंठ जो गुलाबी थे नीले हो गए। उसका सारा शरीर नीला हो गया था। ठीक मेरे कुर्ते जितने नीला। मैं उस दिन चिल्लाया था। शायद आख़िरी बार। भूरी आँखों वाली लड़की नीले होंठ लिए बहुत दूर चली गई थी। मुझे यक़ीन नहीं हुआ कि वो मुझे छोड़कर कहीं भी जाएगी। मैंने सबको चिल्लाकर कहा कि वो कहीं नहीं गई है। वो नीली होकर देखो उस आसमान के नीलेपन में छिप गई है। मैं चिल्लाता रहा। मेरे ऊपर कई थप्पड़ कई जूते कई मुक्के पड़ते रहे। मेरी माँ, मेरे भाई मेरे पिता उस भूरी आँखों वाली लड़की के पिता, उसके भाई,...। पता नहीं कौन कौन।

आज सालों बाद मैं इस क़ैदख़ाने से निकला हूँ। यहाँ इस क़ैदख़ाने में लोग मुझे स्केच पेन वाला पागल कहते थे। स्केच पेन से रंगने से क्या कोई पागल हो जाता है भला। मैंने सालों से आसमान नहीं देखा। वे बता रहे थे कि एक नई बीमारी आयी है इसलिए पागलखाने के कुछ पागलों को छोड़ दिया जाएगा। उन्होंने सबको छोड़ दिया लेकिन मुझे नहीं। मुझे उन सबसे ख़ुद को छुड़ाकर बाहर आना पड़ा। इतना नीला आसमान मैंने कभी नहीं देखा था। हो न हो वो भूरी आँखों वाली लड़की लौट आयी है। मैं कहता था न वो मुझे कहीं भी छोड़कर नहीं जा सकती। उसके आने से आसमान कितना नीला हो गया है। मेरे इस नीले स्केच पेन से भी ज़्यादा।

•••

इतवार का एक दिन

कहानियाँ कैसे शुरू होनी चाहिए? एक राजा था एक रानी थी! ऐसे या फिर कहानियों को किसी और तरह से शुरू करने के लिए थोड़ी शराब पीनी चाहिए और फिर जैसे समझ आए वैसे लिख देना चाहिए। मेरे ख़याल से कहानियों के लिए हमें ज़्यादा सोचना नहीं चाहिए। कहानियों को बस ऐसे ही लिख देना चाहिए। कहानियाँ ऐसे भी तो शुरू की जा सकती है कि एक आदमी प्याज छील रहा था। प्याज के छिले जाने से भी कहानी शुरू हो सकती है न। भूख की कहानी अगर प्याज छिले जाने से शुरू की जाए तो क्या बुरा है...। कुछ भी नहीं...। इस दुनिया में अच्छा क्या है बुरा क्या है...।

कभी सोचा है ये दुनिया किसी ब्लैक एंड व्हाइट फ़िल्म की तरह होती तो कैसा होता... बेशक हमें अच्छा नहीं लगता। लेकिन जब अगर किसी ने कभी कोई रंग देखे ही नहीं होते तो ये ब्लैक एंड व्हाइट दुनिया भी सहज और सामान्य होती। अभी जो हम लोग जीवन जी रहे हैं उसमें रोज़ाना हम कई रंग देखते हैं। हमें ये दुनिया सहज लगती है। हम इसी दुनिया को सच मानते हैं। लेकिन ये भी तो मुमक़िन है कि हम इस दुनिया के बहुत कम रंग देख पाते हों। बहुत कम रंग। क्या ऐसा मुमक़िन हो सकता है कि इस दुनिया में जितने रंग हैं या जितने रंग हमने अब तक देखे हैं उससे भी ज़्यादा रंग हो? हो सकता है न...शायद... हो सकता है...।

ये प्याज छीले जाने से शुरू होने वाली कहानी भी एक ऐसे ही ब्लैक एंड व्हाइट दुनिया की कहानी है। एक आदमी जिसकी शक्ल और सूरत वैसी ही है जैसे आपके किसी प्रेमी या सबसे ज़्यादा पसंदीदा दोस्त की होती है। एक लेखक अपने पाठकों को अपने कहानी के किरदार के बारे में ये बताए बिना भी की किरदार का चेहरा गेरुआ था, साँवला था, आँखें भूरी, काली, बड़ी या छोटी थी, जबड़े चौड़े या छोटे थे, कद काठी लम्बी थी, चौड़ी थी या ठिगने क़द का था...। ये बातें बताए बिना भी लेखक अपने किरदार के चेहरे को आपकी

आँखों के सामने ज़िंदा कर सकता है। लेखक यहाँ आपकी आँखों को एक दृश्य दे रहा है... आप अपने-अपने हिसाब से इस किरदार को चेहरा दे सकते हैं।

ये आदमी चौप्पिंग वुड पर प्याज काटते हुए सुंदर लग रहा है। इस आदमी की आँखें थोड़ी नम है। शायद प्याज की वजह से। ये जो शायद शब्द है न बहुत ही जलील शब्द है। पूरी दुनिया में ज़्यादातर ग़लतफ़हमियाँ और मुग़ालते इसी शायद शब्द की वजह से हैं। लेकिन यहाँ इस आदमी की आँखें थोड़ी नम हैं। ये आदमी अपने किचन में खड़ा है। किचन के ठीक बगल वाले कमरे में मौजूद एक स्पीकर से किसी मरे हुए गायक की एक ग़ज़ल चल रही है। आदमी चले जाने के बाद भी जीवन में ज़िंदा होता है। इस बात को सबसे पहले या तो प्याज से निकलने वाले वो केमिकल जानते हैं या फिर नम आँखें। ग़ज़ल सुनते हुए सिगरेट पीते हुए तथा किचन में काम करते हुए लड़के, लड़कियों को शायद सुन्दर लगते होंगे। ये शायद शब्द बहुत जलील शब्द है। ये आदमी अपने किचन के कैबिनेट में मसाले ढूँढ़ रहा है। हम सब अपने जीवन के कैबिनेट में भी तो अक्सर यहीं ढूँढ़ा करते हैं। मुझे पता है इस सस्ते मेटाफर के लिए लोग मुझे माफ़ नहीं कर पाएंगे। दुनिया में बहुत कम लोग ही माफ़ कर पाते हैं। उसे भी माफ़ नहीं किया गया था। शायद इसलिए उसके किचन कैबिनेट में ढेर सारे सोया मिल्क के गैलन ख़ाली पड़े थे। अगर ये सोया मिल्क के गैलन भरे होते तो शायद वो आज गरम मसाला और चिकन मसाला नहीं ढूँढ़ रहा होता।

वो चाहे ख़ाली डब्बे हों या ख़ाली दिल। इनके अंदर का ख़ालीपन आपको समय के पीछे खींचता है। समय के उस ज़र्रे में जब कुछ ख़ाली नहीं होता। उस आदमी को बार-बार पीछे जाना अच्छा नहीं लगता था लेकिन वो सोया मिल्क के ख़ाली गैलन को देखकर थोड़ा पीछे चला गया।

"क्या खाओगी? वेज हो या नॉनवेज" पहली बार डेट पर जाने वाले आशिकों की आवाज़ में लड़की के लिए खाना पूछते समय जो खनक होती है न उसी खनकती आवाज़ से उसने सामने वाली लड़की से पूछा।

उसने थोड़ा मुस्कुराकर और थोड़ा अपने आप को अलग जताने के अंदाज़ से जवाब दिया "मैं प्योर वेजेटेरियन हूँ, प्योर। वेजेटेरियन"

"पनीर तो खाती होगी ना"

"अरे पनीर भी वेज थोड़े होता है। मतलब मैं ऐसा कुछ भी नहीं खाती जो एनिमल्स प्रोडक्ट होता है...यू नो आई एम अ वीगन"

पहली बार बिहार से दिल्ली आने के बाद ज़िंदगी में पहली बार एस्केलेटर देखने के बाद मन में जो दुविधा पैदा होती है ठीक वैसी ही दुविधा को समझने की कोशिश के दौरान लाए जाने वाले भाव को लाते हुए उसने पूछा।

"ये क्या होता है"

"अरे वो लोग जो ऐसे चीज़ें खाते हों जो पूरी तरह से प्लांट्स से ही आती हैं वो वीगन कहलाते हैं"

"मतलब दूध तो शाकाहारी होता है... वो भी नहीं पीती।"

"नहीं, उसकी जगह सोया मिल्क पीती हूँ... और इसी मिल्क से और भी चीजे बनती हैं जैसे टोफू। सोयामिल्क का पनीर"

"सोया मतलब वो जिससे सोयाबीन का बड़ी बनता है वही न। न्यूट्रेला वाला"

"हाँ वही वही"

एक भोले-भाले बिहारी आदमी को किसी प्यारी सी चश्में वाली लड़की से प्यार हो जाने के लिए इतना काफ़ी था।

"पता है हम तो मुर्गा मीट खाते थे लेकिन आज तुम्हारी बातों के बाद एहसास हुआ है कि हमको भी ये सब नहीं खाना चाहिए"

"एग्जैक्टली, मतलब जानवरों को मारकर खाना कहाँ सही है...वो भी तो जीव हैं उनके अंदर भी...।"

वो उससे पहले अपनी बात ख़त्म करती उसने उसकी बात रोकते हुए पूछा "तुम पेटा-वेटा से हो क्या"

"नहीं, पर फॉलो करती हूँ उन्हें। एनिमल लवर हूँ"

"एक बात बोलूँ...। मैन आर आल्सो कॉल्ड सोशल एनिमल... एन्ड आई एम अ सोशल एनिमल" उसने अपने जीवन में एक बार भी इससे ज़्यादा अंग्रेज़ी नहीं बोली थी। वो इस वाक्य को बोलकर शरमा गया था। सामने बैठी लड़की भी इस बात को सुनकर शरमा गई थी। और जो लड़का समझाना चाह रहा था समझ गई थी...।

उस दिन लड़का, लड़की को पहली बार अपने घर ले गया था। उसने लड़की को बताया की अकेले रहता हूँ।

"ये मुर्गा... ये कितना क्यूट है...कितना कलरफुल है... तुम्हारा पेट है ?"

"हाँ, हाँ ये। कुटकुट है मेरा पेट एनिमल... मतलब पेट बर्ड"

आदमी जब प्रेम में होता है तो अचानक से प्यारे वाले झूठ बोलना सीख लेता है। उस आदमी ने ये देसी मुर्गा बहुत दूर बिहारी मार्किट से जाकर खरीदा था। फ़ार्म वाले चिकन खाकर उसका मन भर गया था इसलिए वो आज शाम लड़की से मिलकर आने के बाद इस मुर्गे का चिकन करी बनाने वाला था। आज से वो वीगन हो गया था इसलिए झूठ बोलते हुए और तुरंत एक पेट एनिमल का नाम सोचते हुए कहा की ये कुटकुट है उसका पेट एनिमल मतलब पेट बर्ड...। उसने सोचा नहीं था कि जिसे पेट में जाना था अब वो उसका पेट

हो चुका है... ये हिन्दी और अंग्रेज़ी के सामान उच्चारण वाले शब्दों के अर्थ में काफ़ी फ़र्क़ होता है।

"ये तुम्हारा पेट है तो तुमने इसे बाँधकर क्यों रखा है... कितना पेन हो रहा होगा उसको" उस लड़की ने अपना एनिमल लव का एक उदहारण पेश करते हुए कहा।

"अरे पता है बहुत लव करते हैं हम कुटकुट से एक दिन नहीं बाँधे थे तो बाहर चली गई थी और बगल की मिस अंजना की बिल्ली इसको दबोचने ही वाली थी कि हम बचा लिए। तभी से हम इसको बाँध कर रखते हैं।"

"कोई नहीं हम इसके लिए एक सेफ हाउस बनाएँगे...।"

उसकी सिगरेट बुझ चुकी थी और वो उन बीते दिनों की यादों से बाहर लौट चुका था। उसने सबसे पहले किचन में मौजूद उन सारे सोया मिल्क के गैलन को फ़ेंका और एक ऑनलाइन स्टोर से कुछ मसाले ऑर्डर किए और दिन की पाँचवी सिगरेट जलाई... सिगरेट बोलती है क्या? नहीं न। पर उस दिन दिन की उस पाँचवी सिगरेट ने सुलगने के 15 सेकंड बाद एक जानी-पहचानी लड़की की आवाज़ की मिमिक्री करते हुए कहा "क्यों पीते हो इतनी सिगरेट। मत पीया करो न..." सिगरेट के इतना कहने पर वो एकबारगी अचानक से कह बैठा की अरे आज से नहीं पीऊँगा। लेकिन जब उसे इस बात का अंदाज़ा हुआ कि उसे अब सिगरेटों से बात नहीं करनी चाहिए तो उसने उस सिगरेट का एक लंबा कश लिया और किचन के नल से बुझा दिया। उसने फिर दिन की छठी सिगरेट सुलगा ली। दिन की छठी सिगरेट उससे कुछ नहीं बोली। वो किचन के स्लैब पर चूल्हे के पास बैठकर तब तब सिगरेट पीता रहा जब तक उसके घर के दरवाज़े की घंटी नहीं बजी।

घंटी की आवाज़ सुनकर उसे अंदाज़ा लग गया था कि वो शायद डिलीवरी वाला लड़का होगा जो मसाले लेकर आया होगा। वो अपने बेडरूम

में गया और बेड के बगल वाले ड्राअर में अपना पर्स ढूँढ़ने लगा। अक्सर ऐसा कई बार होता है कि आदमी किसी चीज़ की तलाश में होता है और उसे कोई और चीज़ मिल जाती है। उसकी पहली तलाश यहीं रुक जाती है। उसे उस ड्राअर में दो चीज़ें मिली। एक उसका वॉलेट और दूसरी उस लड़की की तस्वीर। वो ड्राअर ख़ाली हो चुका था। ख़ाली चीज़ें खींचती है। समय के पीछे ले जाती हैं। वो उस दिन दूसरी बार समय के पीछे गया।

कमरे में घंटी की आवाज़ गूँजी थी। वो दौड़कर दरवाज़े के पास गया। दरवाज़े के पास जाने से पहले उसने ड्राइंग रूम के टेबल पर पड़े बर्थडे केक और गिफ्ट को छिपा दिया। वो बहुत ख़ुश था। उसकी प्रेमिका का जन्मदिन था। उसने दरवाज़ा खोला और उसे सामने पाकर उसको गले से लगा लिया। आदमी जब एक़दम अचानक से किसी से लिपट जाता है तब वो उस शख़्स का चेहरा नहीं देख पाता। लड़के ने भी लड़की का मुरझाया और परेशान चेहरा नहीं देखा। जब लड़की ने उसे समय से पहले उसके बाजुओं से ख़ुद को छुड़ाया तब लड़के ने पूछा "क्या हुआ सब ठीक तो है? परेशान क्यों लग रही हो। अरे तुम्हारा बर्थडे है आज हैप्पी बर्थडे"

"अतुल, तुमसे मुझे एक ज़रूरी बात कहनी है। मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकती। चीज़ें ठीक नहीं हैं। मेरी शादी तय हो गई है। मैं अगले हफ्ते अमेरिका जा रही हूँ। लड़का वहीं एक कंपनी में मैनेजर है। अच्छी खासी सैलरी है। घर है उसका। तुम्हारे साथ मैंने अपनी लाइफ़ के कुछ अच्छे मोमेंट्स बिताए हैं। लेकिन शायद मुझे लगता है मैं अमेरिका में उसके साथ इससे भी ज़्यादा अच्छे मोमेंट्स बिता पाऊँगी। तुम मुझे स्वार्थी मत समझना। मतलब अब तुमसे उतना प्यार भी नहीं रहा। अनलव सा हो गया है धीरे-धीरे।"

"क्या बोल रही हो...मतलब क्या है ये...सब ठीक हो सकता है। अमेरिका बड़ी चीज़ नहीं है... आई लव यू। आई लव यू बहुत ज़्यादा...ठीक हो जाएगा सब। बन जाऊँगा बड़ा आदमी। तुम्हारे उस अमेरिकन से भी ज़्यादा बड़ा आदमी...।"

"खुली आँखों से देखे गए सपने सच नहीं होते हैं अतुल...।"

उसे उस दिन लगा कि कभी–कभी ऑक्सीजन भी आदमी का दम घोंट सकती है इसलिए उसने एक सिगरेट सुलगा ली और सोफे पर बैठ गया।

"मैं जा रहीं हूँ। शायद अब दुबारा कभी न आ पाऊँ। और हाँ प्लीज़ सिगरेट पीना बंद कर दो"

"जो लोग किसी को इस सिगरेट के बट की तरह रौंदते हुए छोड़कर चले जाते हैं उनके मुँह से ऐसी बातें सही नहीं लगती। तुम जाओ अब। जाओ...नहीं रुको इधर आओ..."

चूमने की आवाज़ बहुत धीमी होती है लेकिन थप्पड़ हमेशा गूँजते हैं। उस दिन पहली बार उसने उसे थप्पड़ मारा। कई बार थप्पड़ हम किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं मारते। कई बार थप्पड़ हम इसलिए मार देते हैं ताकि उसे बता सकें की ज़िंदगी जब तमाचा मारती है तो कितना दर्द होता है।

वो एक थप्पड़ खाने के बाद कुछ देर खड़ी रही। लड़के को तुरंत अपनी इस हरक़त पर गुस्सा आया और वो उसके पास जाते हुए रोते हुए बोला मत जाओ...सॉरी

"तुम जानवर हो। यू आर बर्बरिक लाइक ए वाइल्ड बीस्ट..."

लड़के ने उस लड़की के मुँह से आख़िरी बार यही बात सुनी। लड़की दरवाज़ा बंद कर चली गई और वापिस नहीं आई।

वो समय से वापिस लौटा और दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़े के सामने वो मसाले वाला लड़का खड़ा था। उसने उसे पैसे दिए और वापिस अपने किचन में आ गया। आख़िरी बार वो लड़की इसी तारीख़ को एक साल पहले उसके इस घर गई थी। फ्रीज में आज भी एक बड़ा केक था। फ्रीज में जहाँ बड़ा केक रखा था वहीं एक बड़े कटोरे में चिकन के टुकड़े थे। आज सुबह से प्याज छीलने

और मसाले खरीदने तक का सारा काम उसने इस चिकन को पकाने के लिए ही किया था।

वो एक मशीन की तरह फ्रीज के पास आया और कड़ाही में चिकन को प्याज के साथ पकने के लिए छोड़ दिया। जब तक चिकन पककर तैयार होता उसने फ्रीज से केक को निकाला और मेज़ पर रख दिया। केक पर प्यारे अक्षर में लिखा था हैप्पी बर्थडे शालिनी। उसने मोबाइल को मेज़ से थोड़ी दूर इस तरह रखा की वो केक काटते हुए ख़ुद को रिकॉर्ड कर सके। वो चाहता था कि वो उसे ये वीडियो भेजकर हैप्पी बर्थडे विश करे। केक काटते हुए वो थोड़ा रो रहा था। ठीक वैसे ही जब वो सुबह-सुबह कुटकुट की गर्दन काटते हुए रो रहा था। वो रोने के बाद शैतान बन जाता था। शायद इसलिए उसने आज कुटकुट को काटने के बाद उसे खा जाने की सोची। वैसे भी आज रविवार का दिन था और उसने शराब पी थी। शराब पीने के बाद आदमी या तो शैतान बनता है या भगवान।

चिकन पककर तैयार हो चुका था। वो मेज़ पर चिकन और शराब लेकर बैठ गया और चिकन खाने से पहले उसने शालिनी को एक वीडियो भेजा। ये वीडियो वो वीडियो नहीं था जो उसने केक काटते हुए रिकॉर्ड किया। इस वीडियो में वो कुटकुट को एक तेज़ चाकू से काटते और मुस्कुराते नज़र आ रहा था।

वीडियो भेजे जाने के बाद उसे तुरंत शालिनी का एक मैसेज आया। उसने मैसेज खोलकर पढ़ा नहीं। उसे पता था उस मैसेज में क्या लिखा होगा "तुम जानवर हो। यू आर बर्बरिक लाइक ए वाइल्ड बीस्ट..." उसने मोबाइल को बंद करके एक तरफ़ रख दिया और शराब का एक लंबा घूँट लेने के बाद चिकन का लेग पीस खाने लगा।

• • •

बहेलिया

ये आम सी कहानी भी उसी आसमान की है जहाँ रात में एक ही चाँद उगा करता है। ये किसी भी तरह उस आसमान की कहानी नहीं है जहाँ 7 चाँद उगते हैं। ऐसा आसमान भी कहीं होता होगा क्या? मुझे नहीं लगता की ऐसा कोई आसमान भी कहीं होता होगा पर मेरे लगने से ही सब कुछ सही ग़लत तो नहीं हो सकता न। काफ़ी संभावनाएँ हैं कि ऐसा कोई आसमान होगा जहाँ 7 चाँद उगते होंगे। बस मुझे उस आसमान के बारे में नहीं पता है। मुझे सब कुछ थोड़े ही पता है या सबको सब कुछ थोड़े ही पता होता है। आपको पता है कि इस दुनिया में चुड़ैलें भी होती हैं?

एक बार एक लड़के ने यूँ ही सड़क पर जा रही एक लड़की के बारे में बहुत घिनौनी बात कही थी। लड़कियों के बारे में कई सारे लोग घिनौनी बातें करते हैं, उन लड़कियों के बारे में भी जिन्हें वो जानते भी नहीं। ये लड़का भी वैसा ही था। उसे इस राह चलती लड़की के बारे में कुछ भी नहीं पता था फिर भी उसने उसके बारे में एक घिनौनी बात कही। बात इतनी घिनौनी थी कि चाय के टपरी पर सरकार को गाली देने वाले लड़कों के अन्दर क्रांतिकारी की आत्मा कब्जा कर ले। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। मैंने उस लड़के को बहुत मारा। लड़का बहुत पिटा लेकिन उसने मुझ पर हाथ नहीं उठाया। मार खाता रहा। काफ़ी देर पिटने के बाद वो उठा और उसने अपना एक पैर दिखाते हुए कहा मैं अपाहिज हूँ।

मुझे बिलकुल पता नहीं था कि वो अपाहिज है। वो सोच से थोड़ा अपाहिज है ये पता था लेकिन वो पैर से भी अपाहिज है मुझे नहीं पता था। मुझे लगा था कि इसने एक लड़की के बारे में घिनौनी बात कही है तो ये शारीरिक रूप से अपाहिज नहीं हो सकता। मुझे उस पर अचानक से दया आ गई। मैं ग्लानि के लिजलिजे दलदल में गिरता चला गया। इससे पहले मैं ग्लानि के दलदल में डूब कर मर जाता, मैंने उसे चाय के दुकान से एक कप चाय बनवाकर

उसे थमा दिया। वो चाय पीता रहा। चाय पीने के बाद उसने एक बार फिर सभी लड़कियों को संबोधित करते हुए एक गन्दी और लिजलिजी बात कही और लंगड़ाता हुआ चला गया। इस बार मुझे गुस्सा नहीं आया। मैं चुपचाप बैठा रहा और सोचने लगा शायद इसके पैर और मन से अपाहिज होने की वजह कोई लड़की रही होगी। ब्रह्माण्ड में बहुत सारे ग्रह होंगे लेकिन सबसे ज़्यादा पूर्वाग्रह पृथ्वी नामक ग्रह में हैं।

मैं एक लड़की को 2 साल से ज़्यादा लम्बे समय से अपने सीने से चिपकाकर चलता हूँ। हम दोनों प्रेम के पूर्वाग्रह पर बैठकर आत्ममुग्धता का सी सॉ खेलते। वो कहा करती कि तुम्हारे सीने से ज़्यादा महफ़ूज़ जगह इस दुनिया में और कहीं नहीं हो सकती। जब वो ऐसा कहती तो मुझे उसकी आवाज़ ऐसी लगती जैसे किसी ने दुनिया के सबसे विशाल मटके में बैठकर कलिम्बा पर कोई सुन्दर सी धुन निकाली हो। कुछ लोग बस इस बात से ही ज़्यादा ख़ुश होते हैं कि कोई उनकी वजह से बहुत ख़ुश है। मैं भी ऐसे ही लोगों में से था। बहुत ख़ुश। मैंने ऐसे ही एक बार ख़ुश होकर उससे कहा था कि चलो हम एक बहुत ही ख़ुश जगह चलते हैं। वो भी बहुत ख़ुश थी इसलिए उसने भी कहा कि चलो अब हम हमेशा साथ चलते हैं।

वो ख़ुश जगह इस दुनिया की बाक़ी जगहों की तरह ही थी लेकिन उस जगह को मैंने ख़ुश जगह इसलिए कहा था क्योंकि उस जगह मैं था, वो थी और दोनों ख़ुश थे। अत्यधिक ख़ुशी किसी परत या लिहाफ़ के अन्दर रहना नहीं चाहती इसलिए हम दोनों साफ़ पानी की तरह पारदर्शी हो गए। मैं कभी इतना पारदर्शी नहीं हुआ था और न ही कभी किसी और लड़की को इतनी पारदर्शिता के साथ देखा था।

"ये तुम्हारे शरीर पर किस चीज़ का निशान है" मेरी आँखों ने उसकी पारदर्शिता को समेटते हुए पूछा।

"कुछ नहीं, टैनिंग का निशान है। आज काफ़ी दिनों बाद पूरी तरह से पारदर्शी हुई हूँ तो शरीर के उन हिस्सों पर निशान बन गए हैं जो आज से पहले कभी इतने ख़ुश और यायावर नहीं हुए थे।" ऐसा कहते हुए वह मुस्कुराई थी।

उसकी मुस्कराहट पर चाँदी का वर्क़ तब चढ़ गया जब उसने मेरी छाती पर एक निशान देखा। "यह कैसा निशान है। यह तो किसी लड़की के चिपकने का निशान है।"

मैंने कभी ख़ुद को इतने गौर से नहीं देखा था। हममें से कई लोग ख़ुद को कभी गौर से नहीं देखते। ख़ुद को गौर से देखने के लिए मैं उस ख़ुश जगह में दुःखी-दुःखी से खड़े आईने के सामने गया। मैंने देखा की मेरी छाती पर एक ख़ूबसूरत सा निशाँ है। जैसे किसी एक लम्बे बाल वाली लड़की मुझे पकड़ कर झूल गई हो और अपनी परछाई मेरी छाती पर छोड़ गई हो। सबकी छातियों पर इतने ख़ूबसूरत निशान नहीं होते। मैंने कहा "यह दुनिया का सबसे ख़ूबसूरत निशान है। ये आसमान में उड़ने वाली किसी भटकी हुई परछाई का निशान है जो शायद आज के बाद कभी नहीं भटकेगी।" उसने मेरी आँखों को बहुत प्यार से और गहराई से देखा जैसे मेरी आँखों में उसने दुनिया की हजारों रूहों को हँसते हुए देख लिया हो। मेरी बातों को सुनकर वो बहुत ज़ोर से मुस्कुराई थी। इतनी ज़ोर से की कुछ देर के लिए वो ख़ुश जगह ख़ुशी से काँप गई।

मैंने एक दिन सपने में देखा की एक बहुत बड़े पिंजरे से एक सुन्दर सा पंक्षी आज़ाद हो गया है। ये एक ख़ूबसूरत सा सपना था। मैं शायद ये सपना देखने के बाद उठने पर मुस्कुराता लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं यह सपना देखकर उठा। ठीक उस तरह जैसे सालों बाद हम अपने कमरे में अपने भीतर के सभी अच्छे बुरे इंसानों के आने की आहट से उठते हैं। यह सपना एक बुरा सपना नहीं होता अगर सपने में मैं पिंजरा नहीं बना होता। मैं सपनों में हमेशा सफ़ेद घोड़ों पर सवार होने वाला राजकुमार बनना चाहता था लेकिन इस सपने में, मैं पिंजरा बना। मैं यह सपना देखकर रोता नहीं अगर मेरे कमरे में बैठे वो लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसना नहीं शुरू करते।

मैंने कई लोगों को घंटो पज़लिंग बोर्ड गेम खेलते हुए देखा है। लोगों को पहेलियाँ सुलझाने, चालें बनानें, शह और मात देने में अच्छा लगता है। मुझे बिलकुल नहीं लगता था। मैं पहेलियाँ देखकर भाग जाता था। बचपन में, मैं चुड़ैलों से डरता था। जब बड़ा हुआ और पैसों के पीछे भागने के लिए धकेल

दिया गया तब मैं पहेलियों से डरने लगा। मुझे चुड़ैलों का चेहरा पवित्र लगता। मैं ऐसा सोचता था कि कभी मेरे घर के बाहर वाली बालकनी में कोई चुड़ैल आकर बैठ जाए तब मैं उसे कॉफ़ी पिलाऊँगा और अपनी कविताएँ सुनाऊँगा। चुड़ैल पहेलियाँ नहीं होती क्योंकि हमें पता होता है कि वो बस चुड़ैल होती हैं। इसलिए शायद मुझे ये चुड़ैलें पवित्र लगती थी। चुड़ैलें आपकी छाती पर शतरंज नहीं खेलती। चुड़ैलें आपके शरीर को बोर्ड गेम नहीं बनाती।

एक रात जब मैं ऐसी ही एक चुड़ैल के सामने बैठा अपनी एक कहानी सुना रहा था, तब उसने मेरे छाती के निशान देखते हुए पूछा "ये कैसा निशान है?"

"कैसा निशान? तुम्हें मेरे कपड़ों के अन्दर छिपे निशान कैसे दिख गए"

वो मुस्कुराई जैसे वो अपने मुस्कराहट से बताना चाह रही हो कि उसके सामने मैं बिलकुल पारदर्शी हूँ। बिलकुल अपने सबसे प्राकृतिक अवस्था में।

"एक लड़की थी। जिसे मैं हमेशा अपनी छाती से चिपकाकर रहता था। वो बहुत ख़ुश थी। ये उसी के चिपकने का निशान है।" मैंने एक बहुत ही शांत लेकिन बोझ से दबी हुई आवाज़ में यह बात कही।

उस चुड़ैल ने झट से अपने सारे कपड़े उतार दिए और मेरे सामने खड़ी हो गई। बिलकुल पारदर्शी। इतनी पारदर्शी की मुझे उसके जिस्म में अपने जिस्म की परछाई नज़र आई। वो चुड़ैल से अचानक एक आइना हो गई। मैंने काफ़ी दिनों बाद अपने छाती पर बना वो निशान आईने में देख रहा था। यह एक ख़ुश आइना था। इसने मुझे दिखाया की मेरी छाती पर एक लड़की के परछाई का निशान तो है लेकिन लड़की मुझसे लिपटी हुई नहीं हैं बल्कि मेरे जिस्म पर सलीब की तरह गुंथी हुई है। जैसे मेरी छाती कोई सूली हो और उस पर किसी ने उसे चढ़ा दिया हो। लेकिन किसने?

मैं उस चुड़ैल से बहुत कुछ पूछना चाहता था। लेकिन मैं उस चुड़ैल से कुछ भी कहता उससे पहले ही वो चली गई थी। मैंने बस एक गाड़ी के जाने की आवाज़ सुनी। मैं बहुत ज़ोर से चिल्लाना चाहता था और मैं चिल्लाया भी। मेरे चिल्लाने की आवाज़ सुनकर आस पास के पेड़ों की सभी चिड़ियाएँ एक साथ

उड़ते हुए आसमान में दूर चली गई। शायद उन्हें लगा होगा कि मैं कोई बहेलिया हूँ। जैसे मुझे लगा था कि वो मेरे साथ ख़ुश है। जैसे मुझे लगा था वो लड़का अपाहिज नहीं है। जैसे मुझे अब तक लगता है कि मैं एक बुरा आदमी नहीं हूँ। जैसे उसे शायद लगता होगा कि मैं एक पिंजरा हूँ। एक जमाने में हम दोनों एक ही आँख से सपना देखा करते थे। शायद उसने मेरा कोई सपना देख लिया होगा और शायद ऐसी जगह चली गई होगी जहाँ के आसमान में सात चाँद उगते होंगे। क्या आपको भी लगता है कहीं ऐसा आसमान होगा?

●●●

मउगा

हम शुरू से बिहारी थे। कहने का मतलब की हमारा जन्म बिहार में हुआ था और हम दिल्ली भी गए थे मुख़र्जी नगर में कलेक्टर बनने का तैयारी करने के लिए। दू साल रहे थे उहाँ। हम न तो दिल्ली वाला बन पाए न ही कलेक्टर। हम दु:खी होकर वापिस मुजफ़्फ़रपुर आ गए। पूरा एनसीईआरटी रट गए थे 6ठी क्लास से 12वीं तक का। निबंध भी ख़ूब लिखते थे लेकिन प्री भी नहीं निकाल पाए। उधर बाबूजी पहिले साल से मोहल्ला में हल्ला मचा दिए थे कि "मेरा जयप्रकाशवा इस बार कलेक्टर निकाल ही देगा"। बहुत उम्मीद बढ़ गया था। 26 के हो गए थे तो गाँव जवार का लोग अगुआ बन के भी आने लगा था। बाबूजी भी ताल पर ठोंक कर कहते थे कि "पढ़ने में बहुत तेज़ है जयप्रकाशवा कलेक्टर निकाल लेगा। हम चाहते हैं कि पहिले कलेक्टर बने उससे पहिले ही उसका बियाह करा दें, और ये हम बस अपने होने वाले समधी जी के लिए कह रहे हैं। काहे से की अगर उ अगर कलेक्टर बन गया तो मामला 1 करोड़ से कम में फरियाने वाला नहीं है, हाँ अभी बियाह करते हैं तो 15-20 लाख में ही फ़रिया जाएगा। बाद में तो उ कलेक्टर बनने ही वाला है। अरे कुछो नहीं भी हुआ तो पीओ तो जब चाहे बन ही जाएगा। मने एगो बात कह रहें हैं। वैसे भी जानते नहीं हैं क्या पीओ का कितना रेट चल रहा है। और हमरा बेटवा हैंडसम भी कम नहीं है। ई निरहुआ और खेसारीलाल का तो बात ही नहीं है ऋषि कपूरवा के बेटवा जैसा दिखता है जयप्रकशवा"

वैसे हम भी कम नहीं फ़ेंक़ते थे लेकिन बाबूजी हमसे भी दू हाथ आगे फ़ेंक़ने लगे थे और उनके फ़ेंकाई के चक्कर में हमपे बर्डन बढ़ता जा रहा था। बाबूजी हमको दिल्ली भेजते ही कलेक्टर बना बैठे थे और यहाँ सच्चाई ऐसा था कि हमको कुछ समझ ही नहीं आता था। पढ़ाई में मन भी नहीं लगता था।

हम जैसे-तैसे 2 साल दिल्ली रह के देख लिए थे। कलेक्टर बनना तो दूर प्री भी एक बार नहीं निकला। हम भी एक दिन बाबूजी से कह दिए की "हम

अब वापिस आ रहे हैं। नहीं हो पा रहा है हमसे कलेक्टर–बलेक्टर का तैयारी। हम गांवे जाके खेत खलिहान संभाल लेंगे। फ़ेंकाई बंद कीजिए आप। हम कल्हु सप्तक्रांति पकड़ के आ रहे हैं।" हम ऐसा कह के सोचे थे कि बाबूजी मान जाएँगे और घरे बुला लेंगे पर हमारे बाप भी कम ढीठ नहीं थे। उनका कहना था "कलेक्टर नहीं बने तो ठीक है, इतना छूट देते हैं लेकिन अगर कौनो सरकारी नौकरी नहीं लगा तो हम तुम्हारे यहाँ आने से पहले ज़हर खा के मर जाएँगे। तुम्हारी माई को भी खिला देंगे और तुम्हारी बहिन को भी। पूरा परिवार ख़त्म कर देंगे जान लो।"

हमको समझ में नहीं आया की बाबूजी ये अपने फेंकी गई बातों की इज्ज़त बचाने के लिए ऐसा कर रहे हैं या फिर सचमुच हमको कलेक्टर बनाना चाहते हैं। आनन–फानन में हम भी बाबूजी को रोते हुए कह दिए "बाबूजी हम सरकारी नौकरी ही करेंगे। अगिला बार से मरने वाला बात नहीं कीजिएगा। कलेक्टर नहीं बनेंगे तो क्या हुआ बीडीओ, दरोगा बन के दिखाएँगे। ये भी नहीं बने तो स्टेट बैंक में क्लर्क तो बन ही जाएँगे।"

वैसे बीडीओ–दरोगा तक तो सही था। बाबूजी ख़ुश भी हो गए थे। हल्ला भी कर दिए थे कि "बेटा दरोगा बनेगा। सब फ़ाइनल हो गया है। बस नौकरी पे जुआइन कर ले तुरंते बियाह कर देंगे" दिक्कत बस ये थी कि हमसे न दरोगा निकला न ही बीडीओ बन पाए। हाँ लेकिन जब घर लौटे तो बाबूजी को बताए कि "बाबूजी बाक़ी सब छोड़िये स्टेट बैंक में क्लर्क निकाल दिए हैं। समस्तीपुर पोस्टिंग पड़ा है। अब बियाह कराइए।"

कलेक्टर, बीडीओ, दरोगा न सही सरकारी बैंक में क्लर्क ही सही। पिताजी सब कुछ भूलकर नए सिरे से ख़ुश थे। मेरी शादी भी तय हो गई थी। वैसे हम अपनी शादी के लिए पिताजी को मना किए थे। हम सोच रहे थे पहले अपनी बहन कंचन का बियाह हो जाए। लेकिन बाबूजी परम ज्ञान देते हुए हमको समझाए कि "अरे पहले तुम्हारे बियहवा में लेंगे तभी तो कंचनवा में ख़रीचा करेंगे। क्लर्क का भी कोई कम रेट नहीं है। 25–30 से कम तो बोलेंगे ही नहीं।

घर-दुआर खेत खलिहान भी तो है। सामने वाला नहीं भी देगा तो 20 तक दे ही देगा। इसी में कंचनवा का भी बियाह फ़रिया लेंगे।

हमको वैसे पता चल गया था कि बाबूजी बिना मोटा माल लिए हमरा बियाह नहीं होने देंगे। वैसे भी हम लोग का सब बाबूजी ही फ़ाइनल करते हैं। हाँ हम लोग पियार मुहब्बत भी करते हैं पर बस खाने-पीने तक। सुमेध्वा के साथ बाबूजी एक बार पकड़ लिए थे सीढ़ी वाले रूम में। कुछ नहीं बोले थे। बस इतना कहे थे कि जो किए सो किए बाक़ी बियाह राजपूत में ही होगा। उम्र है शौक है लेकिन बियाह नहीं होने देंगे इससे। हम लोग में भूमिहार ब्राह्मण से भी नहीं चलता है। वैसे हम सुमेध्वा को समझाए थे कि हम कलेक्टर बनते ही बागी बन जाएँगे और बियाह कर लेंगे पर दिक्कत ये हुआ कि हम कलेक्टर नहीं बन पाए। हम भी थोड़े कमज़ोर ही थे इसलिए जब बाबूजी कहे की बियाह फिक्स कर दिए हैं 15 लाख तिलक पर तो हम कुछ नहीं बोले। सच कहें तो अन्दर ही अन्दर हम ख़ुश थे। काहे से की जो लड़की का फ़ोटो हमको आया था वो बहुत ही ख़ूबसूरत था। पढ़ी लिखी भी थी। पढ़ाई-लिखाई भी की थी तो दिल्ली विश्वविद्यालय से। हम जब दिल्ली में थे तब ख़ूब ट्राई मारे थे डीयू वाली लड़की सब पे। कौनो भाव नहीं दी थी। और साला ऐसा दिन भी आया की हमरा बियाह ही हो रहा था डीयू वाली लड़की से।

सब कुछ एक़दम सेट था, सब बढ़िया था। बियाह भी हो गया। 15 लाख तिलक भी मिला। आनन-फानन में एगो सिपाही लड़िका देख के कंचनवा का बियाह 10 लाख तिलक में सेट हो गया था। हम बहुते ख़ुश थे। बाबूजी भी बहुते ख़ुश थे। और जो हमारी मिसेज थी वो थोड़ी बागी टाइप की थी लेकिन हमारे परिवार में आकर ढल गई थी।

दिक्कत वहाँ से शुरू हुआ जब कंचन के ससुराल वाले शादी से 2 दिन पहले कहने लगे की "नहीं आप अपने बेटवा का तिलक 15 लाख लिए हैं। हमारा बेटा भी सिपाही बहाल हुआ है। दरोगा रिटायर करेगा। जोन थाना में है वहाँ ऊपरी आमदनी भी कचक के है। तिलक तो दस लाख ही चाहिए पर एगो

स्कॉर्पियो भी चाहिए अब। इस बात को सुनकर सबसे ज़्यादा नींद मेरी उड़ी थी। पिताजी एकबारगी परेशान हुए फिर बाद में हमको अपने कमरे में बुलाकर कहे

"सुनो, स्कॉर्पियो माँग रहा है तो दे दो। का दिक्कत है। बहुरिया घरे आ ही गई है। उनके बाबूजी से कहो स्कॉर्पियो दिला दे। केतना का आता होगा 10-12 लाख में मामला फ़रिया जाएगा।"

वैसे हम दहेज़ के ख़िलाफ़ थे। मतलब जो मिल गया वो ठीक है। लेकिन एक्स्ट्रा डिमांड करना मेरे लिए सही नहीं था। हालाँकि एक दिन हम छुट्टी के दिन अपनी मिसेज को एक बनारसी साड़ी गिफ्ट करते हुए बोल ही दिए

"अरे। कंचनवा के ससुराल वाले स्कॉर्पियो माँग रहे। अब तुम सब जानती ही हो। पहिले ही हम दोनों के बियाह में बाबूजी कितना ख़र्चा कर दिए हैं अब स्कॉर्पियो हम लोग नहीं दे सकते। तुम अपने बाबूजी से कह के हमको एगो स्कॉर्पियो दिला दो न। देखो अब तुम भी इस परिवार की सदस्य हो। तुमको भी तो इनिशिएटिव लेना होगा न। इसी में कंचंनवा का भी भविष्य सुधर जाएगा"

उस दिन अपने हिसाब से मैंने बहुत सही बात कही थी लेकिन मुझे पता नहीं था कि मेरी मिसेज दिल्ली युनिवेर्सिटी की पढ़ी लिखी है। उसने साफ़ मना कर दिया। उसने कहा

"इ सबसे पहले 1 रुपये का दहेज़ भी ग़लत है। वो इसलिए ही चुप है क्योंकि वो अपने पापा के ख़िलाफ़ नहीं जा सकती लेकिन अब वो 1 रुपये भी दहेज़ नहीं देगी।"

उसने तो यहाँ तक कह दिया की उस सिपाही से कंचन की शादी करानी ही नहीं चाहिए।

हम जब अपनी मिसेज के पास गए थे तो हमको लगा था कि स्कॉर्पियो मिल जाएगा। पर नहीं मिला। वैसे हम अपनी मिसेज की बात से भी सहमत थे। अच्छा ही बोल रही थी। हमको उसकी बात काटने का हिम्मत नहीं हुआ। हम वैसे भी किसी की बात नहीं काटते थे। हम अपने बाप का भी बात में हाँ में हाँ मिलाते थे, माँ के भी बात में हाँ में हाँ मिलाते थे। कंचनवा भी जो कहती थी उसमें भी हाँ में हाँ मिलाते थे। कंचनवा को एक बार हम मंदिर के पीछे एगो

लड़िका से बतियाते हुए पकड़े थे। कंचनवा बोली कि "हम इससे प्यार करते हैं, इन्हीं से शादी करेंगे"

हम कंचनवा की बात का कुछ जवाब देते की इससे पहले ही उसके साथ खड़ा लड़का बोला

"साले साहब यहाँ से भागिएगा कि अब दाग़ें कट्टा आपके देहियाँ में"

उस दिन हमको लगा कि कंचन भी सही ही बोली। मेरा एगो आदत था कि हम बहुत ही जल्दी किसी से इन्फ्लुएंस हो जाते थे। इसलिए मोहल्ला में सब हमको मौगा या मेहरा बोलता था।

हम बाबूजी से उस दिन साफ़-साफ़ कह दिए थे कि नेहा अब कुछ भी नहीं देगी। आप कंचनवा का बियाह कैंसिल कर दीजिए। कोई अच्छा लड़का ढूँढ़ लीजिए। हम बाबूजी का बहुत इज़्ज़त करते थे पर बाबूजी ने उस दिन जो जवाब दिया उसकी वजह से हम बाबूजी से नफ़रत करने लगे। बाबूजी उ दिन हमको कहें "कंचनवा का बियाह रत्नेश जी से कैंसिल कर दें और तुम्हारे जैसे कौनो मौगा लड़का से सेट कर दें। रे तुमको कितना दिन हुआ रे बियाह किए। तुम साला अभिये से मेहरारू के लुग्गा में घुस गया है रे।"

हमको उस दिन बुझा गया था कि बाबूजी मानने से नहीं। हम अगला दिन दलसिंह सराय वाला बस पकड़ के समस्तीपुर की तरफ़ चल दिए। हमको लगा था कि सब ठीक हो जाएगा। पर वैसा कुछ हुआ नहीं। हम उस दिन ऑफ़िस में थे कि माई का फ़ोन आया कि

"बेटा जल्दी घरे आ जाओ, पतोहिया आग लगा ली है।" हम एक़दम आनन-फानन में मुजफ़्फ़रपुर का बस पकड़े और घरे आ गएँ। घरे आए तो पता चला की नेहा तो जल के मरी ही है साथ में कंचनवा भी ज़हर खा के मर गई है। हमको 2 मिनट नहीं लगा सारा मामला समझने में। हमको उस समय मन किया कि बाबूजी को एक हाथ लगाएं पर हम शायद सच में मौगा थे। कुछ नहीं कर पाए। बाबूजी कंचन का नाम लेकर दहाड़े मारकर रो रहे थे। नेहा का नाम उनके मुख से एकबार नहीं निकला।

पुलिस घर पर आई थी। मामला पूरा दहेज़ का था लेकिन बाबूजी के पैसों ने पुलिस फ़ाइल में इस घटना को आत्महत्या का मामला कहकर रफा दफ़ा कर दिया। मुझे सब कुछ पता था। मैंने किसी से कुछ नहीं कहा था। मैंने समस्तीपुर में ही एक कमरा लेकर रहना शुरू कर दिया था।

एक दिन माँ ने उसी की तरह दिन घबराते हुए आवाज़ में मुझे फ़ोन किया "बेटा। घर आ जा, तुमरे बाबूजी मरने के कग़ार पर हैं। बाप का मामला था हम तुरंत बस पकड़ के घर आ गए। मेरे आने के कुछ देर बाद से बाबूजी की तबियत सुधर गई। हम बाबूजी से कुछ नहीं कहे और सीधे घर के सामने वाले आँगन में पड़ी कुर्सी पर बैठ गए। मूड बहुत ख़राब था इसलिए गाँव के एगो लईका से दारु मँगाकर पी रहे थे। उस समय बहुत दु:खी थे। तभी अचानक से बाबूजी के चिल्लाने का आवाज़ आया। सामने जब देखे थे तो आँखों पर विश्वास नहीं आया। सामने पच्चीसों से भी ज़्यादा स्कॉर्पियो खड़ा था। इन्हीं स्कार्पियों में से एक के आगे बाबूजी दबे पड़े थे। वो दर्द से बिलबिला रहे थे। उस दिन पता नहीं ऐसा क्या हुआ कि बाबूजी के इस हालत को देखकर भी मैं कुर्सी से उठकर खड़ा नहीं हुआ। वहीं बैठ कर शराब पीता रहा। बाबूजी मरे नहीं बस चिल्लाते रहे। मैं वहीं बैठा रहा। तभी अचानक से सामने खड़ी एक स्कॉर्पियो से नेहा निकल कर आई और उसने चिल्लाते हुए कहा "का रे मौगा, बाबू(बाप) को बचाएगा नहीं का रे, साफ़े चूड़ी पहिन लिया है क्या" उसने इतना कहने के बाद मैंने सामने खड़ी सभी स्कॉर्पियो की छत पर कंचन को बैठे देखा। वो सारी कंचने मुझे ऊँगली दिखाकर खिलखिला कर हँस रही थी।

•••

नौकरी

इस दुनिया में चाहे कुछ भी हो जाए ये दुनिया बढ़ती रहती है। चलती रहती है। कहीं न्यूक्लियर बम फट जाए, जमीन धँस जाए, समंदर में सैलाब आ जाए, ये दुनिया भला कहीं रुकी है। थोड़ी देर का मातम, अफ़सोस, रोना-पीटना, कोसना और उसके बाद सब शांत। दुनिया फिर से शुरू।

उस दिन शहर की एक बड़ी इमारत के एक कमरे में एक लड़की एक कमीज़ में बटन लगा रही थी। उसके चश्मे के पीछे उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की पुतलियाँ कभी छोटी कभी बड़ी हो रही थी। वो कमीज़ में बटन लगाने में इस तरह से मशगूल थी जैसे कमीज़ पहनने वाला शख़्श उसके लिए इस दुनिया का आख़िरी आदमी हो। वो बटन के एक छेद में सुई पिरोकर दूसरे छेद से निकालने की एक अलौकिक प्रक्रिया में लीन थी। उसे इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि उसकी सुई को बटन के एक छेद से दूसरे छेद में डालने के बीच का समय बहुत धीमा हो गया है। इतना धीमा कि कोई बाहर हो रही बारिश की हर बूँद को आसमान से जमीन पर गिरता देख सके। इतना धीमा की कोई इंसान सामने से आ रही बेलगाम गाड़ी के रूप में अपनी ख़ुद की मौत को मुस्कुराते हुए अलविदा कहने का वक़्त निकाल पाए। इतना धीमा की कोई कोई अपने जीवन की आख़िरी साँस की आवाज़ को धुन बनाकर एक लम्बी कविता लिख सके।

उसके सुई को बटन के एक छेद से दूसरे छेद में डालने तक के बीच के समय के अंदर के समय में कहीं दूर एक दुनिया में वक़्त बहुत ही सामान्य था। वो कई घंटों से एक कैफ़े में बैठा नौकरी के बारे में सोच रहा था। उस कैफ़े में उस दिन दुनिया हर रोज़ की तरह सामान्य रूप से चल रही थी। कई टेबलों पर प्रेमी जोड़े बैठ कर ब्रेकअप और ऊब का पहला अध्याय शुरू कर रहे थे। कुछ लोग उसी की तरह ही अकेले बैठकर किताब पढ़ रहे थे। उसके पास किताब नहीं थी। उसके हाथ में उसके सर्टिफिकेट वाला एक बैग था, जिसे देखकर वो हमेशा निराश हो जाता था। उसने कॉफ़ी ख़त्म कर दी थी और दूसरी कॉफ़ी लेने

के लिए उठा ही था कि कैफ़े में एक लड़की घबराते हुई घुसी। वो पूरी तरह से भीगी हुई थी। बाहर तेज़ बारिश हो रही थी, वो शायद बारिश से बचने के लिए अन्दर आई थी। वो कॉफ़ी लेने के लिए उठा तो था लेकिन लड़की को देखकर फिर से बैठ गया। कुछ बात थी उस लड़की में जो उसे औरों से अलग कर रही थी। उसके सर पर बारिश हो रही थी और वो इस छत वाले जगह पर भी भीग रही थी। वो अपनी दुनिया में इतना अजीब हो चला था कि उसे इस तरह की अजीब चीज़ें हमेशा दिखती थी। वो अपनी जगह से उठा और लड़की के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। लड़की मेज़ से सर टिकाकर बैठी थी। मेज़ पर उसके बाल बिखरे थे और चेहरा इन्हीं बालों के बीच छिपा हुआ था। वो कुछ देर तक बिना कुछ कहे लड़की के सर पर हो रही बारिश को देखता रहा। कुछ देर बाद उसने बात करने की कोशिश की।

"हैलो"

"हैलो, कहिये क्या बात है"

"ये आपके सर पर बारिश क्यों हो रही है"

"मैं इस दुनिया की नहीं हूँ"

"किस दुनिया की हैं"

"मैं एक दूसरी दुनिया की देवकन्या हूँ। हमारी दुनिया में देवकन्याएँ रो नहीं सकती इसलिए मैं यहाँ रोने चली आई हूँ। हम देवकन्याएँ रोती हैं तब बारिश होती है, दुनिया में भी और हमारे सर पर भी"

"मुझे इस दुनिया में कोई नौकरी नहीं मिली, आप अपनी दुनिया में मुझे कोई नौकरी दिला सकती हैं क्या। कोई भी नौकरी कर लूँगा"

"ठीक है, हमारी दुनिया में नौकरी की एक जगह ख़ाली है, मेरे साथ चलो मैं तुम्हारी सिफारिश करूँगी"

ये हमेशा ज़रूरी नहीं की लंबा सफ़र ट्रेन, प्लेन, पानी के जहाज, बस इत्यादि से ही हो। कुछ सफ़र यूँ ही पलक झपकते ही तेज़ रौशनी के अचानक से बुझने के दरमियाँ ही ख़त्म हो जाते है। उसने जब उस देवकन्या का हाथ

थामा तब उसकी आँखों में अचानक से हजारों सूरज की रौशनी घर कर गई। और जब कुछ ही पलों में ये सूरज बुझा तब वो किसी अनजान जगह की एक इमारत के एक बड़े से हॉल की कुर्सी में बैठा था। उस जगह वो देवकन्या भी थी एक आदमी से मेरी तरफ़ इशारा कर के किसी अजीब सी लेकिन बहुत ही अद्भुत भाषा में बात कर रही थी। उसका चेहरा अब भी उसके गीले बालों से ढँका था। वो इन काले बालों के पीछे ख़ूबसूरत चेहरे को मन ही मन अपनी आँखों से छूने की कोशिश कर रहा था। उसका ध्यान उस देवकन्या के होठों से निकले इन शब्दों से टूटा

"अपने सर्टिफिकेट और अपनी आईडी लाए हो"

"जी, ये रहा" उसने अपने बैग से निकाले कुछ काग़ज़ों को उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए कहा।

"एक हफ्ते तक लगातार काम करना होगा, किसी भी वक़्त काम करना पड़ सकता है" उसके इतना कहने के बाद उसके हाथों में पड़े वो सर्टिफिकेट ख़ुद-ब-ख़ुद जल गए। जैसे कोई काला जादू हुआ हो।

"मुझे करना क्या होगा"

"तुम्हें यमदूत की नौकरी मिली है"

"क्या"

"चौंको नहीं, ये देवताओं की दुनिया है। हम इसी दुनिया से तुम्हारी दुनिया को संचालित करते है। तुम्हारी दुनिया के सारे प्रेत हमारे यहाँ नौकरी करते हैं। उनका काम ही है तुम्हारी दुनिया में प्रेत की भूमिका अदा करना। तुम्हारी दुनिया का विज्ञान जिन चीज़ों को सुलझा नहीं पाता। फ़िलहाल तुम्हें एक यमदूत की नौकरी मिली है। यहाँ बायीं तरफ़ जो कमरा हैं वहाँ तुम्हें अजराइल 45678 मिलेगा वो तुम्हें सब बता देगा। पहला काम तुम्हें आज ही करना है। वहाँ तुम्हें कपड़े मिल जाएँगे।

उसके लिए ये दुनिया की सबसे अजीब नौकरी थी। लेकिन वो ख़ुश था। क्योंकि उसके पास अब एक नौकरी थी। आज उसकी नौकरी का पहला दिन

था। अजराइल 45678 ने उसे यमदूत की नौकरी के बारे में जो ज़रूरी ट्रेनिंग थी वो दे दी थी। कैसे कब किसकी जान निकालनी है। कैसे निकालनी है। कैसे भावनाओं पर काबू रखना है। अजराइल 45678 ने उसे चेतावनी भी दी थी कि अगर वो किसी की जान निकालते वक़्त थोड़ा भी भावनात्मक हुआ तो उसकी नौकरी चली जाएगी और सजा के तौर पर 100 साल उसे उसी जगह पर प्रेत बने रहना होगा जहाँ वो भावनात्मक होगा।

वो अब इस नौकरी के लिए तैयार हो चुका था। उसने अजराइल 45678 का हाथ थामा और उसकी आँखों के सामने एक घना अन्धेरा छा गया। वो अन्धेरा बहुत घना था। इतना घना अन्धेरा उसने तब महसूस किया था जब रिया की आँखों से दो आँसू उसकी आँखों पर गिरे थे। ये अन्धेरा घना तो था पर पल भर में ख़त्म हो गया। अन्धेरा ख़त्म होने पर जब उसकी आँखें खुली तब उसने ख़ुद को एक कमरे में पाया। कमरा–जाना पहचाना सा था। कमरे के बीचों-बीच फ़र्श पर लगे बिस्तर पर एक लड़की सो रही थी। उसके दायीं तरफ़ एक जाने पहचानी सी कमीज़ थी। उसने उस कमीज़ को ध्यान से देखा। उस कमीज़ में 3 नए बटन लगे थे। कमीज़ को देखकर वो थोड़ा मुस्कुराया फिर बिस्तर पर पड़ी लड़की को देखकर वो उदास हो गया। वो दहाड़े मार कर रोना चाहता पर उसने अपनी भावनाओं पर काबू किया। अजराइल 45678 ने उसे इशारे से लड़की की जान निकालने को कहा। वो रिया की तरफ़ आगे बढ़ा ही था कि रिया की नींद खुल गई।

"तुम आ गए। बहुत देर कर दी। नौकरी मिली। मिल ही गई होगी। तुम अगर चाहोगे तो क्या हासिल नहीं कर पाओगे। ये नौकरी तो बहुत छोटी चीज़ है। सुनो मैंने तुम्हारे कमीज़ में बटन टाँक दिए हैं। कल तुम्हारे नौकरी का पहला दिन है न...।

"मैं तुम्हें लेने आया हूँ रिया।"

"हाँ, तो मैं तैयार ही हूँ। चलो चलते हैं।

उस समय इस दुनिया के के दूर किसी कोने में बज रहे किसी रेडियो से एक गाने की आवाज़ आ रही थी।

तू बिन बताए, मुझे ले चल कहीं
जहाँ तू मुस्कुराये मेरी मंज़िल वहीं

उसने अपने हाथ आगे बढ़ाए और रिया को अपने क़रीब ले आया। फ़र्श पर सो रही लड़की अभी तक सो ही रही थी।

"अब तो कभी छोड़कर नहीं जाओगे न" रिया ने रोनी सी आवाज़ में उससे पूछा

"नहीं" इतना कहते ही उसकी आँखों से आँसू का एक कतरा उसके गालों को चूमते हुए फ़र्श की धूल में घुल गया।

रिया चिल्लाती रही। अजराइल 45678 उसे उसके हाथों से छीनते हुए कहीं ग़ायब हो गया। दुनिया में कोई ऐसी नौकरी नहीं कोई ऐसा दफ़्तर नहीं था जहाँ से उसे निकाला न गया हो।

आज शहर के इस इमारत की तरफ़ कोई परिन्दा भी पर नहीं मारता। कहते हैं कि इस इमारत की छत पर एक लड़के का भूत रहता है जो फ़ॉर्मल कपड़े पहने, गले में टाई लगाए, हाथों में कागजातों के फ़ाइल लिए कहता फिरता है "सर नौकरी के लिए आया था"।

• • •

ख़ून की कमी

आज मेरी एक बहुत ही पुरानी प्रेमिका का जन्मदिन है। बहुत अच्छी और प्यारी थी। मुझसे बहुत प्रेम करती थी, कहती थी कभी तुमसे दूर नहीं जाऊँगी। वो जब ऐसा कहती थी तब मैं भी प्रेम में डूबे आशिकों की तरह प्रेम की चाशनी के डूबे कुछ शब्दों को निकालकर कहता था

"अरे पगली तुम्हें जाने कौन देगा, ऐसा दुनिया में कुछ है जो मुझे तुमसे मिलने से, प्यार करने से रोक ले।"

"हाँ! है"

"क्या? कहीं तुम माँ की बात तो नहीं कर रही?"

"नहीं आंटी से क्या दिक्कत है, दिक्कत बस शराब से है। तुम्हारे पीने से है। देख लेना अगर कभी भी पिए रहोगे तो पास नहीं आऊँगी।"

"अरे गुस्सा क्यों होती हो, नहीं पीऊँगा अब से। इसमें कौन सी बड़ी बात है"

"खाओ मेरे सर की क़सम"

"अरे तुम लोग हर बात में क़सम क्यों खिलाने लगती हो। क़सम खाने के बाद आदमी भगवान हो जाता है क्या? अरे नहीं पीऊँगा, बस कह दिया। क़सम खाना ज़रूरी है क्या?"

"अच्छा ठीक है मैं जा रही हूँ, अब कभी बात नहीं करना मुझसे, फ़ोन नहीं करना समझे। टाटा बाय बाय बाय"

"अच्छा-अच्छा तुम्हारे सर की क़सम अब से नहीं पीऊँगा अब से। अब ख़ुश। अब पास आ जाओ।"

"ये क्या तुम आज भी पिए हो। आज ही तुमने क़सम खाई है"

"अरे ये पहले का है, क़सम तो आज खाई है न, कल से बंद। अब क़रीब आ जाओ।"

उस दिन के बाद से मैंने कभी शराब नहीं पी। दोस्तों ने काफ़ी कहा "अरे पी ले, अरे पी ले, अरे दवा है, अरे पी ले, पी ले-पी ले ओ मोरे राजा पी ले पी ले ओ मोरे जानी" दोस्तों के इतना पी ले, पी ले कहने के बाद शायद ही कोई पीने वाला शख़्स हो जो शराब देखकर न पिघले। पर मैं नहीं पिघला। उनके इतना कहने के बाद भी मैंने कभी शराब नहीं पी।

कई दफ़ा शराब की बोतल जेब में रखने के बाद भी मेरी कभी हिम्मत नहीं हुई कि मैं पी लूँ। मैं जब भी पीने की सोचता, तब मेरी आँखों के सामने उसका चेहरा नज़र आता। उसकी नाकों में चुभा वो सोने का छोटा-सा कील नज़र आता, उसके होठों के नीचे का वो तिल नज़र आता। उसकी आँखों में अँधेरे को भी हसीन बनाने वाला काजल नज़र आता, उसके होठों पर गुलाब से भी ज़्यादा सुर्ख बिखरा चटख लाल रंग नज़र आता। इतना कुछ काफ़ी होता है किसी आदमी का ख़ुद का कोई फैसला बदलने के लिए।

वो कहते हैं न इंसान कि दुनिया में प्यार बहुत बड़ी ताकत होती है। हाँ एक़दम फ़िल्मी दुनिया की तरह। इतनी ताकत की वो बड़े से बड़े सेठ की खुली तिजोरी पर थूक कर चली जाए, इतनी ताकत की वो भूटान जैसा देश होकर भी रशिया-अमेरिका जैसे देशों से भिड़ जाए। उसका भी यही मानना था। प्रेम मजबूत बनाता है। जब छाती को प्रेमिका का प्यार भरा स्पर्श मिलता है न तब छाती किसी कवच से कम नहीं होती। "अरे घोंप दो खंज़र हम नहीं मरने वाले" आदमी ऐसी बातें करने लगता है।

पर आदमी भला खंज़र से कहाँ मरा है। आदमी शक से मरता है। जैसे टोनी मोंटाना एक शक की वजह से अपने दोस्त चिको को मार देता है वैसे ही शक हर इंसान को टोनी मोंटाना बना देता है।

मैं भी शक की धीमी जलती आग के धुएँ में टोनी मोंटाना बनने लगा। क़सम खाने के दस दिन बाद से मुझे उसकी हर बात में थोड़ी-थोड़ी ख़ामियाँ नज़र आने लगी। प्रेम थोड़ा पुराना हो जाए तो ख़ामियाँ नज़र आना लाज़िमी है। हनीमून पीरियड के बाद आदमी हनीमून को एक़दम लिटरली शहद और चाँद की तरह विजुअलाइज करता है। आपके प्लेट में कोई शहद से लिपटा चाँद रख

दे तो आप खायेंगे। ये प्रेम का ही एक दौर है जहाँ थोड़ी बोरियत आने लगती है। प्रेम में बोर होना बड़ी ही अच्छी और लाज़िमी चीज़ है। आप प्रेम में बोर नहीं होंगे तो बहुत सारे बच्चे पैदा कर देंगे। प्रेम में ख़ामियाँ ज़रूरी है इसलिए एक दिन मैंने प्रेम में कुछ ख़ामियाँ निकालकर उससे पूछा था...

"तुम डेविड अल्बर्ट के साथ 'लव इन द सेंस ऑर्गन्स' फ़िल्म क्यों देखने गई थी?"

"अरे मैं कॉलेज से घर आई ही थी कि वो फ़िल्म की टिकटें लेकर चला आया। उसने काफ़ी मिन्नतें की तो फिर मैं उसका दिल रखने के लिए उसके साथ चली गई। हाँ! फिर कुछ देर के बाद मुझे लगा कि ये फ़िल्म मुझे उसके साथ नहीं देखनी चाहिए तो मैं वापिस चली आई। मैंने उस दौरान तुम्हें कितनी दफ़ा फ़ोन भी किया, मैसेज भी किया पर तुम्हारा कोई जवाब नहीं आया।"

"हाँ ठीक है। उस समय मेरा फ़ोन साइलेंट पर होगा"

"क्यों था, अगर मुझे कभी तुम्हारी ज़रूरत हो और तुम्हारा फ़ोन साइलेंट हो तब"

"ऐसा हर बार नहीं होगा, अब ठीक है पास आओ। प्रॉमिस करो अब तुम कभी उस डेविड अल्बर्ट के पास नहीं जाओगी।"

"अरे उस चेप आदमी के पास अब दुबारा कौन जाएगा"

"अच्छा ठीक है आओ अब अपने इस चेप से लिपट जाओ"

"भक्क"

मेरा शक उस दिन ख़त्म हो गया था। ठीक वैसे ही जैसे कुछ पेंसिल से लिखा हुआ मिटा दिया जाता है। हाँ, ये अलग बात होती है कि ऐसे में कुछ निशान बाक़ी रह जाते हैं। पर अब ज़िंदगी और लव लाइफ़ सब कुछ पटरी पर आ गई थी। हम दोनों साथ में बहुत ख़ुश थे। वो मुझे अपने घर पर फ़ैमिली डिनर पर बुलाने वाली थी।

मैं उसके घर गया भी था लेकिन मुझे एक चीज़ खल गई थी। वहाँ पहले से ही डेविड अल्बर्ट मौजूद था। मैं उस दिन उसके घर से बहुत ज़ल्द चला आया और एक बार में एक बीयर ऑर्डर कर दी। आदमी की इच्छाशक्ति जब जवाब दे देती है या आदमी जब ख़ुद से हार जाता है या कमज़ोर हो जाता है तब वो अपनी ग़लतियाँ किसी और पर थोपता है। मैं बहुत हारा हुआ और कमज़ोर आदमी निकला और उस दिन मैंने जम के बीयर पी। मैंने सोच रखा था कि अगर वो पूछेगी की क़सम खाकर भी तुमने शराब क्यूँ पी तो मैं कह दूँगा ये सिर्फ़ डेविड अल्बर्ट की वजह से है। मैं इतना सोचकर एक गिल्ट से निकल आया था लेकिन मुझे उस दिन पता नहीं था कि मैं एक ऐसे गिल्ट के समंदर में डूबने वाला हूँ जिसका कोई तल नहीं है।

उस रात मुझे उसके फ़ोन से कई मिस्ड काल आए मैंने किसी का जवाब नहीं दिया। आदमी कभी-कभी अपने आप में इतना चूर हो जाता है कि अंधा हो जाता है। मैं भी उस दिन अंधा हो गया था मुझे उस दिन कुछ नहीं दिखा सिवाय डेविड अल्बर्ट के मैसेज के। डेविड का मैसेज आया था। उसने लिखा था "रिया का एक्सीडेंट हो गया है। जल्दी आओ हॉस्पिटल में है वो।"

कभी-कभी जब मुझे नशा बहुत हो जाता था तो मैं खटाई खाकर नशा कम कर लेता था। उस दिन डेविड अल्बर्ट का वो मैसेज खटाई से 1000 गुना खट्टा था। मेरा नशा तुरंत ग़ायब हो गया ठीक उसी तरह जैसे मेरे शहर के एक बड़े नेता की आलोचना करने वाले पत्रकार अचानक से ग़ायब हो जाते थे। आदमी जब डरा हुआ घबराया हुआ होता है तो कभी-कभी बहुत ताकतवर हो जाता है। मैं उस दिन दौड़कर हॉस्पिटल गया था। इतना तेज़ अगर मैं ओलिंपिक में दौड़ा होता तो देश के नाम एक मैडल ज़रूर ले आता।

हॉस्पिटल पहुँचने पर मुझे पता चला कि उसे ख़ून की ज़रूरत है। वहाँ पहुँचे सभी लोग ख़ून देने को तैयार थे पर किसी का ब्लड ग्रुप उसके ब्लड ग्रुप से मैच नहीं करता था। डेविड अल्बर्ट ने उस दिन फेसबुक पर कई ब्लड डोनर्स रिक्वायर्ड वाले कई स्टेटस फेसबुक पर अपलोड किए थे पर ख़ून बहुत जल्दी चाहिए था और नजदीक का कोई ऐसा शख़्स नहीं मिला जो उसे ख़ून दे पाए।

मेरा ब्लड ग्रुप ओ नेगेटिव है। मैं किसी को भी ख़ून दे सकता हूँ। मैंने उस दिन उसे ख़ून देने की कोशिश की पर चूँकि मेरे ख़ून में शराब मिली थी इसलिए मैं उसे ख़ून नहीं दे पाया। उसकी हालत नाजुक थी और जल्दी ख़ून न मिलने की वजह से वो मर गई। मर गई। मरना मरने वाले के लिए बड़ी सुखद प्रक्रिया होती होगी पर मरने वाले के चाहनेवालों के लिए ये दुःख का गहरा कुआँ होता है।

उसके मरने के बाद मैं वहाँ से तुरंत भागकर अपने कमरे में चला आया था। मुझे रोना नहीं आता था इसलिए मैं कई महीनों तक अपने कमरे में बंद पड़ा-पड़ा गूँगा हो गया।

आज उसको गए एक साल हो गए हैं। मैंने उसके शहर को छोड़ चुका हूँ। मेरी एक प्रेमिका भी है पर मैं उससे दो महीने में एक बार ही मिलता हूँ। अब मैं बहुत कम बोलता हूँ।

अभी से कुछ घंटो बाद उसका जन्मदिन आने वाला है। मेरे हाथों में अभी शराब का एक प्याला है दूसरे हाथ में एक छोटा सा ताजमहल है जिसके अन्दर एक लड़का और लड़की एक दूसरे का हाथ थामे खड़े हैं। उसने मुझे मेरे जन्मदिन पर दिया था यह तोहफ़ा। कहा था हम दोनों यूँ ही साथ रहेंगे। मैं कभी तुम्हें छोड़ के नहीं जाऊँगी। लड़कियाँ जब सच्चा प्यार करने लगें तो उनसे डरना चाहिए। मैं उसकी ये बात सुनकर थोड़ा डर गया और तेज़ी से शराब गटक गया।

मैं अभी जहाँ हूँ वो मेरे घर का बरामदा है। बरामदे के बाजू मेरा कमरा है। बरामदे की खिड़की से मुझे अपना कमरा साफ़-साफ़ दिखता है। आज भी दिख रहा है। आज मेरे कमरे में बहुत दिनों बाद वो लौट आई है। वो मेरे बेड पर बैठी 12 बजने का इंतज़ार कर रही है। उसे इंतज़ार है कि जैसे ही 12 बजेंगे मैं उसे हैप्पी बर्थडे विश करूँगा। उसकी आँखें लाल है और मुझे पूरा अंदाज़ा है कि वो बहुत गुस्से में है। उसका पूरा शरीर नीला है जैसे उसके जिस्म में ख़ून का एक भी कतरा न हो। मुझे उसकी घूरती आँखें साफ़-साफ़ कहती सुनाई पड़ रही है कि उसे आज भी ख़ून की ज़रूरत है और मेरी नशे से लाल हो चुकी आँखें आज भी कह रही है कि मैं ख़ून नहीं दे पाऊँगा।

मुझे पता है कि वो इस बार मुझे इस बात के लिए माफ़ नहीं करेगी और शायद मुझे मार देगी। लेकिन मुझे मारने के लिए उसे मेरे क़रीब आना होगा। और उसने कहा था मैं जब भी शराब पीऊँगा वो मेरे सामने नहीं आएगी। मुझे अभी लम्बे समय तक ज़िंदा रहना है। इसलिए शायद मुझे लम्बे समय तक यूँ ही इस बरामदे में बैठे नशे में डूबना होगा।

•••

प्रवासी

उस साल जब एक ख़ास तारीख़ को रात के 12 बजे उसके मोबाइल पर एक फ़ोन नहीं आया तो उसे यक़ीन हो गया कि वो एक 27 साल का अधेड़ है जो इस दुनिया का नहीं है। उसे फ़ोन न बजने से ज़्यादा खीझ इस बात पर आई कि उसने कभी बड़ा होकर लैम्प पोस्ट बनने का सपना क्यों नहीं देखा। वो बचपन में अपने पिता के जेब से 50 रुपये का नोट चुराने के बाद हमेशा सोचता था कि वो बड़ा होकर डॉक्टर बनेगा। अगर वो अपनी माँ के पर्स से 20 रुपये का नोट चुराता तब वो सोचता था कि वो बड़ा होकर पायलट बनेगा। एक दिन जब उसने पाया कि न ही उसके पापा के जेब में 50 रुपये हैं न ही उसकी माँ के पर्स में 20 रुपये हैं तब उसने सोचा वो बड़ा होकर कोई भी नौकरी कर लेगा। वो कभी-कभी ख़ुद को अपने सपने में एक सरकारी दफ़्तर में क्लर्क की नौकरी करते देखता था।

वो जब बड़ा हुआ तब न ही डॉक्टर बना न ही पायलट और न ही क्लर्क बन पाया। कुछ नहीं बन पाने की स्थिति में हमेशा भगवान बन जाने की संभावना का मंदिर होता है, मस्जिद भी होती है। संभावनाओं के इबादतगाह में पूजा नहीं होती नमाज़ नहीं पढ़ी जाती। यहाँ लोग टिक-टैक-टो जैसे खेल खेलते या फिर कॉफी पीते हुए इंतज़ार करते। वो भी कभी-कभी संभावनाओं के मंदिर में कभी-कभी देर तक टिक-टैक-टो खेलता। वो संभावनाओं के मंदिर में कभी भी टिक-टैक-टोक के खेल में नहीं जीता। या तो वो हार जाता या फिर खेल में न जीत होती न हार होती। एक बार जब संभावनाओं के मंदिर में वो काफ़ी लम्बे समय तक टिक-टैक-टो खेलने के बाद भी वो न जीत पाया न हार पाया तब वो कॉफ़ी लेकर इंतज़ार करने लगा।

इंतज़ार शब्द बस एक शब्द नहीं था। किताबों और ख़यालों से निकलकर यह शब्द कभी-कभी एक मर्तबान बन जाता था जिसमें सुंदर लड़कियाँ उड़ती थी। इसी मर्तबान से एक दिन एक सुन्दर लड़की उड़ते-उड़ते बहुत दूर निकल आई। लड़की काफ़ी सालों से उड़ रही थी इसलिए वो कुछ देर

चलना या तैरना चाहती थी। लड़की बाहर एक सड़क पर काफ़ी देर तक पानी ढूँढ़ती रही। लड़की को एक-बारगी अपने गालों पर पानी के निशान मिले लेकिन तैरने के लिए इतना पानी काफ़ी नहीं था। लड़की को पता था कि इतने पानी में सिर्फ़ डूबा जा सकता है इसलिए उसने तैरने का ख़्याल दिल से निकाल दिया। वो चलने लगी। वो चलते-चलते संभावनाओं के मंदिर पहुँची और टिक-टैक-टो खेलने लगी।

संभावनाओं के मंदिर में लड़के ने पहली बार इतनी सुन्दर लड़की को टिक-टैक-टो खेलते देखा था। इससे पहले भी उसने एक सुन्दर लड़की को एक मंदिर में ही देखा था लेकिन वो संभावनाओं का मंदिर नहीं था। वो आडम्बर का एक मंदिर था जिसे एक हारे हुए मूर्तिकार ने बनाया था। आडम्बर के मंदिर में लड़की पूजा करती थी और व्रत रखती थी। लड़के ने इस लड़की से बिना कुछ औपचारिकता के चूमते हुए पूछा "हर साल एक ख़ास दिन रात 12 बजे फ़ोन करोगी।" पूजा करने वाली लड़की को चूमे जाने की आवाज़ में दुनिया की सबसे ख़ुशबूदार अगरबत्ती की सुगंध आई और उसने हाँ कह दिया। आडम्बर के मंदिर वाली लड़की ने काफ़ी सालों बाद लड़के द्वारा चूमे जाने के बाद कहा उसे अस्थमा है। और इतना कहकर वो ग़ायब हो गई थी। लड़का भी ग़ायब होना चाहता था पर उसे कभी अस्थमा नहीं हुआ इसलिए वो क्लर्क बनने के सपने देखने लगा। वो चाहता था कि उसके साथ कुछ होने से ज़्यादा अच्छा यह है कि वो कुछ हो जाए। कुछ हो जाने की चाहत में ही वो संभावनाओं के मंदिर में टिक-टैक-टो खेलता या कॉफ़ी पीता।

दूसरी सुन्दर लड़की को संभावनाओं के मंदिर में आए अभी कुछ देर भी नहीं हुई थी लेकिन लड़के को कॉफ़ी पीते-पीते एक अरसा हो गया था इसलिए उसने सुन्दर लड़की को चूमते हुए पूछा

"हर साल एक ख़ास दिन रात १२ बजे फ़ोन करोगी।" सुन्दर लड़की ने लड़के को ख़ुद से दूर करते हुए पूछा "क्यूँ! क्यूँ करूँ फ़ोन।"

"मेरे अन्दर बहुत प्रेम है। सीना चीर कर दिखाऊँ।"

लड़की ने लड़के की बातों पर ध्यान नहीं दिया। वो संभावनाओं के मंदिर में आँखें बंद कर के कुछ बुदबुदाई। उसकी बुदबुदाहट में प्रार्थना नाम की एक मछली की ख़ुशबू आ रही थी। वो मर्तबान में भी कई बार यही प्रार्थना करती थी लेकिन मर्तबान में संभावनाओं का मंदिर नहीं था इसलिए शायद उसकी प्रार्थना सुनी नहीं जाती थी। संभावना के मंदिर में उसकी प्रार्थना सुनी गई और उसकी बुदबुदाहट में छिपी प्रार्थना की मछली धप्प से जमीन पर गिरी और चाकू बन गई।

सुन्दर लड़की ने बिना किसी औपचारिकता के चाकू से लड़के का सीना चीर दिया और कहा

"कहाँ है प्रेम।"

लड़के ने भी अपनी छाती में झाँका। लड़की बहुत ज़ोर से चीखी

"तुम्हारी छाती में प्रेम नहीं बस कंफ्लिक्ट भरा हुआ है।" लड़की रोते हुए भागने लगी।

लड़का चीखा

"कहाँ जा रही हो।"

"वापिस, इंतज़ार के मर्तबान में।"

लड़का संभावनाओं के मंदिर में काफ़ी देर तक मूर्ति जैसा खड़ा रहा। उसके सीने में चाकू था और ज़ख़्म से ख़ून और कंफ्लिक्ट बह रहा था। संभावना के मंदिर में मौजूद टिक-टैक-टो खेलने वाले और कॉफ़ी पीने वाले लोगों ने कहा "तुम जब इतने देर से मूर्ति बने खड़े ही हो तो इस मंदिर के देवता क्यूँ नहीं बन जाते।"

लड़के को एहसास हुआ कि वो काफ़ी समय से मूर्ति बना हुआ है। वो देवता नहीं बनना चाहता था। उसे जब इस बात का पता चला की उसके सीने में प्रेम की जगह कंफ्लिक्ट है तब उसे लगा कि वो इस दुनिया का नहीं है। वो इस दुनिया में कभी अपनाया नहीं जा सकता। वो तेज़ी से भागा। उसे देवता बनना पसंद नहीं था। वो लैंपपोस्ट बनना चाहता था। वो भागने लगा। लोगों ने पूछा

"कहाँ जा रहे हो?"
"लैंपपोस्ट बनने।"
लोगों ने सुना
"शराबख़ाने जा रहा हूँ।"

लड़के ने कहीं से एक बात सुन रखी थी। एक आदमी शराबख़ाने में शराब पीने के बाद रेल की पटरी बन गया था। लड़के को इस बात से उम्मीद थी कि शायद वो भी शराब पीकर लैंपपोस्ट बन जाए। वो सुनी बातों पर काफ़ी यक़ीन करता था। आडम्बर के मंदिर में पूजा करने वाली लड़की के मुँह से उसने एक दिन सुना था कि वो लड़के के साथ रहकर वो धीरे-धीरे रेत बन रही है। वो एक दिन ग़ायब हो जाएगी।

शराबख़ाने में काफ़ी देर तक शराब पीने के बाद वो एक सड़क किनारे खड़ा हो गया जहाँ काफ़ी अन्धेरा था। उसके सड़क किनारे खड़े होते ही 2-3 लड़कियाँ वहाँ आकर खड़ी हो गई। उनमें से एक लड़की जिसने अपने होठों में शायद अपने किसी पुराने आशिक या फिर अपने पूर्वजन्म के किसी साथी का ख़ून लगाया हुआ था, ने पूछा

"चलोगे मेरे साथ?"

"मैं चलने के लिए यहाँ नहीं रुका हूँ। मैं यहाँ ठहरने आया हूँ। तुम देख नहीं रही हो की मैं लैंपपोस्ट बनने आया हूँ।"

"पी के आया है क्या?"

इतना कहकर पहली लड़की ऐसे हँसी जैसे किसी बच्चे ने ऊब में आकर तालाब में पत्थर को ऐसे फ़ेंका हो जैसे पत्थर पानी को 7-8 बार अलग-अलग हिस्सों में चूमकर डूबे। दूसरी लड़की ख़ामोश थी वो नहीं हँसी। दूसरी लड़की जिसने अपनी आँखों में किसी बर्बाद अन्तरिक्ष के पुराने ब्लैकहोल को लगाया था, ने लड़के से पूछा

"तुम लैंपपोस्ट क्यूँ बनना चाहते हो?"

लड़के को उम्मीद नहीं थी कि वो लड़की ऐसा सवाल करेगी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या जवाब दे।

"मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। मुझे इस दुनिया में डॉक्टर, पायलट या क्लर्क नहीं बनना। मैं चाहता हूँ कि मैं कुछ न बनने के बाद लैंपपोस्ट बनूँ और फिर आते-जाते लोगों को देख सकूँ। मुझे उन सभी 7-8 साल के बच्चों के चेहरे देखने हैं जिनकी जेब में 20 या पचास रुपये का वो नोट होता है जो वो अपने माँ-बाप के बटुवे से चुराते हैं। मुझे दुनिया भर के तमाम पायलटों, डॉक्टरों और क्लर्कों के चेहरे देखने है। मुझे 7 का साढ़े तीन प्रतिशत निकाल पाने वाले लोगों के चेहरे देखने हैं। मुझे इंतज़ार के मर्तबान में फँसी सभी लड़कियों को बताना है कि कंफ्लिक्ट में भी प्रेम होता है। उतना प्रेम जितना इस बात में झूठ होता है कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।"

दूसरी लड़की लड़के की इन बातों को सुनकर न हँसी न रोई। उसकी आँखों के ब्लैकहोल में पुच्छल तारा जैसा कुछ गिरा। वो कुछ देर वहीं खड़ी रही फिर एक चलती गाड़ी को इशारे से रोककर चली गई। जाते-जाते उसने कहा

"चले जाओ। तेज़ तूफ़ान आने वाला है।"

उस रात सच में बहुत तेज़ तूफ़ान आया। कुछ तूफ़ानों की ख़बर अख़बारों में छपती है कुछ तूफ़ानों का कहीं ज़िक्र नहीं होता। लड़के के हिसाब से अगले दिन अख़बार के पहले पन्ने पर यह छपना चाहिए था "संभावनाओं के देवता की चाकू लगने से मृत्यु" या "कनफ्लिक्ट की कमी से लैंपपोस्ट की मृत्यु।" लेकिन लड़का इस दुनिया का नहीं था। उसकी सोच शायद इस दुनिया के लोगों से नहीं मिलती थी। वो ख़ुद को इस दुनिया में एक प्रवासी समझता था। शायद यही वजह थी कि अगले दिन अख़बार के सातवें पन्ने पर एक छोटी सी ख़बर छपी "कल रात आए तूफ़ान की वजह से पुराने शहर का एक बिजली का खम्भा गिरा। हादसे में एक नशे में धुत्त व्यक्ति के शरीर पर खम्भा गिरने से व्यक्ति की मृत्यु।"

• • •

कैलेंडर से ग़ायब, एक कपड़े धोने का दिन

काफ़ी सालों की प्रार्थना के बाद एक दिन उसके घर कपड़े धोने का दिन आया। वो बहुत ख़ुश था। वो सुबह से ही सोच रहा था कि आज वो सारे कपड़ों की जेबें टटोलकर काग़ज़ की पुरानी पर्चियाँ इकट्ठा करेगा। इससे पहले जो सामान्य कपड़े धोने वाले दिन रविवार को आते थे, तब उसे उतनी ख़ुशी नहीं होती थी। ख़ुशी होती भी क्यूँ। लौंड्री बैग से कपड़े निकालकर धोने और कैलेण्डर से कपड़े निकालकर धोने में बहुत फ़र्क़ होता है। बहुत ज़्यादा फ़र्क़।

उतना फ़र्क़ जितना एक कथित रूप से सुंदर न दिखने वाली लड़की और बहुत ज़्यादा सुंदर दिखने वाली लड़की में से ज़्यादातर सुंदर दिखने वाली लड़कियों से पहली नज़र का प्यार होने में होता है। उतना फ़र्क़ जब हम सुंदर दिखने वाली लड़कियों की पीठ पर ऊँगलियाँ फिराते हुए कहते हैं कि मैंने तुम्हारी आत्मा की सुन्दरता देखी है। कम सुंदर दिखने वाली लड़कियों का हमेशा प्रेमिकाओं की सबसे करीबी दोस्त बन जाने और हमेशा हर छिछोरे मजाक पर भी मुस्कुरा देने के बीच के फ़र्क़ जितना फ़र्क़।

बहुत ज़्यादा गंभीर बात कह देने से बचने के लिए साहित्य लिखने वाले शब्दों में छंद ढूँढ़ने लगते हैं। बतौर लेखक मैंने भी फ़र्क़ शब्द को दस बार चिल्लाकर कहने के बाद उसे सर्फ़ सर्फ़ सर्फ़ कहना शुरू कर दिया है और साँवली और कम सुन्दर लड़कियों के बारे में और ज़्यादा कहने की जगह वापिस कैलेंडर से कपड़े निकालने शुरू कर दिए हैं।

मेरे कैलेंडर में काफ़ी सारे कपड़े हैं। 14 सितम्बर 2012 को पहना गया नीले रंग का शर्ट अब काफ़ी गंदा हो चुका है। मैंने इस शर्ट को लौंड्री बैग में वार्डरॉब में कई बार ढूँढ़ा नहीं मिला। मुझे पता था यह कैलेंडर में ही छिपा होगा। कैलेंडर से निकाले गए कपड़ों में घड़ियों और मौसमों की ख़ुशबू होती है। सर्फ़ से भी ज़्यादा सुगन्धित ख़ुशबू। कई बार इससे किसी के छुए जाने की भी ख़ुशबू आती है। जैसे इस शर्ट से 14 सितम्बर 2012 की बारिश वाली रात की ख़ुशबू आ रही है। हिचक और शर्म की ख़ुशबू। पहली बार किसी को हकलाते हुए यह

बताने की ख़ुशबू की एक बार हाथ से किसी का हाथ पकड़ लेने के बाद, पकड़े जाने वाले हाथ की एक सुन्दर परछाई हमारे हाथ में ही रह जाती है। चाहे कितने ही तेज़ झटके से हाथ छुड़ाने की कोशिश कि जाए वो परछाई जाती नहीं। कमीज़ से ख़ुशबू भी नहीं जाती। मेरे हाथ जब-जब काँपते हैं तब मेरे हाथों में उसके हाथों की वही परछाई नज़र आती है जिसे मैंने पहली बार पकड़ा था। यही हाथ मुझे कपड़े पानी में भिगोने से पहले रोकता है कि कमीज़ की जेब तो तलाश लो। पुराने दिनों की कोई तस्वीर, दुकान का बिल, कोई ख़त या कविता निकल आए। आप लोगों ने शायद कभी कैलेंडर से निकालकर कपड़े नहीं दिए होंगे इसलिए शायद आपको मेरी बातें तिलिस्मी लग रही होंगी। पर इसमें तिलिस्म जैसा कुछ नहीं है। तिलिस्म हमेशा पुराने बीते हुए दिनों में होता है। कैलेंडर में होता है।

काफ़ी दिनों से जब मैं ओस के देवता से धोने वाले दिनों को भेजने की प्रार्थना कर रहा था तब मुझे पता नहीं था कि मेरे साथ फिर से एक छल होगा। मैंने सोचा था कि मैं कैलेंडर से कई दिनों के कपड़े निकालूँगा। 14 सितम्बर 2012 के बाद भी मैंने कई ऐसे कपड़े पहने थे जिसमें कई तरह की पुरानी घड़ियों की ख़ुशबू थी। पहली बारिश की ख़ुशबू से भी ज़्यादा सौंधी। एक घड़ी की ख़ुशबू जिसमें हवा में यह लिखा गया था कि "मैं तुमसे कभी भी दूर नहीं जाऊँगी।" जब हवा में यह लिखा जा रहा था तब कहीं दूर से रेल की पटरियों पर रेल के पहिये प्रेम में विरह के गीतों को चाशनी की तरह मिलाकर गा रहे थे। हवा में रेल की समानांतर पटरियों की क़सम भी खाई गई थी कि भले ही हम अनंत तक न मिले लेकिन एक-दूसरे के क़रीब रहेंगे।

कैलेंडर में मुझे इस घड़ी इस तारीख़ का कपड़ा नहीं मिला। कैलेंडर ने भी शायद कुछ कपड़े छिपा लिए या चुरा लिए। जैसे एक दफ़ा मैंने 12 जुलाई 2016 को उसे एक क़ीमती तोहफ़ा देने के बाद उससे उसका दुपट्टा चुरा लिया था। दुपट्टा मैंने नहीं चुराया था। दुपट्टा किसी के आने की आहट ने चुराया था, किसी के आने की आहट इतनी चालाक चोर थी कि उसने दुपट्टा मेरे हाथों में रख दिया। वो चली गई। दुपट्टा मेरे हाथों में ही रह गया। किसी के आने की

आहट की चोरी अच्छी थी लेकिन कैलेंडर की ये चोरी बिलकुल अच्छी नहीं है।

कैलेंडर ने मेरे सारे कपड़े चुरा लिए। कपड़ों के साथ सारे पुराने ख़त। शृंगार की दुकान से खरीदे गए सस्ते फेक गोल्ड वाले झुमकों की रसीद। चॉकलेट के पुराने रैपर। काँपते हाथों से लिखे गए कहीं दूर भाग जाने के इशारे। सफ़ेद दूधिया काग़ज़ों पर दुनिया के सबसे मजबूत लोकतंत्र के मुहर सरीखे गुलाबी होठों के निशान। ट्रेन की टिकट। ट्रेन के बाथरुम के पास 48 घंटे खड़े होकर समंदर लाँघने के निशान। सब कुछ चुरा लिए।

कैलेंडर में बहुत नजदीक आ जाने के बाद अब यह 13 नवम्बर 2018 की कमीज़ मिली है। शायद धोने का दिन इसी लिए आज बिना दरवाज़ा खटखटाए मेरे घर आया है। शायद यह दिन चाहता है कि मैं इस तारीख़ की कमीज़ को इतना साफ़ कर दूँ की इससे शराब और ख़ून के निशान ग़ायब हो जाएँ। ग़ायब। लेकिन उस तरह से ग़ायब नहीं जिस तरह से लड़कियाँ ऐसे ग़ायब होती है कि अपना दुपट्टा माँगने भी नहीं आती।

इस कमीज़ से ख़ून , शराब, मोटरसाइकिल, सड़क और आसमान सबके निशान धुल जाने चाहिए। 2 मिनट मृत घोषित करने वाले स्याहियों के निशान भी। एम्बुलेंस की सबसे घिनौनी आवाजों के छींटों के निशान भी। माथे पर पड़े लम्बे टाँके के निशान भी। दुनिया भर की शराब की बोतलों से एक मासूम उँगलियों के निशान भी। छाती में बहुत अन्दर तक धँसे हाथ छुड़ाने के निशान भी। मुझे पूरा यक़ीन है कि आज अगर ये कपड़े नहीं धुले तो दुबारा फिर कभी इस तरह से यह ख़ास धोने का दिन नहीं आएगा। बिलकुल नहीं आएगा।

जब इस कमीज़ से लिपटे हुए इंसान के सर से बहता हुआ ख़ून मजदूरों की तरह शहर की दीवारों पर प्रेम और वफ़ा पर कविताएँ लिख रहा था तो क्या वो आई थी? आई थी? लगता है इस कमीज़ ने मुझे फिर से उसी सड़क पर ले जाकर बेहोश कर दिया है इसलिए मैं बता नहीं पा रहा की वो आई थी या नहीं। मुझे लगता है वो आई थी। कहीं दूर से आई थी। मुझे लगता है। लेकिन मुझे यह अब बिलकुल नहीं लगता की फिर से धोने का यह दिन दुबारा आएगा।

छोटी चीज़ों का देवता

जब भी मुझे लगता है कि अब मुझसे बात करने वाला दुनिया में कोई भी इंसान नहीं बचा है तब मैं पहले कुछ घंटे ख़ामोशी से अपनी बालकनी में खड़े होकर रात के खुले स्याह आसमान में तारे गिनने लगता हूँ। उसके बाद मैं अपने कमरे में पड़ी चीज़ों से बातें करने लगता हूँ। मुझे तारे गिनना बहुत पसंद है। इतना पसंद की जब भी किसी लड़की ने मुझसे मेरे बारे में जानने की कोशिश में यह पूछा कि तुम्हें सबसे ज़्यादा क्या पसंद है तो मैंने उसे यही जवाब दिया "मुझे तारे गिनना पसंद है।"

"तारे गिनना! भला यह भी किसी को इतना पसंद हो सकता है क्या? मैं भी तारे गिनती हूँ लेकिन कोई मेरी पसंद पूछता है तो मैं यह नहीं बताती की मुझे तारे गिनना पसंद है। अच्छा ये बताओ तुम्हें तारे गिनना क्यूँ इतना ज़्यादा पसंद है?" ऐसा पहली बार हुआ था कि मुझसे किसी लड़की ने यह पूछा हो कि मुझे तारे गिनना क्यूँ पसंद है? वो लड़की काफ़ी सुन्दर थी और उसने जब यह सवाल पूछा तो और सुन्दर हो गई। मैंने उसे जवाब देने से पहले अपने डायरी में एक जगह लिखा कि इस तरह के सवाल पूछने वाली लड़कियाँ काफ़ी सुन्दर होती हैं।

"मुझे तारे गिनना इसलिए पसंद है क्यूँकि मैं गिनती में कमज़ोर हूँ। मैं गणित में हमेशा से कमज़ोर रहा। मैं जब एक बार पढ़ रहा था तब मुझे अचानक से किसी ने पूछ दिया की 76 का 29 परसेंट कितना होता है। और मैं इस सवाल से इतना डर गया था कि बाहर भाग गया और तारे गिनने लगा। मैं तारे गिनते हुए भी कई बार गिनती भूलता था लेकिन तारों ने मुझसे कभी सवाल नहीं पूछे। तारों ने मुझे हर बार मुझे गिनती ग़लत होने पर मौक़े दिए। मुझे अच्छा लगता है जब मेरी ग़लतियों को हँस कर टाला जाता है और मुझे और मौक़े दिए जाते हैं। एक मशहूर गीतकार ने अपने एक गीत में एक बात लिखी थी कि गिन-गिन तारे मैंने उँगली जलाई है। मेरी उँगलियाँ कभी नहीं जली। मैं एक बार तारे गिनते-

गिनते आसमान में बहुत दूर निकल गया था, तब एक तारे ने मेरी 3 साल की उँगली को छुआ था और मुझे वापिस घर भेज दिया था। मुझे तारे गिनना इसलिए भी पसंद है क्योंकि मैं हर बार इस तारे के स्पर्श को महसूस करना चाहता हूँ और एक नादान और मासूम–सा बच्चा बनना चाहता हूँ। ऐसे कई और कारण हैं जिनकी वजह से मुझे तारे गिनना पसंद है लेकिन ये किसी तारे द्वारा छू लिए जाने का कारण बाक़ी कारणों के सामने सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है।" मैंने एक साँस में उस लड़की को यह बात बताई। मैं उसे और भी कारण बताता लेकिन शायद आँखों में पानी आ जाने की वजह से मैं अंधा हो गया था इसलिए मैंने अपनी बात ख़त्म कर दी थी। मेरे साथ एक मसला है कि जब भी मेरी आँखों में ढेर सारा पानी आने लगता है तब मैं कुछ देर के लिए अंधा हो जाता हूँ और कई बार तो इसी क्षणिक अंधेपन की वजह से मैं गिर भी जाता हूँ। कई बार मैं इसी अंधेपन की वजह से गिरा था लेकिन चूँकि मेरे मुँह से शराब की बू आ रही थी तो लोगों ने कहा ये पी के गिर जाता है।

लड़की को जब पता चला कि मुझे तारे गिनना इतना क्यूँ पसंद है तो वो ख़ामोश हो गई थी। मैं उससे फ़ोन पर बात कर रहा था और मैंने फ़ोन पर उसकी ख़ामोशी सुनी थी। वो शायद मुस्कुरा रही थी या शायद तारे गिन रही थी। वो काफ़ी देर ख़ामोश रही और उसके बाद उसने कहा मैं सोने जा रही हूँ। मैं उसे मुस्कुराते हुए सोते देखने की कल्पना कर रहा था। मेरी कल्पना में वो दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत लड़की थी। अगर आवारा लेखकों के भूत, लड़कियों के कमरों में खिड़की पर बैठ उन्हें सोता हुआ देखते होंगे तो उन्हें इस लड़की को देखकर इस बात का बहुत मलाल होगा कि उन्होंने जीते जी कभी सोती हुई परी की कहानियाँ क्यूँ नहीं लिखी।

एक दिन जब मैं ऐसे ही इस लड़की के सो जाने के बाद अपने बालकनी में अकेला बैठा तारे गिन रहा था तब अचानक से 26 तारे गिनने के बाद मैं चौंक सा गया था। मुझे 26 से याद आया की आज मेरी एक पूर्व प्रेमिका 26 साल की हो गई होगी। मैंने एक दफ़ा तारों से गुज़ारिश की मेरी तरह तुम भी थोड़ा मेरी इस पूर्व प्रेमिका के लिए टूट जाओ ताकि मैं इसके लिए एक ख़ूबसूरत

दुआ माँग लूँ। लेकिन कोई तारा नहीं टूटा और मैंने खीझ में बिना किसी टूटते तारे के, उसके लिए एक दुआ माँगी कि वो जहाँ रहे ख़ुश रहे। पूर्व प्रेमिकाओं के लिए माँगी जाने वाली यह सबसे प्यारी और सामान्य दुआ है। मेरे ख़्याल से पूर्व प्रेमिकाओं को नागिन बताने वाले लड़कों को भी यही दुआ माँगनी चाहिए।

मैं एक खीझ में था इसलिए मुझे लगा कि फिर से वो तारा आएगा जो मेरी 3 साल की उँगलियों को छूकर मुझे पुराने दिनों के आसमान में भटकने से बचा लेगा। हालाँकि ऐसा कोई तारा नहीं आया और मैं इतना खीझ गया कि मैं ख़ुद ही अपने कमरे में चला आया। कमरे में आने के बाद मुझे लगा कि अब मेरे पास अपने कमरे की चीज़ों से बात करने के अलावा और कोई काम नहीं है। लिहाज़ा, मैं अपनी मेज़ के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया और मेज़ से बातें करने लगा। एक बार के लिए कोई भी यह सोच सकता है कि भला मेज़ जैसी निर्जीव चीज़ें बात कैसे कर सकती हैं। मैं भी नहीं मानता था कि मेरी बात मेज़ जैसी चीज़ों से शुरू होगी। एक दिन मैंने अख़बार में पढ़ा कि एक ६ महीने की बच्ची के साथ रेप हो गया तो मैं स्तब्ध सा हो गया था। उस दिन के बाद से आए दिन मैंने ऐसी कई ख़बरें पढ़ी। जैसे-जैसे अख़बारों में ऐसी ख़बरों की संख्या बढ़ने लगी मुझे लगने लगा कि मैं मेज़ से बात कर सकता हूँ। क्यों, जब दुनिया में ऐसी अकल्पनीय घटनाएँ घट सकती हैं तो मेज़ जैसी चीज़ें बात क्यूँ नहीं कर सकती। शायद मेरी मेज़ ने भी यह ख़बर पढ़ ली थी इसलिए एक दिन उसने मुझे हाय राधे श्याम कह दिया था। तब से मैं इस बात पर यक़ीन करने लगा कि इस दुनिया में बहुत शैतान हैं और मेज़ जैसी चीज़ों से भी बात की जा सकती है।

मेरी मेज़ की स्थिति भी मेरी उम्र के बाक़ी बेपरवाह और लिखने पढ़ने वाले लोगों जैसी थी। मेज़ पर कुछ आधी पढ़ी मोटी-मोटी किताबें थी जिन्हें मैं पिछले 3 साल से पढ़ने की कोशिश कर रहा था। मेज़ के बीचों-बीच एक डेस्कटॉप था जिसकी बगल में बची बाक़ी जगह को अपने लैपटॉप के लिए घोषित कर चुका था। मेज़ के बायीं ओर पुराने दिनों का एक निशान था। कभी उस जगह पर मैं एक ऐश-ट्रे रखा करता था। तब मैं काफ़ी सिगरेट पीता था।

वो ऐश–ट्रे अब भी मैंने संभाल कर रखी हुई है। मैंने जानबूझकर अब तक मेज़ से ऐश–ट्रे के निशान को नहीं मिटाया वरना जिस तरह मैं कभी–कभी अपने दिल में जमे पुराने दिनों की धूल को मिटाने के लिए शराब का इस्तेमाल करता था वैसे ही मैं किसी ब्लीचिंग एजेंट से उस निशान को मिटा देता। कई बार हम चाहते हुए भी पुराने निशान मिटाना चाहते हैं। पुराने निशान कभी भी समय यात्रा के लिए एक पोर्टल बन सकते हैं। शायद यही वजह थी कि मैंने ऐश–ट्रे का निशान कभी मिटाने की कोशिश नहीं की। ऐसे भी मुझे निर्जीव चीज़ों में ऐश–ट्रे बहुत पसंद थी। एक ऐश–ट्रे का किरदार मुझे हमेशा से एक लेखक की तरह लगता था। उस लेखक की तरह जिसके पास कई हज़ार कहानियाँ थी लेकिन वो कभी इन कहानियों को लिखता नहीं था। वो बस अपने अन्दर कई सारी कहानियों को ज़ज़्ब करता है। ऐश–ट्रे में अपनी आख़िरी यात्रा को रूप देने वाली न जाने कई बुझी–अधबुझी सिगरेट पर होठों के छाप के रूप में न जाने कितनी कहानियाँ होती होंगी जो ऐश–ट्रे में जमी राख़ में हजारों सालों के लिए दफ़्न हो जाती होंगी। ऐश–ट्रे मुझे इसलिए भी पसंद है क्यूँकि इसमें राख़ जमा होती है। और राख़ से सच्ची चीज़ इस दुनिया में शायद कुछ नहीं। बनारस के घाटों पर जलने वाली लाशों के इर्द–गिर्द खड़े लोगों को राख़ एक बहुत ही डरावना पर कटु सत्य बताती है कि कुछ भी स्थायी नहीं है। शायद यही वजह है कि मैंने कई बार कई लड़कियों को बस इसलिए चूमा था क्यूँकि मुझे लगता था कि ये लड़कियाँ जादूगरनी हैं और ये मुझसे ऊब कर एक दिन मुझे जादू से एश–ट्रे बना देंगी।

मेरी मेज़ पर एक जगह डमी कुत्ता है। मैं अपनी मेज़ पर कुछ और भी रख सकता था लेकिन मुझे यह कुत्ता ही पसंद आया। कभी–कभार चीज़ें इसलिए भी पसंद होती हैं क्यूँकि चीज़ों के साथ कुछ कहानियाँ, कुछ यादें जुड़ी होती हैं। इस कुत्ते के साथ भी एक कहानी जुड़ी थी। मैं सालों बाद अपनी एक प्रेमिका के साथ एक बड़े शहर का बाज़ार घूमने गया था तब उसने मेरी पसंद पूछी थी। "आप बताओ न आप क्या लोगे ? यहाँ कितने प्यारे–प्यारे आर्ट पीस हैं।" मुझे उस दुकान से कुछ भी नहीं लेना था लेकिन उसके बहुत ज़िद करने पर मैंने कहा

कि मुझे यह कुत्ता पसंद है। वो मुझे कुछ देर के लिए घूर रही थी फिर उसने वो कुत्ता एक गिफ्ट रैपर में पैक करवा कर ले लिया।

मैं अब भी जब कभी अपनी मेज़ पर इस कुत्ते को देखता हूँ तो मुझे ये कहानी याद नहीं आती। इस कुत्ते को देखकर मुझे अपने पुराने शहर का एक लड़का याद आता। वो लड़का एक लड़की से सालों से एकतरफ़ा मुहब्बत करता था। वो लड़की सुबह-सुबह एक कोचिंग क्लास जाती थी। यह लड़का कहीं नहीं जाता था लेकिन सुबह-सुबह वो अपनी साइकिल से उस लकड़ी का तब तक पीछा करता था जब तक लड़की अपने कोचिंग नहीं पहुँच जाती थी। वो न लड़की से कभी कुछ कहता न ही कोई चिट्ठी देता वो बस कोचिंग जाते समय उसका पीछा करता। ऐसा नहीं था कि लड़की को इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि एक लड़का उसका रोज़ाना पीछा करता है। लड़की को भी यह बात पता थी और शायद उसे भी लड़के का पीछा करना पसंद था। तक़रीबन एक साल हो गए थे। लड़की की कोचिंग का आख़िरी दिन था। अगले दिन से वो उस रास्ते से नहीं आने वाली थी। लड़का रोज़ की तरह ही लड़की के पीछे-पीछे साइकिल चला रहा था। उन दोनों को एक दूसरे का नाम भी पता नहीं था। लड़की उम्मीद कर रही थी कि आज तो कम से कम लड़के को अपने दिल की बात बतानी चाहिए पर लड़का इन सबसे अलग-थलग साइकिल चलाने में मशगूल था जैसे उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य लड़की को कोचिंग छोड़ना ही हो।

लड़की को जब लगा कि लड़का कुछ नहीं बोलेगा तब वो अचानक से रुकी। लड़की को रुकते देख लड़के के साइकिल के ब्रेक भी अचानक से दब गए। लड़का इधर-उधर देखने लगा जैसे वो बताना चाहता हो कि वो रास्ता भटक गया है। लड़के को शायद उसकी इस हरक़त पर हँसी आई थी। लड़की तेज़ी से लड़के के क़रीब गई और उसने सीधे कहा "एक साल से देख रही हूँ रोज़ाना तुम मेरा पीछा करते हो लेकिन कभी बात करने की कोशिश नहीं करते। तुम्हें पता है पहले तो मुझे तुम पर बहुत गुस्सा आता था लेकिन बाद में मुझे लगने लगा कि महज तुम्हारे पीछे होने से मेरा रास्ता कितना सुरक्षित और प्यारा

हो जाता है। शुरुआत में मुझे डर लगता था कि कोई मेरा पीछा कर रहा लेकिन बाद में मुझे यही बात अच्छी लगने लगी कि कोई मुझे अकेला नहीं होने दे रहा। मुझे तुमसे प्यार हो गया है। मैं कल से इस रास्ते पर कभी नहीं आऊँगी इसलिए मैंने सोचा मैं तुम्हें आज बता दूँ। मेरा नाम नैना है। तुम्हारा नाम क्या है?

लड़के को कभी लगा नहीं था कि उसके साथ ऐसा होगा। वो एकदम से घबरा गया। उसकी साँसे तेज़ होने लगी और उसके चेहरे पर पसीने की एक परत अस्तित्व में आने लगी। लड़के ने कभी यह बात सोची ही नहीं थी कि उस दिन क्या होगा जब वो लड़की उसे पीछा करते देख लेगी या उससे बात करने आएगी। लड़के को लगता था कि उसे लड़की को उसकी कोचिंग तक छोड़ देना उसका कर्तव्य है। उसे बस अच्छा लगता था लड़की का पीछा करना। लड़के ने एकबारगी सोचा की वो लड़की को बता दे कि उसका नाम अभिराम है लेकिन उसके मुँह से शब्द ही नहीं फूटे। उसे लगा शायद दुनिया भर की क्रूर लड़कियों ने उसके गले में हाथ डालकर उसे बोलने से रोक दिया है। उसने बिना कुछ कहे अपनी साइकिल मोड़ी और पैडल पर लात मारते हुए घर चला गया। घर पहुँचते ही उसने फ्रिज से ठंडा पानी निकालकर पिया और अपने कमरे का दरवाज़ा बंद कर के हाँफने लगा। उसे अपनी हालत कुत्तों जैसी लगी। उन कुत्तों जैसी लगी जो गाड़ियों के पीछे बेतहाशा भागते हैं और एक दिन जब गाड़ी रुक जाती है तब उन्हें समझ ही नहीं आता की वो क्या करें। लड़के ने दुबारा कभी उस लड़की से मिलने या बात करने की कोशिश नहीं की। वो कई दिनों तक अपने घर से बाहर नहीं निकला। कुछ दिनों बाद उसे पता चला की एक नयी लड़की उस रास्ते से उसी कोचिंग जाती है तो वो फिर उस लड़की का पीछा करने लगा।

मेरी मेज़ पर जहाँ ऐशट्रे का निशान है उसके ठीक पीछे एक स्टील का गिलास है। मुझे यह गिलास काफ़ी पसंद है। मैं दूध, चाय, कॉफ़ी, पानी, जूस और कभी–कभी शराब भी इसी गिलास से पीता हूँ। यह गिलास मेरे साथ कई सालों से साथ हैं। यह मेरा फेवरेट गिलास है। मेरे जो फेवरेट लोग थे जब वो मेरे बहुत ज़्यादा फेवरेट हो गए थे तो वो चले गए थे। अभी भी ऐसा होता है कि

जैसे-जैसे मैं किसी को पसंद करने लगता हूँ उनकी बातों में जाने की बातें झलकने लगती हैं पर यह गिलास कभी नहीं गया। मुझे जब भी कभी गुस्सा आया मैंने अपना गुस्सा हमेशा इस गिलास को पटककर किया। गुस्से में मैंने कभी किसी को थप्पड़ नहीं मारा। मुझे जब भी कभी तेज़ गुस्सा आता तो यह गिलास न जाने कहाँ से मुझे दिख जाता और मैं इसे जमीन पर फ़ेंककर अपना गुस्सा शांत कर लेता। मुझे कभी-कभी लगता है कि इस गिलास को पता है कि मुझे गुस्सा बहुत आता है इसलिए वो कभी मुझसे दूर नहीं जाता। शायद यह निर्जीव गिलास जिसे रोज़ाना मेरे होंठ छूते हैं, मेरी भावनाओं को उन सजीव लोगों से बेहतर समझता है जो मेरे होंठ चूमा करते थे। मुझे नहीं पता था कि गिलास में पानी या शराब के अलावा भावनाएँ भी बह रही होती हैं।

मेरी मेज़ पर और ज़्यादा सामान नहीं होता। हाँ पर मेरे कमरे में मेज़ के अलावा एक आईना भी है। मुझे अपने कमरे की चीज़ों में सबसे ज़्यादा तिलिस्मी यह आईना ही लगता है। इस आईने ने मुझे रोते-हँसते, नाचते-गाते, सजते-सँवरते, गाते-गुनगुनाते हर हाल में देखा है। मुझे कभी-कभी लगता है कि यह आईना एक खिड़की है जिसके उस पार से मुझे वो लोग देखा करते हैं जो अब मुझे सामने आकर देखना नहीं चाहते या फिर कभी देखना ही नहीं चाहते। एक मर चुके लेखक कि किताब में मैंने पढ़ा था कि आईना निर्जीव चीज़ों में दुनिया का सबसे सरल और तिलिस्मी है। इसके तिलिस्म का पता मुझे तब लगा था जब एक बार कम रौशनी में मैंने ख़ुद का चेहरा ग़ायब देखा था। मुझे लगा शायद ये मेरी आँखों का दोष है लेकिन कई बार, अपना चेहरा ग़ायब देखने के बाद मुझे लगा कि शायद मुझे उस लड़की का चेहरा ढूँढ़ना है जिसे मैंने एक बार चूमा था लेकिन उसका चेहरा नहीं देख पाया था। उस दिन आईने में अपना चेहरा न देखकर मुझे यह एहसास हुआ कि मैंने न जाने कितने सालों तक उस लड़की के चेहरे को ढूँढ़ने की कोशिश नहीं की। मुझे यह बात कचोटने लगी कि मैंने उस लड़की का चेहरा ढूँढ़ने की कोशिश क्यूँ नहीं की।

वो लड़की मेरे एक दोस्त की प्रेमिका की बड़ी बहन थी। उन दिनों मैं शायद 18-19 साल का था और अमूमन अकेला रहा करता था या फिर

क्रिकेट खेला करता था। उन्हीं दिनों मेरे दोस्त की प्रेमिका ने मुझे एक नंबर दिया और कहा की यह मेरी बड़ी बहन जिज्ञासा का नंबर है वो आपसे बात करना चाहती है। आप प्लीज़ उससे बात कर लेना। मुझे समझ में नहीं आया कि एक अनजान लड़की मुझसे क्यूँ बात करना चाहेगी। लेकिन फिर मैंने थोड़ी न–नुकर के बाद वो नंबर ले लिया। मेरे अन्दर भी शायद किसी लड़की से बात करने की इच्छा मुझे रोमांचित करने लगी थी। मैंने उस लड़की से उस दिन घंटों बात की। उस लड़की ने पहले ही दिन मुझे अपने घर बुला लिया था। उसने बिना किसी भूमिका के सीधी बात करते हुए कहा कि "आज शाम घर पर कोई नहीं है तुम आ सकते हो तो आ जाओ। माँ और पापा बाहर गए हैं और घर पर छोटा भाई है पर उससे डरने की ज़रूरत नहीं है वो बस 13 साल का है। मैंने उसे कहा कि आज उसके इंग्लिश के नए टीचर आने वाले हैं। तुम बस इंग्लिश टीचर बनकर आ जाना। मैं तुम्हें घर का पता मैसेज कर दूँगी। बाक़ी कोई दिक्कत हो तो फ़ोन पर पूछ लेना।" उसने इतना कहकर फ़ोन काट दिया था और मुझे किसी किंकर्तव्यविमूढ़ कीड़े सा गुलाबी और ग्रे रंग की चाशनी में छोड़ दिया।

ऐसा पहली बार हुआ था कि मुझे किसी लड़की ने अपने घर बुलाया था। किसी लड़की का मुझे अपने घर बुलाना मेरे जीवन के इतिहास की एक कालजयी घटना थी इसलिए मैंने इस कालजयी घटना को और कालजयी बनाने के लिए अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने और तैयार होकर अपनी साइकिल से उसके घर की तरफ़ निकल पड़ा। रास्ते में मैंने उसके लिए अपने जीवन की सबसे महँगी चॉकलेट भी खरीदी। मुझे मेरे एक दोस्त ने बताया था कि जब भी लड़कियों से मिलने जाते हैं चॉकलेट लेकर जाते हैं। इसलिए मैंने चॉकलेट खरीदी थी। मेरे दोस्त ने मुझे और भी बातें बताई थी लेकिन मुझे बस चॉकलेट ले जाने वाली बात ही सही लगी थी। मैं जब लड़की के घर गया तब मैंने देखा वहाँ पहले से ही मेरे दोस्त की प्रेमिका मौजूद है। मेरे दोस्त की प्रेमिका ने मुझे सोफे पर बैठने के लिए कहते हुआ कहा "दीदी आ रही है।" उस लड़की का छोटा भाई आया और उसने मुझे गुड इवनिंग सर कहा। फिर वो कुछ देर वहाँ बैठा और अचानक से मुझसे कहा कि हम पढ़ाई कल से करेंगे मैं खेलने जा रहा

हूँ। मैं उस छोटे बच्चे की बात से थोड़ा घबरा सा गया था। मुझे कभी भी लड़कियों के साथ अँधेरे कमरे में अकेले रहने की आदत नहीं थी। उस शहर में बिजली अक्सर दिन में 14 घंटे ग़ायब होती थी। मैं जब वहाँ गया तब भी बिजली और मेरे अन्दर की हिम्मत दोनों ग़ायब थे।

कुछ देर बाद वो लड़की आई। अँधेरे की वजह से मुझे या तो उसका चेहरा नहीं दिखा था या फिर शायद मैंने उसका चेहरा देखने की कोशिश ही नहीं की थी। उसके आने के बाद उसकी बहन जाने के लिए उठी लेकिन उसने कहा "ईवाषा, तुम यहीं रहो। कोई आएगा तो मुझे फ़ोन कर देना मैं राधेश्याम के साथ छत पर जा रही हूँ।" ईवाषा उस कमरे में अकेली बैठी रही और मैं उसके साथ छत पर चला गया। छत पर भी काफ़ी अन्धेरा था इसलिए मुझे उसका चेहरा नहीं दिखा। छत पर जाते ही उसने मुझे ज़ोर से भींच लिया और कहने लगी कि तुम बहुत ख़ूबसूरत हो। अचानक से उसके ऐसा करने पर मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या करूँ, कोई और लड़की होती तो शायद मैं उसे धक्का दे देता या एक झापड़ मार देता लेकिन उसके जिस्म से एक बेहद ही प्यारी सी ख़ुशबू आ रही थी। मैं उसको ख़ुद से दूर नहीं कर पाया। मेरी पकड़ भी उसके जिस्म पर थोड़ी सख़्त होती गई। वो मुझे काफ़ी देर तक बेतहाशा चूमती रही। ऐसा लग रहा था जैसे की शायद उसने मुझमें अपने पूर्व जन्म के उस प्रेमी को देख लिया है जिसे उससे अलग कर दिया गया था। मैं उसके गिरफ्त में एक़दम एक शांत सी चिड़िया की तरह था। मुझे लग रहा था कि किसी सुन्दर सी लड़की ने मुझे बाज़ार से बस इसलिए खरीद लिया है ताकि वो उसे अपने सीने से लगाकर प्यार कर सके। वो शायद मुझे काफ़ी देर तक प्यार करती लेकिन ईवाषा का फ़ोन आ गया। उसने मुझे पीछे के रास्ते से जाने के लिए कहा। मैं जाने से पहले एक बार उसके चेहरे को देखना चाहता था लेकिन मैं उसका चेहरा देख नहीं पाया।

मुझे आज तक यह नहीं पता कि उस लड़की का चेहरा कैसा था। उससे मिलने के बाद मैंने अपने दोस्त को कहा था कि मैं उससे दुबारा नहीं मिलूँगा। मुझे अचानक से किसी का इतना खुल जाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मेरे दोस्त ने मुझे गर्व भरी दृष्टि से देखते हुए कहा, "भाई वो बहुत सुन्दर लड़की है।

बहुत ज़्यादा सुन्दर। ईवाषा से हज़ार गुणा सुन्दर। मैं ईवाषा से पहले उससे मिला होता तो ईवाषा की जगह वो मेरी गर्लफ्रेंड होती। मुझे मेरा यह दोस्त लड़कियों के मामले में सच्चा नहीं लगता था इसलिए मैंने अपने दोस्त की बात नहीं मानी। मैंने अपना नंबर बदल लिया और उसके लाख बुलाने पर कभी नहीं गया। आख़िरी बार मेरी उससे बात तब हुई जब मेरे दोस्त का ईवाषा के साथ ब्रेकअप हो गया। हम दोनों शराब पी रहे थे। मेरे दोस्त ने कहा की ये ले उसकी बहन से बात कर उसको गाली दे। मैं शुरुआत से ही लड़कियों के मामलों में काफ़ी ज़हीन और सभ्य था लेकिन उस दिन मैंने न जाने क्यूँ उसे गाली दे दी। मेरा दोस्त हँसा और फ़ोन काटने के बाद काफ़ी देर तक शराब पीता रहा। मैंने भी उस दिन काफ़ी शराब पी लेकिन पूरी रात इस ग्लानि में रहा की मैंने उसे बेवजह गाली दी।

मुझे इस लड़की की कभी याद नहीं आई। इसका चेहरा मेरी स्मृति में नहीं था। मेरी स्मृति में बस इसके शरीर की ख़ुशबू थी। कभी-कभी जब मेरी नाक में कोई प्यारी सी सुगंध पहुँचती तब मुझे उसकी याद आ जाती। मुझे अगर आईने में उस दिन अपना चेहरा ग़ायब हुआ नहीं दिखता तो शायद मैं कभी भी इस लड़की के बारे में इतनी देर तक नहीं सोच पाता। मुझे न जाने क्यूँ ऐसा लगा कि मुझे इस लड़की का चेहरा देखना चाहिए। मैंने सोशल मीडिया पर कई बार उसका नाम लिखकर उसे ढूँढ़ने की कोशिश की लेकिन मैं कभी उसे ढूँढ़ नहीं पाया। सोशल मीडिया प्रोफ़ाइल से किसी के शरीर की ख़ुशबू आती तो शायद मैं उसे ढूँढ़ लेता। हालाँकि, अभी तक हमारी तकनीक इतनी उन्नत नहीं हुई थी। सालों बाद शायद जब मेरी उम्र 60-70 की हो तब शायद तकनीक इतनी उन्नत हो जाए कि मैं सोशल मीडिया पर उसकी सुगंध से उसे ढूँढ़ लूँ।

मुझे लगता है कि मेरे कमरे में पड़ी ये चीज़ें बस चीज़ें नहीं है। मुझे लगता है ये शायद किसी जादूगर के तिलिस्म में फँसे हुए वे लोग हैं जो कभी-कभी मेरी कहानियों में आते हैं। मैं भी शायद कोई शापित ऐश-ट्रे हूँ जिसे किसी ने शायद इंसान होने का शाप दे दिया हो। यह शायद शाप की वजह से ही मैं इन चीज़ों से बात कर पाता हूँ या उनके बारे में इतना सोच पाता हूँ।

उस दिन जब मैं बहुत देर तक अपने घर की चीज़ों से बात नहीं कर पाया और जब उस लड़की का भी कोई मैसेज नहीं आया तब मैं वापिस तारे गिनने बालकनी में आ गया। मैं तारे गिन रहा था और उसी बीच एक तारा टूटा। तारा टूटने से दो चीज़ें हुई। मेरी गिनती से एक संख्या कम हुई और मैंने एक दुआ माँग ली। उस दिन फिर से मुझे आसमान में उस तारे ने मेरी 3 साल की ऊँगली को छुआ। मैं इतना ख़ुश कभी नहीं हुआ था। मैं जब वापिस कमरे में आया तब मैंने देखा की मेरे कमरे से मेरी चीज़ें ग़ायब हो गई हैं और उनकी जगह कई लोग खड़े हो गए हैं। मैं इन लोगों की रंगत और बनावट से यह पहचान पा रहा था कि ये मेरे कमरे की चीज़ें अचानक से इंसान के रूप में आ गई हैं। शायद ये किसी श्राप या जादू से मुक्त हो गए हैं। मुझे वो लड़की भी दिखी जिसका चेहरा मैं कभी देख नहीं पाया था। मेरी कहानी के वो सभी लोग मुझे दिखे। ये सब शायद किसी जादू के कारण मेरे कमरे में निर्जीव चीज़ों के रूप में फँसे हुए थे।

ये सब मेरे कमरे में ख़ुशी से नाच रहे थे। मैंने इन सबसे एक-बारगी कहा की अब आप सब अपनी-अपनी दुनिया में जा सकते हैं। या फिर आप सब मुझे श्राप मुक्त होने की दुआ कर सकते हैं।

मेरे इतना कहने पर वो लोग अचानक से शांत हो गए और मेरे कमरे से निकल गए। जाते-जाते उन्होंने मेरे लिए दुआ माँगी। मेरा कमरा ख़ाली हो चुका था। मेरे कमरे में कुछ नहीं था। सिवाय मेरे और उस गिलास के जो अब एक सुन्दर लड़की में बदल चुका था। उस लड़की ने कहा कि मैं नहीं जाऊँगी। इतना कहने के बाद उसने अपनी जेब से एक सिगरेट निकाली और पीने लगी। "मेरी कहानी सुनोगे।" उसने इतना कहा और सिगरेट की राख़ मेरी छाती पर डाल दी।

मुझे लगा कि अचानक से मेरा आकार बदल चुका है। मुझे लगा शायद मैं एक एश-ट्रे बन चुका हूँ। लड़की बनी गिलास ने मुझे चूमते हुए कहा "तुम अब श्राप मुक्त हो, छोटी चीज़ों के देवता।"

•••

डिलीवरी बॉय

मेरे कंधे पर एक लड़की सर रखकर सो रही है। इससे पहले भी यह लड़की कई बार मेरे कंधो पर सर रखकर सो चुकी है बस आज फ़र्क़ इतना है कि ये अब दुबारा कभी उठ नहीं पाएगी। मैं उसके घर के सोफे पर बैठा हूँ। कुछ देर बाद मैं भी ऐसी नींद में चला जाऊँगा की मैं भी लौटकर नहीं आ पाऊँगा। प्रेम इतना जानलेवा हो सकता है मैंने इसकी कभी कल्पना नहीं की थी और न ही कभी कर पाऊँगा।

एक समय में मुझे लगता था कि मैं दुनिया को जीत के ही दम लूँगा। अन्दर एक आग थी। वक़्त के साथ-साथ यह आग कब बुझ गई मुझे इसका अंदाज़ा भी न हुआ। एक ऐसा दिन भी आया जब खाने के लाले पड़ गए थे। शराब के नशे में घर-परिवार सब छूट गया। कहाँ मुझे लगता था कि मैं एक दिन बेहद पॉपुलर लेखक बनूँगा। ख़ूब पैसे कमाऊँगा। फ़िल्में बनाऊँगा। एक दिन शराब के नशे में ऐसे ही मुंबई चला गया था। वहाँ कुछ महीने बहुत कोशिश की थी कि फिल्मों में लिखने का काम मिल जाए पर वहाँ गया तो देखा की हर क़दम पर मेरे जैसे कितने लेखक बड़ा पाव खाते हुए अपने सपनों को पंख लगाने की कवायद में लगे हैं। अच्छे दिनों में मैंने कई नौकरियाँ अपने गुरुर में छोड़ दी। कई जगह निकाल दिया गया। वो मुझे बराबर कहा करती थी कि एक जगह टिक कर काम करो। शराब कम पियो। अच्छी नौकरी ढूँढ़ लो। पढ़ने में ठीक हो कोई बढ़िया सरकारी नौकरी ही कर लो। मैं उसकी एक बात नहीं सुनता मुझे लगता था कि मैं इन कामों के लिए बना ही नही। मैं अपने आप को हमेशा एक फ़िल्म सेट पर मूवी डायरेक्ट करते देखता या किसी पहाड़ी नदी के किनारे बैठ कोई किताब लिखते हुए। एक दिन दो साल मेरी बेरोज़गारी को अपने पर्स से छिपाते-छिपाते उसने भी कह ही दिया की अब हमारा कुछ नहीं हो सकता। उस दिन पहली बार मुझे लगा कि उसका न होना मेरे जीवन में कितना अन्धेरा ला सकता है। मैंने उसे मनाने की बहुत कोशिशें की। वो नहीं मानी। एक दिन

शराब के नशे में मैंने उसे बहुत ही भला बुरा कहा। उसे गालियाँ दी। जिसके लिए बाद में, मैं बहुत पछताया लेकिन वो इस तरह ग़ायब हुई कि मेरे लाख ढूँढ़ने पर भी वो कभी न मिली। एक फ़िल्म में शाहरुख़ ख़ान कहता है कि "कहते हैं अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है।" इसे नियति का ही खेल कहेंगे कि आज पूरे चार साल बाद मुझे उससे शहर में मिलने का मौक़ा मिला जहाँ की सड़कों पर ख़ाक छानता रहता हूँ।

आज ही मैंने एक ऑनलाइन फ़ूड डिलीवरी फर्म में डिलीवरी बॉय की नौकरी ज्वाइन की है। और नियति का खेल देखिए, पहला ऑर्डर उसी लड़की का मिला जिसने मुझे कभी अपने जीवन से रद्दी काग़ज़ की तरह मरोड़ फ़ेंक दिया था। उसके घर का डोरबेल बजाते मैंने कभी नहीं सोचा था कि दरवाज़ा खुलने के बाद मैं सीधे 4 साल पहले की दुनिया में चला जाऊँगा। उसका चेहरा पहले से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत हो गया था। उसने मुझे देखा पर उसने किसी तरह रियेक्ट नहीं किया। उसने मुझे ऐसे देखा जैसे उसने मुझे कभी जाना ही न हो। खाना लेकर उसने मुझे इशारे में जाने को कहा। अन्दर भी नहीं बुलाया। बुरे और दमघोंटू वक़्त ने मुझे एक ख़राब आदमी में तब्दील कर दिया था। उसकी इस बेरुखी ने मुझे और भी ज़्यादा शैतान बना दिया। शायद इसलिए मैं उसके दरवाज़ा बंद करने से पहले ही उसके घर में घुस गया। वो चिल्लाती इससे पहले मैंने उसका मुँह हाथ से बंद कर दिया। जब मैं उसे शैतानों की तरह घसीटकर उसका गला दबा रहा था तब मेरे दिमाग़ में एक बार भी उसके प्रति कोई प्यार नहीं आया। मेरे अन्दर बस एक आग थी, एक जलन थी। एक गुस्सा था जिसकी आग में मैं भी और वो भी जल रही थी। संघर्ष के दिनों ने मेरे हाथों को इतना मजबूत कर दिया था कि मुझे उसका गला दबाकर मारने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगा। वो कुछ ही देर में इस दुनिया से हमेशा के लिए चली गई। पहली बार जब वो मेरी दुनिया से गई थी तब भी मैं बहुत रोया था और आज भी जब वो इस दुनिया से गई तो मैं उसे बाहों में लेकर रोता रहा। हालाँकि, मैंने एक हत्या की थी इसलिए मैंने अपनी भावनाओं को काबू में रखते हुए हत्या को आत्महत्या

में तब्दील करने की सोची। सामने मेज़ पर पड़े लैपटॉप को देखकर मैंने सोचा की मैं इसके फेसबुक पर इसके प्रोफ़ाइल से एक सुसाइड नोट लिखूँगा फिर इस हत्या को आत्महत्या में तब्दील करूँगा। उसके लैपटॉप में पासवर्ड था। मैंने जल्दी–जल्दी कई पासवर्ड ट्राई किए। पर लैपटॉप नहीं खुला। मुझे धीरे–धीरे डर लग रहा था कि कोई आ न जाए। वो अकेली ही रहती थी इसलिए कोई बहुत देर तक नहीं आया। इतने देर में मुझे लैपटॉप में पासवर्ड हिंट का ऑप्शन मिला। माई लाइफ़। यही था उसका पासवर्ड हिंट। मैंने जल्दी–जल्दी करियर, सक्सेस, पेरेंट्स, आलोक, मिलियनेयर जैसे कई शब्द डाले पर कंप्यूटर नहीं खुला। आलोक, ये वही शख़्स था जिसकी उससे शादी होने वाली थी। हालाँकि उसने शादी की या नहीं की मुझे पता नहीं चला था। मैंने अंत में थक–हारकर अपना नाम टाइप किया "विहान@1234" यह टाइप करते ही उसका लैपटॉप और मेरे गिल्ट का दरवाज़ा अचानक से खुल गए। मेरे शरीर में जितना ख़ून था वो ख़त्म हो चुका था। लैपटॉप खुल चुका था लेकिन मैं दहाड़े मारकर रोने लगा। मैंने उसके जिस्म को हिला–हिलाकर पूरी कोशिश की वो लौट आए पर शायद वो बहुत दूर जा चुकी थी। मैंने आनन–फानन में उसका कमरा चेक किया उसके बिस्तर के सिराहने मुझे ख़ुद की एक तस्वीर मिली। उसके पर्स में मुझे अपना पहला प्रेम पत्र मिला।

इस स्थिति में इन सब चीज़ों का मिलना किसी भी आदमी को पागल कर सकता है। मैं शैतान हो गया था लेकिन मेरे अन्दर भी एक इंसान था। और ये इंसान बहुत रो रहा था। मैं उस दिन इतनी ज़ोर से चीखना चाहता था कि मैं ख़ुद की आवाज़ से बहरा हो जाऊँ। लेकिन मैं चीख नहीं पाया।

मैं अभी भी उसके कमरे में हूँ। वो मेरे कंधे पर सर रखकर सो रही है। वो कहते हैं न अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है। मैं अब कुछ ही देर में उसके पास जा रहा हूँ। मुझे नहीं पता था कि एक दिन मुझे उससे मिलने के लिए अपनी कलाई की नस काटनी होगी। आज एक सुसाइड नोट लिखा जाएगा लेकिन उसके नीचे मेरे दस्तख़त होंगे।

एक कॉकरोच की मौत

यूँ आदमी दिखता है कि वो एक समय में एक ही जगह है पर इस बात की बहुत ज़्यादा संभावनाएँ होती हैं कि वो एक ही समय में दो या दो से ज़्यादा जगहों पर होता है। जैसे एक बच्चा दिखता तो है कि वो गणित की कक्षा में जोड़ घटाव के सवालों को हल कर रहा है पर असल में वो उस समय अपने घर के किचन में स्टूल लगाकर ऊँचे वाले स्लैब से चीनी चुराने में मशगूल रहता है। ये बहुत ही ज़्यादा मुमकिन होगा कि यही बच्चा जवान होने पर अपने दफ़्तर में लैपटॉप पर आँखें गड़ाए दिखेगा पर वो दफ़्तर से कहीं दूर किसी कैफ़े में अपनी माशूका के साथ होगा।

उसे इस बात पर पूरा यक़ीन था कि आदमी एक समय एक से ज़्यादा जगहों पर हो सकता है। शायद यही वजह थी कि वो एक तरफ़ एक अस्तपाल के आईसीयू में एक बेड पर कोमा की अवस्था में पड़ा था दूसरी तरफ़ किसी और दुनिया में एक बहुत बड़े और गहरे बेसमेंट की पहली सीढ़ी पर कॉकरोच बन कर खड़ा था।

दूसरी दुनिया में वो कॉकरोच ज़रूर था पर उसे पता था कि उसकी आत्मा इंसान की ही है। बस वो एक कॉकरोच के शरीर में है। जैसे ही वो इस बेसमेंट की गहराई में नज़र आ रहे वॉर्महोल तक पहुँचेगा वो फिर से इंसान बन जाएगा। इसलिए वो कोशिश कर रहा है और धीरे-धीरे बेसमेंट की लंबाई को पार कर रहा है।

इधर पहली दुनिया के आईसीयू में वो एक़दम निर्जीव सा पड़ा है। उसकी आँखों के सामने एक घना सा अँधेरा, ठीक वैसा ही अँधेरा जैसे दूसरी दुनिया के उस बेसमेंट में है जहाँ वो कॉकरोच की भूमिका में है। उस कॉकरोच की भूमिका में जो आज 6 महीने बाद उस बेसमेंट की गहराई में बने वॉर्महोल तक पहुँच गया है। वो कॉकरोच वॉर्महोल के जितना क़रीब आता जाता है, पहली दुनिया के आईसीयू में कोमा में पड़े उस शख़्श के शरीर में हरक़त होती है। वो

कॉकरोच अब वॉर्महोल में प्रवेश कर चुका है। वॉर्महोल आने के बाद भी वो कॉकरोच ही है। जैसा उसने सोचा था कि वो दुबारा इंसान बन पाएगा वैसा कुछ नहीं हुआ। हाँ, ये अलग बात है कि वो अब किसी बेसमेंट में न होकर एक हॉस्पिटल के आईसीयू में है। जहाँ एक आदमी एक नर्स को धीमी आवाज़ में कह रहा है "यहाँ कॉकरोच कैसे आया। इतने बड़े हॉस्पिटल के आईसीयू में कॉकरोच कैसे आ सकता है। क्या मैंने अपनी ज़िंदगी की आधी कमाई इसलिए ख़र्च की है।" नर्स उस आदमी की बात और कॉकरोच को देखकर घबरा गई। अगर वो लड़की नर्स नहीं होती तो अब तक कोमा में पड़े शख़्स के भाई के गले से चिपक गई होती। पर वो लड़की, लड़की कम एक नर्स ज़्यादा थी इसलिए वो कॉकरोच को देखकर ज़ोर से चिल्लाई नहीं। बस अपने पैरों में थोड़ी से हरक़त लाकर उसने कॉकरोच को मसल दिया।

उस दिन कॉकरोच के मसले जाने के कुछ सेकंड बाद ही कोमा में पड़े शख़्स की मौत हो गई। उसका भाई कुछ देर तक चुप रहा और फिर उस नर्स से लिपटकर बिना किसी आवाज़ के रोने लगा।

आदमी को कभी भी एक ही समय में एक ही जगह पर दो-दो बार नहीं होना चाहिए।

•••

प्रेम की गोली

"शीशा हो या दिल हो आख़िर टूट जाता है।" उसे इस बात को कहने वाले जितने भी गाने थे सब वाहियात लगते थे। लेकिन अचानक से उस दिन उसे लगा कि चीज़ी फलसफ़े वाले ये गाने कितने सच्चे हैं। उसे अचानक से यक़ीन हो गया कि दिल का टूटना शीशे के टूटने के समान ही है। शीशे के टूटने के बाद उसे क़रीने से एहतियात के साथ न उठाया जाए तो ज़ख़्म उभरते हैं। दिल टूटने के बाद भी ऐसा ही होता है। हमारे अन्दर शीशे के कई महीन टुकड़े भीतर ही भीतर चुभते हैं। दर्द होता है। दिल टूटने के बाद उसे भी कई दिनों तक सीने में असहनीय दर्द की शिक़ायत महसूस हुई थी। लिहाज़ा वो इलाज के लिए अपने दोस्त के पास गया जो डॉक्टरी की पढ़ाई भी करता था। ऐसा वो सबको कहता था। उस दिन उसका दोस्त उसकी कलाई पकड़ते हुए नब्ज की जाँच करता है और किसी अनुभवी डॉक्टर की तरह कहता है "सब कुछ ठीक है। तुम्हें बस प्यार की कमी है। ये 2 गोलियाँ हैं इन्हें खाओ तुम्हारी समस्या ख़त्म हो जाएगी।"

वो इन गोलियों को भगवान का प्रसाद समझकर ले गया। घर आकर सबसे पहले उसने पानी के साथ एक गोली निगल ली। गोली खाते ही उसे हल्की नींद सी आने लगी उसकी आँखें खुली रही पर उसे ऐसा लगा जैसे सालों से किसी जगे हुए आदमी की नींद ने उसकी आँखों को चूम लिया है। उसकी आँखों के सामने धीरे-धीरे दृश्य बदलने लगे। अचानक से उसके कमरे की दीवारें ग़ायब हो गई। उसने महसूस किया कि वो सड़क के बीचों-बीच एक कुर्सी पर बैठा हुआ है और बहुत तेज़ बारिश हो रही है। सड़क के किनारे सारे पेड़ धीरे-धीरे एक लड़की का रूप ले रहे हैं। उसने देखा की सड़क के सारे पेड़ अलग-अलग लड़कियों में तब्दील हो चुके हैं। ये सारी लड़कियाँ एक प्रेम गीत पर नृत्य करने लगती हैं। वो नींद में तो होता है पर वो ख़ुद को मुस्कुराता हुआ महसूस करता है। वो लड़की के चेहरे को पहचानता है। वो देखता है कि गाते-

नाचते लड़की ने हँसते हुए अपना दुपट्टा हवा में उछल दिया है। गुलाबी रंग का यह दुपट्टा उसके चेहरे को ढँक लेता है। वो कुर्सी से उठकर अपने दोनों हाथ हवा में फैलाकर बारिश को और उस गुलाबी रंग के जाने-पहचाने दुपट्टे को महसूस करने की कोशिश करता है लेकिन उसी पल सड़क की दूसरी ओर से तेज़ मोटर साइकिल चलाते हुए उसी की शक्ल का लड़का आता है और ठीक उसके सामने मोटरसाइकिल से सड़क पर गिर जाता है। अभी तक गाना गा रही सारी लड़कियाँ वापस से पेड़ बन जाती हैं। वो लड़की जिसका दुपट्टा उसके चेहरे पर था वो अपना दुपट्टा लेने वापिस नहीं आती और भागकर फिर से पेड़ बन जाती है। सड़क पर मोटर साइकिल से गिरे लड़के का ख़ून बारिश के पानी में मिलकर गुलाबी हो जाता है, ठीक उतना गुलाबी जितना कुछ देर पहले प्यार की गोली खाने वाले लड़के के चेहरे पर मौजूद दुपट्टे का रंग होता है। वो इससे पहले की अपने चेहरे से दुपट्टा हटाता वो वहीं बेहोश होकर अपने घायल हमशक्ल की बगल में गिर जाता है। पेड़ बनी लड़कियाँ ख़ामोश रहती हैं।

उसे जब होश आता है तो वो ख़ुद को अपने पुराने घर में पाता है। उसका पुराना घर अब खंडहर बन चुका है। वो दौड़कर घर के एक खंडहरनुमा कमरे में जाता है और वहाँ एक पुरानी संदूक में काग़ज़ से लिपटा एक गुलाबी रंग का दुपट्टा निकालता है। उसने सालों से इस संदूक में एक लड़की के कई प्रेम पत्र, उसके द्वारा दी गई कई चीज़ें, अपनी कई सालों की डायरी और एक चॉकलेट का रैपर संभाल कर रखा है। उसने पहली बार जब उस लड़की के होठों से चॉकलेट खाई था वो रैपर भी उसने संभालकर रखा था। वो इन चीज़ों को देखकर एक-बारगी बहुत चिल्लाकर रोने की कोशिश करता है लेकिन फिर चुपचाप उस गुलाबी दुपट्टे से पुराने पलों की ख़ुशबूओं को महसूस करता है। उसके सीने में फिर से बहुत तेज़ दर्द होता है और वो फिर से अपने दोस्त द्वारा दी गई गोली को बिना पानी के निगल लेता है। एक बार फिर से गोली का असर उस पर पड़ने लगता है। उसकी आँखों में नींद तिलिस्म बुनने लगती है। उसके सामने के सारे दृश्य बदलने लगते हैं। इस बार वो ख़ुद को एक बंजर जमीन पर उगे सूख चुके पत्ती विहीन पेड़ों के जंगल में पाता है। वो देखता है कि हर पेड़

पर वही गुलाबी रंग का दुपट्टा लटक रहा है। एक पेड़ के जब वो क़रीब जाता है तो पेड़ से एक लड़की की आवाज़ कहती है कि प्यार चाहिए तो यहाँ से सीधे 3 किलोमीटर दौड़ के जाओ प्यार मिलेगा। वो पेड़ से आयी इस लड़की की आवाज़ पहचानता था। वो 3 किलोमीटर सीधे यूँ ही बेतहाशा दौड़ता है। रास्ते में उसे हर जगह सूख चुके पेड़ मिलते जिन पर गुलाबी दुपट्टे लहरा रहे होते। उसे रास्ते भर हर पेड़ से एक लड़की की आवाज़ सुनाई देती "और तेज़ भागो, और जल्दी। देरी की माफ़ी नही"। वो बहुत तेज़ दौड़ा और आख़िर में जमीन के एक छोर पर पहुँचा जिसके पीछे एक गहरी खाई थी। खाई के समीप ही एक सूखा पेड़ था जिस पर गुलाबी रंग के दुपट्टे से बँधी एक बिना चेहरे वाले लड़के की लाश लटकी होती है। उस लड़के के छाती पर बड़े-बड़े अक्षरों में "प्यार" लिखा होता है। वो लड़का इस लाश को देखकर वहीं गश खाकर गिर जाता है।

इस बार लड़का अपने कमरे की उसी कुर्सी पर उठता है जहाँ उसने पहली गोली खाई थी। लड़का उठने के बाद महसूस करता है कि उसके सीने का दर्द ग़ायब हो चुका है। लेकिन अगले ही पल गर्दन में बहुत तेज़ दर्द महसूस करता है। वो मेज़ से फ़ोन उठाकर अपने उसी दोस्त को फ़ोन लगाने की सोचता है। उसके फ़ोन पर अब तक 72 से ज़्यादा मिस्ड काल और कई मैसेज आए होते हैं। उसके मोबाइल का कैलेण्डर भी दो दिन आगे बढ़ गया होता है। वो सब कुछ नज़रअंदाज़ कर अपने उस दोस्त को फ़ोन लगाता है। उसके दोस्त का फ़ोन नहीं लगता। वो गर्दन के दर्द से बिलबिलाने लगता है और उसी हाल में घर से निकलकर अपने दोस्त के पास पहुँचता है। वहाँ उसे कोई बताता है कि उसके दोस्त को 1 दिन पहले पुलिस इलीगल ड्रग्स बेचने के जुर्म में गिरफ़्तार कर चुकी है। वो अपने दोस्त के घर दरवाज़े पर बैठा दर्द से बिलबिला रहा होता है कि एक आदमी उसके पास आता है और कहता है "गर्दन में दर्द है? ये सब प्यार की कमी से होता है। ये दो गोली खाओ। सब ठीक हो जाएगा।"

• • •

Kill Them Before They Kill You

घटनाएँ सिर्फ़ घटने के लिए नहीं घटती हैं, घटनाएँ इसलिए भी घटती हैं कि आने वाले जीवन से अच्छी-बुरी घटनाओं को घटा सके। वो अपना ब्रीफ़केस लेकर अपने नए अपार्टमेंट की तरफ़ बढ़ा ही था कि उसे अपने घर के दरवाज़े की फाँक से अन्दर जाते हुए एक चींटे को देखा। वो यह देखकर थोड़ा मुस्कुराया था कि "मुझसे पहले ही तुमने गृह प्रवेश कर लिया। और दिन होता तो शायद वो चींटे को मसल चुका होता लेकिन यह वो दिन था जब वो जीवन में कुछ नया शुरू कर रहा था। वो नया जिसका पुराना गाढ़े हो चुके ख़ून और बहुत हुए प्यार जैसा गुलाबी था।

आदमी को अत्याचार या तो विद्रोही बना देता है या दमित। दमन के चक्र में जो पिसना नहीं चाहते वो या तो क़लम उठा लेते हैं या हथियार। वो इनमें से दूसरा था। पहली बार उसने एक पेन्सिल से अपने एक क्लासमेट को घायल किया था। अगर उसका क्लासमेट उस दिन पेन्सिल से घायल नहीं होता तो शायद उसका क्लासमेट न जाने कितनों को बुली करता, न जाने कितनों को विद्रोही या दमित बनाता। उसके पिता कहा करते थे कि दमन का चक्र तोड़ने के लिए हमेशा क़लम को चुनना चाहिए। हालाँकि उसने पेंसिल को चुना था। वो पेंसिल जो न जाने कब एक देसी कट्टे में तब्दील हो कर एक रिवाल्वर में तब्दील हो गई। हर आम मिडिल क्लास लड़के कि तरह उसके सपने में भी एक 9 से 5 वाले सरकारी दफ़्तर कि कुर्सी नज़र आती थी। हालाँकि, कब उसके यथार्थ में वो टेबल आ गई जिस पर एक ऐशट्रे और एक बन्दूक रखी रहती थी।

आदमी जब अपराध के दलदल में पाँव रख देता है तब उसे धरातल पर लाना मुश्किल हो जाता है। उसने अपने वाक़ये में अपराध के इस दलदल में भी हिम्मत कि एक पुख़्ता जमीन बना ली थी। शहर के नामी शूटर्स में उसका नाम आने लगा था। पहली बार बंदूक चलाते समय उसकी आँखों में उतना ही पानी आया था जब एक दिन पुलिस ने उसके पिता को गिरफ़्तार कर लिया था और

पुलिस कस्टडी में ही उनकी मृत्यु हो गई थी। पहली बार जब वो एक पुलिस वाले कि हत्या के सिलसिले में जेल आया था तब उसकी आँखों में डर नहीं था। उसकी आँखों में एक ऐसी दिलेरी थी जिसे देखकर जेल में रहने वाले खूँखार अपराधी भी इज्ज़त देते थे।

उसने अपने घर का दरवाज़ा खोला और ड्राइंग रूम के सोफे पर इस तरह पसर गया जैसे उसने अपने अगले आने वाले 7 जन्मों कि रिटायरमेंट आज ही ले ली हो। आदमी सबसे ज़्यादा ख़ाली तब होता है जब या तो उसके सारे सपने मर जाएँ या फिर वो ख़ुद से एक करार कर ले कि वो कभी सपने नहीं देखेगा। उसने अपने जीवन से और ख़ुद से एक करार कर लिया था कि आज के बाद वो न तो कभी हथियार उठाएगा न ही 1000 किलोमीटर दूर अपनी पुरानी ज़िंदगी या दो अक्षर वाले नाम कि तरफ़ रुख करेगा। कुछ दिनों पहले ही 1000 किलोमीटर दूर उसने अपनी परी नाम कि एक ज़िंदगी खो दी थी। उस हॉस्पिटल के कोरिडोर में जब वो स्ट्रेचर थामे भागते हुए उससे न जाने के मिन्नते माँग रहा था तब ही उसके वादों में कभी भी हथियार न उठाने कि सच्चाई थी। वैज्ञानिक रूप से इंसान कि मृत्यु ख़ून की कमी से तय होती है लेकिन उस दिन उस के जिस्म में बहुत ख़ून था; अपना और न जाने कितनों का. फिर भी वो साँस लेते-लेते आँखे खोले-खोले मारा गया। यह बात अलग थी कि उसके मरने से पहले परी भी मर गई थी। रूफ़ी नामक एक मशहूर शूटर कि ज़िन्दगी भी मर गई थी।

बहुत पीछे जाने के बाद जब अचानक से वो आज में आया तब उसे लगा कि उसे बहुत ज़ोर से प्यास लगी है। अपनी प्यास बुझाने के लिए जब वो फ्रीज कि तरफ़ बढ़ रहा था तब उसे फिर से वही चींटा दिखाई दिया। उसने उस चींटे के सामने कुछ चीनी के टुकड़े रख दिए और टीवी पर एक कॉमेडी मूवी लगा कर देखने लगा। उसे किसी ने बताया था कि हँसने से पुराने ज़ख़्म भर जाते हैं। हालाँकि जितनी देर भी उसने फ़िल्म देखी उसे हँसी नहीं आई। कमरे में हँसी की कोई गूँज नहीं थी। इतना सन्नाटा था कि बस उसे अपने दिल की धड़कनों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। साफ़ और कानों में सुई चुभोने जैसी। यह आवाज़

उसे बहरा बना ही देती कि डोरबेल की चीखती आवाज़ ने उसे बहरा होने से बचा लिया।

एक नए शहर के एक नए घर के दरवाज़े का डोर बेल बजना सामान्य नहीं होता और वो तब जब मकान में रहने वाला मकान मालिक आसपास के लोगों को सख़्त हिदायत दे कि कोई उसे परेशान न करे। दरवाज़े के उस पार खड़ा 70 वर्षीय वह बूढ़ा शायद बहुत ज़्यादा परेशान था इसलिए उसने उस दरवाज़े का डोर बेल बजाया जिसके पीछे रूफ़ी नामक एक नामी शूटर रहा करता है।

"जी, बताइए क्या काम है? मैंने पहले ही यह बता दिया है कि मुझे किसी प्लंबर या इलेक्ट्रीशियन, कूक या डोमेस्टिक हेल्प किसी की ज़रूरत नहीं है।"

"मैं आपसे किसी और काम के लिए आया हूँ।"

"माफ़ कीजिएगा मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता हूँ।"

"मेरी मदद बस आप ही कर सकते हैं मिस्टर रुफी"

उस अधेड़ के मुँह से यह नाम सुनकर उसे बहुत तेज़ झटका लगा था हालाँकि उसने अपने आप को सँभालते हुए उस बूढ़े को बहुत प्यार से कहा "देखिये आप ग़लत पते पर आए हैं, मेरा नाम रूफ़ी नहीं है। प्लीज़ आप चले जाइए।"

"मैं बिलकुल सही पते पर आया हूँ। मैं यहाँ ज़्यादा देर नहीं रुकूँगा। मैं जाते-जाते ये ख़त छोड़ कर जा रहा हूँ। इसे पढ़िएगा, मैं फिर आपसे संपर्क करने की कोशिश करूँगा। और प्लीज़ मेरी मदद कीजिए।"

"ठीक है अब आप जाइए।"

उसके जाते ही उसने दरवाज़ा बंद कर दिया। दरवाज़ा खुलने के साथ ही उसके जीवन में फिर से उस तूफ़ान की आहट आने लगी थी जो उसके नाम से जुड़ी थी। वो नाम जिसे सुनकर बड़े-बड़े तीसमारखाँ के होश फ़ाख्ता हो जाते थे। वो नाम जो सैंकड़ों लोगों के ज़ुबान पर रोबिनहुड जैसा था और लाखों लोगों के ज़ेहन में शैतान जैसा। वो कुछ देर शांत रहा और उसने वो ख़त पढ़ना शुरू किया।

"प्रिय रफ़ी उर्फ़ रूफ़ी,

दुनिया में बहुत कम लोग हैं जो तुम्हें रफ़ी के नाम से जानते हैं। बाक़ी वो

लोग जो तुम्हें इस नाम से जाना करते थे अब वो इस दुनिया में नहीं हैं। मैं भी कुछ दिनों बाद शायद इस दुनिया में न रहूँ लेकिन कोई अजीज है जिसे मैं नहीं चाहता कि वो इस दुनिया से जाए। वो इस दुनिया में साँस ले सके ऐसा तब ही मुमकिन है जब तुम मेरी मदद करो।

मैं तुम्हारे पिता अशफ़ाक़ ख़ान के साथ ही उनके अख़बार के दफ़्तर में काम करता था। मैं और तुम्हारे पिता ने कई बार मिलकर अपने शहर अमरावती में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन चलाए थे। कई भ्रष्ट अफसरों और नेताओं को जेल के सलाखों के पीछे भेजा था। आख़िरी बार जब मैं और तुम्हारे पिता शहर के सबसे बड़े नेता के घोटालों कि जांच कर रहे थे तभी तुम्हारे पिता को पुलिस ले गई थी। और तुम्हारे पिता कभी वापिस लौट नहीं पाए। मैंने बहुत कोशिश की थी तुम्हारे पिता को बचाने कि लेकिन अपनी बेटी के मोह में मैं वो नहीं कर पाया जो मुझे करना था। उन्होंने मेरी 7 साल की बेटी को मार डालने की धमकी दी थी इसलिए मैं चुप रहा। उस समय पुलिस, प्रशासन सब कुछ उस नेता के हाथ कि कठपुतलियाँ थी। मैं कुछ नहीं कर सकता था. शायद मेरे अंदर तुम्हारे पिता जैसी हिम्मत नहीं थी।

आज 20 साल बाद वो नेता देश की सबसे बड़ी सियासी शख़्सियत है। मैं और मेरे जैसे लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं उसका कुछ बिगाड़ने की सोचता भी नहीं लेकिन मैं और मेरी बेटी उन लोगों में से एक हैं जो उस नेता के बारे में सब कुछ जानते हैं और हमारे पास उनके ख़िलाफ़ काफ़ी सबूत भी है। मैं इतने सालों से चुप था तो कोई दिक्कत नहीं हुई। लेकिन जैसे ही मेरी बेटी को सब पता चला तो वो अब आवाज़ उठा रही है। और वो लोग चाहते हैं कि वो आवाज़ बंद हो जाए.

मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी गुज़ार ली है अब मुझे मरने का कोई मलाल नहीं है. अब तो मुझे इस बात कि तैयारी करनी है कि जब क़यामत की रात फ़रिश्ते मेरी रूह से सवाल पूछेंगे तो मैं क्या जवाब दूँगा। मुझे तुमसे बहुत उम्मीदें हैं। तुम मेरी बेटी को ज़रूर बचाओगे।

मैं ख़त के आख़िर में अपना नंबर तुम्हें दे रहा हूँ। अगर तुम्हें मेरी बेटी पर

थोड़ी सी दया आ जाए तो मुझे कॉल करना।

तुम्हारा चाचा
असग़र अली

यह ख़त पढ़ने के बाद उसकी आँखों में आँसू फानुश कि तरह चमकने लगे। वो अगर शायद अभी भी एक मिडिल क्लास फ़ैमिली का युवक होता तो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर रोता। लेकिन उसने अपने जीवन में इतना सारा ख़ून और जाने की इतनी सारी आवाज़ें सुनी थी कि वो रो नहीं पाया।

उसने उस ख़त को मोड़कर डस्टबिन में डाल दिया और चादर तानकर सो गया।

"परी की आँखें इतनी गहरी थी कि कोई भी वो इंसान जिसे गहराइयों में अपने जीने का मतलब ढूँढ़ना हो, वो उसकी आँखों में डूब जाए। रूफ़ी भी उसकी आँखों में वैसे ही डूबा था। उस दिन उसने अपना पाँचवाँ ख़ून किया था। मरने वाला एक मशहूर उद्यमी था। दवा की फैक्ट्री और ज़क़ात की आड़ में ड्रग्स का धंधा करता था। इस ख़ून के लिए उसे पैसे नहीं मिले थे। यह ख़ून उसने शायद इसलिए किया था ताकि वो ख़ुद को यह तसल्ली दे सके कि उसकी बंदूक की गोली से एक गुनहगार ही मरा है। परी से उसकी आँखें उसी बिल्डिंग की लिफ्ट में लड़ी थी। और शायद पहली बार रूफ़ी का किसी ने अपनी नज़रों से क़त्ल किया था। परी की नज़रों में रुफी, रूफ़ी नहीं था। परी को उसने अपना असली नाम बताया था। रफ़ी खान। मोहम्मद रफ़ी के मीठे नगमों जैसा सुरीला नाम। परी की नज़रों में रफ़ी एक बिजनेसमैन और एक सच्चा आशिक और अच्छा पति था। जिस दिन परी के घर में वो दस लोग आए थे और परी के सीने पर 5 गोलियाँ दाग रहे थे तभी परी को पता चला था कि उसकी जान इसलिए ली जा रही है क्यूँकि वो रफ़ी ख़ान की पत्नी नहीं रूफ़ी की पत्नी है।" धाँय-धाँय करके 5 आवाज़ें परी के सीने में उतर गई थीं।"

उसका यह सपना भी इन गोलियों की आवाज़ से टूटा। परी के जाने के बाद

से हर रात उसे यह सपना डराता है। वो बेड से उठकर फिर पानी पीने के लिए गया। रास्ते में उसे फिर से वो चींटा दिखा। वो चींटा अब आकार में थोड़ा सा ज़्यादा बड़ा हो गया था। रूफ़ी ने उसे फिर से खाने के लिए चीनी का टुकड़ा दिया। वो चींटा रफ़ी की दुनिया और चीनी के रासायनिक सूत्र से अनजान अपने आप में ही उलझा हुआ था।

देश की राजधानी अमरावती से 1000 किलोमीटर दूर देश के दूसरे बड़े शहर रविन्द्रबाड़ी के संभ्रांत इलाके में पड़ने वाला रफ़ी का यह नया घर बिलकुल शांत था। न घर में कोई आता था न ही रफ़ी ज़्यादा देर तक घर से बाहर जाता था। रफ़ी के पास इतना पैसा था कि वो अपनी सारी ज़िंदगी सुकून से बिता सके। कभी-कभी वो आर्या नदी के घाटों पर बैठे भिखारियों को खाना खिला देता था। ऐसा करने से उसे लगता कि शायद उसे थोड़ा सुकून मिला है। पैसों पर अगर सच में ख़ून के धब्बे हों तो शायद उसे लेने से कोई इनकार कर दे लेकिन एक साफ़ सुथरे करेंसी नोट को लेने से कोई इनकार नहीं करता। भले ही इस साफ़ सुथरे नोट को कमाने के लिए चाहे कितना ही ख़ून क्यों न बहा हो। कुछ धब्बे दिखाई नहीं देते और यही धब्बे सबसे ज़्यादा गंदे और परेशान करने वाले होते हैं। रफ़ी का जीवन भी ऐसे कई धब्बों से भरा पड़ा था जिसे वो चैरिटी या ज़क़ात के इस तरीके से धुलना चाहता था।

रविन्द्रबाड़ी की शामें आर्या नदी के क्षितिज में जिस तरह से डूबती थी उसी तरह से वहाँ के दिन भी ज़िंदा होते थे। उस नदी के क्षितिज में कई शामें रातों में तब्दील हुईं और कई रातें दिनों में। रफ़ी धीरे-धीरे उस ख़त को भी भूल सा गया था। परी की यादों से भी वो कटने लगा था, उसके पिता की चीख़ें भी अब उसके लिए नेपथ्य की ध्वनियों में तब्दील हो चुकी थी। इस बीच बस एक चीज़ हुई थी। रफ़ी के घर में रहने वाले चींटे का आकार काफ़ी बड़ा हो गया था। इतना बड़ा कि रफ़ी ने एकबारगी उसे मार डालने की बात सोची हालाँकि फिर उसने उस चींटे को एक दूसरे कमरे में बंद कर दिया और वहाँ चीनी की एक बोरी रख दी। उस चींटे का आकर एक कुत्ते के आकार जितना हो गया था।

एक सुबह रफ़ी ने जब अपने अपार्टमेंट के बेसमेंट में मौजूद अपने मेल बॉक्स

को खोला तो चौंक सा गया। उसमें उसके नाम से कई ख़त थे और सारे ख़त असगर अली के थे। उन सभी खतों में बस एक बूढ़े पिता की गुहार थी। वो अपनी बेटी को बचाना चाहता था। उस मेल बॉक्स में एक तस्वीर भी थी। शायद वो उसकी बेटी की थी। 27 साल की एक मासूम सी लड़की की फ़ोटो। जिसे शायद कुछ दिनों में मौत के घाट उतार दिया जाना था।

वो इन सारे दस्तावेज़ों को लेकर अपने कमरे में चला गया और फिर काफ़ी देर तक शराब पीने लगा। उसने दुनिया में मिलने वाला हर तरह का नशा किया। इतना नशा कि वो शायद काफ़ी दिनों तक या शायद हमेशा के लिए सोता रहे। उस कमरे की दीवारों पर लगे कैलेण्डर की तारीखें बदलने लगी लेकिन उसकी नींद नहीं टूटी। 3 दिन बाद जब उसके घर के दूसरे कमरे से धड़ाम-धड़ाम की आवाज़ सुनाई दी तो वो चौंका। उसने झट से अपने बेड के ड्रावर में रखी पिस्तौल निकाली और उस पर साइलेंसर लगा दिया। जब उसने उस कमरे का दरवाज़ा खोला तो वो चौंक सा गया। कमरे में उसके आकार से 4 गुना ज़्यादा बड़ा एक चींटा था और जो मुँह खोलकर उसे निगलने के लिए तत्पर था।

काफ़ी सालों बाद उसकी बन्दूक से गोलियाँ निकलीं। उसने अपने रिवाल्वर की सारी गोलियाँ उस चींटे के शरीर में धंसा दी। चींटा भले ही आकार में विशाल था लेकिन वो महज एक चींटा ही था। इतनी गोलियाँ खाने के बाद वो शायद अपने अगले जन्म के सफ़र पर निकल गया था। इस घटना के बाद रफ़ी ने सबसे पहले अपनी अलमारी से 3-4 अलग किस्म की बंदूकें निकाली। अपना पुराना सूट निकाला। वह सूट जिसे पहनकर वो रफ़ी से रूफ़ी बन जाता था। उसने अपनी आँखों के नीचे दो काले निशान बनाए और असगर अली के सारे ख़त लेकर अमरावती की तरफ़ रवाना हो गया।

•••

दुःख का कुआँ

उसके घर के बाहर एक दुःख का कुआँ था। उसकी माँ जब खाना पका लेती, उसके पिता जब अख़बार पढ़ लेते और उसकी बुआ जब मोहल्ले के दस घरों में घर की कहानी बताकर घर लौट आती तब तीनों मिलकर दुःख के कुएँ की मुंडेर पर बैठते। उसकी माँ अक्सर कुएँ पर बैठकर देर तक रोती। उसके पिता जल्दबाजी में कुएँ से पानी निकालकर अपनी देह पर उड़ेलते। 10-20 बाल्टी कुएँ से निकालने के बाद, पानी और पसीने से भीग जाने के बाद वो ज़ोर से चिल्लाते। उसकी बुआ मुंडेर पर पड़ी पानी की बूँदों से आँखें गीली करती और अंदर की कुटिल ख़ुशी को रोनी सूरत का नक़ाब पहनाकर अपने अभिनय पर अघाती थी।

वो अपने छत के कमरे से इन तीनों को देखता और दीवार पर नंगे हाथ मुक्के बरसाता। उसके मुक्के दीवार पर इतनी ज़ोर से पड़ते की दीवार काँप जाती। उसके हाथ से जिस तेज़ी से ख़ून बहता उसके मुक्के भी उतनी तेज़ी से दीवार पर पड़ते। जब उसके हाथ ने दर्द के सामने घुटने टेक दिए तब उसने पूरी ताक़त के साथ दीवार पर एक आख़िरी मुक्का मारा और बहुत ज़ोर से चिल्लाया। दीवार पर मुक्के के प्रहार से दीवार बहुत ज़ोर से काँपी और दीवार पे टँगी एक तस्वीर फ़र्श पर गिर गई। उसके चीखने के शोर से उसकी माँ कुएँ की मुंडेर पर और तेज़ रोने लगी। उसके पिता और तेज़ी से देह पर पानी उड़ेलने लगे और उसकी बुआ हँसते हुए रोने की कला में और पारंगत होने लगी।

दीवार से गिरी तस्वीर में जो चेहरा था वो उसकी बहन से बहुत मिलता-जुलता था। अपनी बहन के बारे में वो सब कुछ भूल गया था। उसे बस एक ही बात याद थी कि उसकी बहन तीन दिन पहले घर के बाहर वाले कुएँ में कूद के मर गई थी। उसे कूद के मरते हुए बस उसकी माँ ने देखा था पर उस रात पूरे शहर को एक सपना आया था कि उसकी बहन कुएँ में कूद के मर रही है और उसके साथ एक बच्चा भी है। शहरवालों ने एक टीवी चैनल को बताया कि

उन्होंने सपने में जो बच्चा देखा उसकी कोई शक्ल नहीं थी। वो बच्चा शायद अभी जन्मा नहीं हुआ होगा।

वो तीन रातों से सोया नहीं था। वो चाहता था कि वो जितनी जल्दी हो सके इस दुःख के कुएँ में कोई बड़ा सा पत्थर डाल के कुएँ को भर दे और कुएँ वाली जगह पर बरगद का एक पेड़ लगा दे। पर तीन रातों से कुएँ की मुंडेर पर बैठी अपनी बहन को वो बार-बार कुएँ में डूबता देख रहा था। उसकी बहन जब भी कुएँ में कूदती एक बच्चा थोड़ी देर के लिए रोने लगता। वो तीन रातों से बस इस बात का इंतज़ार कर रहा था कि उसकी बहन बस एक बार उसको देखे। चौथी रात वो जब कुएँ की मुंडेर पर आया तब उसकी बहन ने उसको देखा और दौड़कर बगल के एक घर में घुस गई।

अगली सुबह जब उसकी माँ उसके पिता और उसकी बुआ जब कुएँ की मुंडेर पर आए तो कुएँ में दो लाशें मिली। एक लाश उस लड़के की थी दूसरी लाश भी किसी लड़के की ही थी पर उसका चेहरा पहचान में नहीं आ रहा था। उसके चेहरा एक़दम टूटा सा था जैसे एक ही बार में दुनिया के कई भाइयों ने उसके मुँह पर ज़ोरदार मुक्के मार दिए हों।

लाश देखने के बाद उसकी माँ दुःख के कुएँ पर बैठकर ज़ोर से चिल्लाने लगी। उसके पिता देह पर ज़ोर-ज़ोर से पानी उड़ेलने लगे मानो वो पानी में गल के पानी बन जाना चाहते हों। उसकी बुआ अपनी हँसी को छिपाकर फिर से रोती रही। बगल के घर से एक औरत आई और दूसरी लाश को देखकर कुएँ की मुंडेर पर चिल्लाकर रोने लगी।

उस रात शहर वालों ने सपना देखा कि उसकी बहन के साथ जो बच्चा था वो उसी कुएँ में बड़ा हो चुका है लेकिन अब भी उसकी शक्ल नहीं है। उसकी शक्ल की जगह माँस का एक टुकड़ा है जिसमें कई मुक्कों के निशान हैं।

•••

पत्ता

उसका दावा था कि उसके सीने में दिल नहीं है। जब वो ऐसी बातें कहता था, तो लोगों को लगता था कि वो ऐसे ही दार्शनिक बनने की कोशिश में या फिर ख़ुद को प्यार में हारा हुआ आशिक मानने की कोशिश में कहता है। उसकी इस बात को कोई गंभीरता से नहीं लेता था। मैं भी नहीं लेता था। मुझे लगता था कि ये ऐसे ही शराब पीकर बकवास करता है। कभी-कभी जब वो इस बात को दोहराता था, तो मेरा जी करता था कि खींच के इसे दो थप्पड़ मारूँ और कहूँ कि "ये क्या बकैती करते रहते हो। मतलब एक दो बार बोल दिए सही है लेकिन हर दिन हर वक़्त बस कोई भी सवाल पूछो तो एक ही जवाब कि मेरे पास दिल नहीं है। उम्र हो गई है। बियाह हो गया होता तो 2-3 बच्चे होते। लेकिन फिर भी बकैती की इंतिहा नहीं है। दिल नहीं है, दिल नहीं है। अरे दिल नहीं है तो कैसे ज़िंदा हो।"

उस दिन जब मैंने उसे इस बात पर गालियाँ दी थी तो वो मेरे घर से निकल गया था। उसने बहुत पी रखी थी लेकिन फिर भी मैंने उसे जाने दिया था। वो हर बार ऐसा ही करता था। उसे कभी थोड़ा बोल दो तो वो तुरंत अपनी बाइक की चाभी निकालता था और दरवाज़े को पीटते हुए बाहर चला जाता था। उस दिन भी उसने वैसा किया था। उस दिन अलग बात बस ये थी कि वो उस दिन अपना बैग और हेलमेट दोनों मेरे घर ही भूल आया था। मैंने इस बात पर भी ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। मैं ख़ुद नशे में था।

आदमी को ज़्यादा नशे में नहीं होना चाहिए। मुझे इस बात का पता तब लगा जब उसी रात तक़रीबन 3 बजे, मुझे राहुल ने फ़ोन करके बताया कि अभिराम का यानी उसका एक्सीडेंट हो गया है और वो केजरीवाल हॉस्पिटल में एडमिट है। मैं उस दिन दौड़ा-दौड़ा अस्पताल गया था। मुझे बार-बार बुरे ख़्याल आ रहे थे कि कहीं वो मर तो नहीं गया होगा। अस्पताल पहुँचने के बाद मुझे एक राहत इस ख़बर में मिली कि वो ज़िंदा है। डॉक्टर ने मेरा परिचय लेने के बाद मुझे अपने कमरे में बुलाया और एक ऐसी बात कही जिससे मैंने एक-

बारगी यह तय कर लिया था कि ये डॉक्टर भी कबीर सिंह की तरह नशे में रहता है।

"डॉक्टर ने कहा की ये तुम्हारा जो भी है, भाई है या दोस्त है वो ज़िंदा है। उसकी साँसें चल रही हैं। अनकांशियस है लेकिन ज़िंदा है। पता नहीं इसे कब होश आएगा लेकिन इसकी साँसें चल रही हैं। बस चौंकने वाली बात ये है कि इसके सीने में दिल नहीं है।"

उस समय मेरा जी चाह रहा था कि मैं उस डॉक्टर को गालियाँ दूँ पर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मैंने अस्पताल में कुछ औपचारिकताएँ पूरी की और राहुल के दुबारा वापिस आने के बाद घर लौट आया। मैं काफ़ी देर तक अभिराम के बारे में सोचता रहा और सोचते-सोचते सो गया।

एक महीने होने को आए थे। अभिराम अब शहर के सबसे बड़े और महँगे अस्पताल के आईसीयू में अपने घरवालों से घिरा रहता था लेकिन आँखें नहीं खोलता था। उसकी साँसें चलती थी। वो ज़िंदा था लेकिन उसकी आँखें नहीं खुलती थी। उसकी माँ न जाने कहाँ-कहाँ से मन्नतें माँगने के बाद उसके हाथों से अलग-अलग मज़ारों, मंदिरों की ताबीजें, मालाएँ छुआती, प्रसाद खिलाती पर उसकी आँखें नहीं खुलती। उसके घर के बाक़ी लोग सस्ते न्यूज़ चैनल के रिपोर्टर्स को यह बताते-बताते अपनी खीज उतारते की उन्हें ख़ुद नहीं पता कि उनका लड़का इतने दिनों तक बिना दिल के कैसे ज़िंदा है। वो बताते की उन्हें ख़ुद नहीं पता कि उनके लड़के के सीने से दिल कैसे ग़ायब हो गया।

3-4 महीने बाद जब सभी टीवी चैनल्स और लिस्टिकल वेबसाइट्स पर उसके दिल न होने की ख़बर टीआरपी और ट्रैफिक बटोरने में असमर्थ होने लगी तब एक ऐसी ही किसी मायूस शाम को मैं अपने घर शराब पीकर लौटा। मैं वैसे रोता बहुत कम हूँ लेकिन उस दिन मैं जानबूझ कर अभिराम के लिए रोने लगा। इतने सालों में ऐसा पहली बार हुआ था कि मैं अभिराम के लिए रोया था। मैं ख़ुद को कोस रहा था कि उस दिन शायद मैं अभिराम को हेलमेट दे देता तो शायद उसकी हालत ऐसी नहीं होती।

हेलमेट से मुझे याद आया की मेरी अलमारी में अब भी उसका हेलमेट और बैग पड़ा हुआ है। वैसे मैं किसी और की निजी चीज़ें नहीं छूता लेकिन मैं नशे में था और अभिराम की स्थिति भी सामान्य नहीं थी तो मैंने अपनी अलमारी से उसका बैग निकाला। उसके बैग में ज़्यादा चीज़ें नहीं थी। एक पुरानी टीशर्ट, लैपटॉप, सिगरेट की डिब्बी, कुछ काग़ज़, एक लैपटॉप, माउस और एक मोटी सी डायरी थी। उसके बैग में मौजूद सामानों में से सबसे ज़्यादा दिलचस्प मुझे उसकी डायरी लगी।

ये डायरी उसने 5 साल पहले लिखी थी। उस समय जब उसने कुछ ही महीनों पहले तान्या को प्रपोज किया था। मुझे उसने तान्या के बारे में ढेर सारी बातें बताई थी कि कब उसे तान्या से प्यार हुआ, कब ब्रेकअप हुआ। उसने तान्या के साथ अफेयर की लगभग बताने वाली हर बात मुझे बताई थी लेकिन आज मुझे पहली बार उन बातों को एक अलग रूप में उसकी डायरी में पढ़ने का मौक़ा मिला।

उसने डायरी के शुरुआती पन्नों में वही सब लिखा था जो एक प्यार में डूबा हुआ इंसान लिख सकता है। तान्या ख़ूबसूरत थी। मैं तान्या से एक बार मिला भी था। लेकिन उतनी भी ख़ूबसूरत नहीं थी जितना उसने अपने डायरी में उसकी ख़ूबसूरती के कसीदे पढ़े थे। उसकी डायरी प्यार में पड़े लेखकों जैसी थी। मैं उसकी डायरी पढ़ते हुए कभी मुस्कुरा रहा था और कभी हँस भी रहा था। मुझे नहीं पता था कि वो इतना अच्छा लिखता है। मैंने धीरे उसके डायरी के डेढ़ सौ पन्ने पढ़ डाले थे। मैं आराम से वो रात उसकी डायरी पढ़कर बिता लेता लेकिन मैंने उसकी डायरी में कुछ ऐसा देखा कि मैं चौंक गया।

उसकी डायरी के एक पन्ने पर किसी और कि हैंडराइटिंग में I ♥ U लिखा था। ये शायद तान्या ने लिखा था। इस आई और यू के बीच तान्या ने एक दिल से मिलते जुलते आकार का एक पीपल का पत्ता चिपकाया हुआ था। पीपल का पत्ता सामान्य चीज़ है। वो किसी को ज़्यादा चौंका नहीं सकता। चौंकाने वाली बात बस ये थी कि वो पीपल का पत्ता एक दिल की तरह धड़क रहा था। उस पीपल के पत्ते से धक-धक की आवाज़ आ रही थी।

मैं ये देखकर जितना चौंका था उतना ही डरा हुआ भी था। मेरा सारा नशा उतर चुका था। मैंने उस पत्ते को उस डायरी से उठाकर अपने हाथ पर रखा। वो पत्ता मेरी हथेली पर आने के बाद कुछ देर फड़फड़ाया और फिर शांत हो गया। मुझे बहुत डर लगने लगा और मैंने सोचा कि मुझे राहुल को फ़ोन करना चाहिए। हालाँकि, इससे पहले की मैं राहुल को फ़ोन करता, मेरे मोबाइल स्क्रीन पर राहुल का नाम फ़्लैश करने लगा। मैंने फ़ोन उठाया और फिर मैंने अपने जीवन की सबसे ज़्यादा बुरी ख़बरों में से एक ख़बर सुनी "अरे, यार अभिराम मर गया थोड़ी देर पहले। मैं वहीं हूँ तू भी आ जा।" इतना कहने के बाद शायद उसने फ़ोन काट दिया था या शायद मैंने ही फ़ोन काट दिया था। मैं शायद सोफे से गिरकर बेहोश हो गया था या पता नहीं न जाने मुझे क्या हो गया था।

मैं जब होश में आया तब सुबह हो चुकी थी। मेरे फ़ोन पर राहुल के, अभिराम के घरवालों के 50 से भी ज़्यादा मिस्ड कॉल थे। मैं जब उठा तब मुझे लगा कि शायद कल रात अभिराम तान्या के साथ मेरे कमरे में आया था और उसने मुझे नज़रअंदाज़ करते हुए तान्या के सामने झुककर उसे प्रपोज किया था। मैंने अभिराम को तान्या से यह कहते हुए सुना था "मुझसे शादी करोगी तान्या। मेरे सीने में दिल नहीं है, क्योंकि मेरे सीने में जो दिल था न वो तो तुमने चुरा लिया पर हाँ फ़िक्र मत करो, मैं तुम्हारे दिल के सहारे लंबे समय तक ज़िंदा रहूँगा।"

मुझे नहीं पता कि ये शायद कोई सपना था या अभिराम और तान्या सच में कल रात मेरे कमरे में आए थे। मैंने उसकी डायरी में पढ़ा था कि उसने कैसे और क्या कहकर तान्या को प्रपोज किया था। मैं बहुत कंफ्यूज था कि मैंने क्या देखा, सच में देखा या फिर कोई सपना देखा।

अभिराम को मरे कई साल हो गए हैं। मेरी एक डायरी में अब भी वो पत्ता सहेजकर रखा हुआ है। ये अलग बात है कि वो पत्ता धड़कता नहीं। कुछ दिन पहले मुझे एक मॉल में तान्या मिली थी। पहले से मोटी लग रही थी। अपने हसबैंड और बच्चे के साथ मॉल की एक शॉप में मिली थी। मैंने उसके बच्चे को देखा। मुझे नहीं पता कि ये मैं ज़्यादा अभिभूत होकर कह रहा हूँ या फिर

ज़्यादा सोचते हुए कहा रहा हूँ। मुझे उस बच्चे का चेहरा थोड़ा-थोड़ा अभिराम जैसा लगा था। उस दिन जब मैंने तान्या से उसके बच्चे का नाम पूछा था तो मैंने सोचा था कि तान्या ने अपने बच्चे का नाम अभिराम रखा होगा। यह बस मेरा सोचना था या शायद मेरी कोई तमन्ना थी। जब तान्या ने बताया कि उसके बच्चे का नाम आरव है तब मैं थोड़ा निराश हुआ था और वापिस घर लौट आया था।

आज काफ़ी दिनों बाद जब श्वेता के यह कहने पर की "आप तो घर की सफाई में मेरी मदद ही नहीं करते" मैंने सोचा कि छुट्टी का इस्तेमाल घर की सफाई में ही कर लूँ। वैसे भी दिवाली का वक़्त है। घर में कई पुरानी और रद्दी चीज़ें है जिसे फ़ेंक देना चाहिए या बेच देना चाहिए। मैं यही सोचते हुए स्टोर रूम में गया था जहाँ फिर मुझे अभिराम की वही डायरी मिली। मैंने वैसे अभिराम की डायरी का ज़्यादातर हिस्सा पहले ही पढ़ लिया था लेकिन अचानक से फिर से उसकी डायरी मिलने के बाद मैंने सोचा कि क्यों न फिर से एक बार अभिराम की यादों को ताज़ा कर लिया जाए।

मैंने फिर से उसकी डायरी पढ़ी और फिर से एक पन्ने पर रुक गया। इस पन्ने पर अभिराम ने लिखा था "आज मैं और तान्या छिपते-छिपाते हुए घर के पीछे वाले ख़ाली जगह पर मिले थे। मैं तान्या को ज़्यादा कुछ तो नहीं कह पाया लेकिन जन्मदिन के तोहफे में यह माँग लिया कि शादी के बाद जब हमारे बच्चे होंगे तो उसका नाम मैं ही रखूँगा। लड़का हुआ तो आरव लड़की हुई तो आरुषि।"

इतना पढ़ने के बाद मैं वहीं उस कमरे में कुछ देर बैठा रहा फिर उसी हाल में घर से बाहर निकल गया। जाते-जाते मैंने श्वेता को बताया कि आज देर से लौटूँगा। मुझे बस राहुल को फ़ोन करना था, उसे शायद तान्या के घर का पता मालूम था।

• • •

तितली

दरवाज़े को ज़ोर से पीटते हुए दिवाकर घर से बाहर निकल गया। अन्दर घर के एक कमरे में स्नेहलता बिस्तर पर यूँ ही पड़ी रही। जब दिवाकर गुस्से में घर से बाहर निकल रहा था तब उसने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। उसने दिवाकर को रोकने के लिए उसका नाम लेना चाहा था लेकिन शायद उसके नाम का शब्द उसके गले में किसी बड़े पत्थर की वजह से अटक गया था। वो शांत सी बिस्तर पर ही पड़ी रही। उसकी शान्ति शहर के सुनसान इलाके में खड़े एक मकान की तरह थी जिसके अन्दर बड़ी शांति सी किसी के मुँह पर कपड़ा रखकर गला रेता जा रहा हो।

पहले कमरे के इसी बिस्तर पर दोनों खिड़की से चाँद निहारते दुनिया भर की सारी ज़रूरी, ग़ैर ज़रूरी बातें करते। इसी बिस्तर पर एक बार बातों-बातों में दिवाकर ने उससे पूछा था

"चलो आज अपने बचपन की कोई बात बताओ।"

"बचपन की बात! अपने बचपन की तो मैंने लगभग सारी बात बता दी है कि कैसे एक बार मेले में मैं पापा से बिछड़ गई थी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी थी, कैसे एक बार चिंटू ने मुझे बचपन में ग़लती से गड्ढे में धकेल दिया था तो पापा ने उसे कितना पीटा था।"

"कोई और बात, जो तुमने मुझे न बताई हो।"

"तुम्हें पता है मैं न बचपन में न तितली बनना चाहती थी। एक बार मैं अपने दोनों हाथों में माँ के दुपट्टे को बाँध बना कर उड़ने की कोशिश कर रही थी और गिर गई थी। मुझे तितलियों का उड़ना, उनका रंगो से भरा होना आज भी पसंद है।"

"ख़ैर तुम अपने बचपन की कोई बात बताओ।"
"मेरे बचपन की बात, मैं बचपन में बहुत शैतान था, मैं तितलियों को पकड़ कर शीशे के एक ज़ार में क़ैद कर देता था।"

स्नेहलता इस बिस्तर पर दिवाकर से हुई उस दिन की बात को याद करके पहले थोड़ा सहमने की कोशिश करती है। फिर बिस्तर से उठकर बाजू में रखे मेज़ की ड्राअर से एक फ़ोटो एल्बम निकालती है। उसकी आँखों से एक बूँद एल्बम की उस फ़ोटो पर गिरती है जिस फ़ोटो में वो दोनों मुस्कुराते हुए समंदर के लहरों के बीच खड़े होते हैं। उसकी आँख से गिरा आँसू का कतरा भी उसी समंदर के बीच ग़ायब हो जाता है।

धड़ाम की आवाज़ से दरवाज़ा खोलते हुए दिवाकर घर में घुसता है। "स्नेहा, स्नेहा" दिवाकर की आवाज़ घर के ड्राइंग रूम में गूँजती है। कोई जवाब न पाकर दिवाकर कमरे में घुसता है।

कमरे में बेड की जगह एक बड़ा सा जार था, जिसमें एक बड़ी सी तितली पंख फड़फड़ाती हुई घूम रही थी।

• • •

हत्या के दिन की डायरी एंट्री

डियर डायरी

मैं अगर किसी दिन किसी की हत्या करके आऊँ तो शायद मैं हत्या वाली बात तुमसे साझा न कर पाऊँ। हालाँकि, मेरे ख़्याल से किसी व्यक्ति का किसी दूसरे व्यक्ति की हत्या कर देना जीवन की एक बड़ी घटना में से एक है और इसका दस्तावेज़ीकरण जितना ख़तरनाक है उतना ज़रूरी भी है। लेकिन फिर भी मैं तुम्हें यह नहीं बताऊँगा की मैंने किसी की हत्या कर दी है। किसकी हत्या की है? क्यों की है? कैसे की है? हत्या के लिए मैंने कौन से हथियार का प्रयोग किया? मैं ऐसे किसी भी सवाल के बारे में लिखने से हिचकूँगा। और हिचकना लाज़िमी है। मुझे ऐसी कोई जानकारी कहीं भी लिखित या मौखिक रूप से किसी से भी साझा नहीं करनी चाहिए जो मुझे हत्यारा साबित करे और फाँसी या कारावास के नजदीक कर दे या फिर मुझे ख़ूनी घोषित कर दे। मैं भला ऐसी बातें किसी से भी साझा क्यों करूँ।

वैसे हत्या करना कोई मामूली बात नहीं है। हत्या करना राह चलते किसी दुकान से सिगरेट पी लेने जैसा या फिर घंटों चलते रहने की ऊब को दूर करने के लिए बेवजह किसी पेड़ से पत्ता तोड़ लेने जैसा नहीं है। किसी की हत्या करने के लिए आदमी के पास एक ठोस वजह होनी चाहिए। जब मेरे गाँव की सबसे बूढ़ी औरत 110 वर्ष की ज़िंदगी जीने के बाद मरी थी तब उसने कहा था **"साँप भी किसी को यूँ ही नहीं डसता"**। अदालती भाषा में कहें तो हर हत्या के पीछे एक मोटिव ऑफ़ मर्डर होता है और फ़िलहाल मेरे पास ऐसी कोई वजह नहीं है जिसकी वजह से मैं किसी की हत्या कर दूँ। असल ज़िंदगी में चलने वाली गोली का शोर फिल्मों में चलने वाली गोली के शोर से बहुत ज़्यादा तेज़ होता है। इतना ज़्यादा की एक साथ कई लोग ज़िंदगी भर के लिए बहरे हो जाते हैं।

ख़ैर अगर मैं हत्या करूँ तो उस दिन डायरी में हत्या के बारे में रत्ती भर न लिखकर एक कविता लिख दूँगा। एक सुंदर सी प्रेम कविता। एक ऐसी कविता

जिसमें इतना प्रेम हो कि पढ़ने वाला कभी अंदाज़ा भी न लगा पाए की जिसकी कविता में इतना प्रेम है वो किसी की हत्या भी कर सकता है। वो जिसके हाथों ने इतनी प्रेम से भरी कविता की रचना की हो वो कैसे किसी और के ख़ून से अपने हाथ रंग सकता है। हो सकता है मैं कविता लिखने की जगह उस दिन की घटनाओं को बदलकर लिखूँ।

मैं लिख दूँ कि "आज मैं बहुत ख़ुश था। मैंने नाश्ते में अपना पसंदीदा ऑमलेट टोस्ट खाया। आज मैंने एक बेहतरीन लव स्टोरी मूवी देखी। मूवी देखने के बाद मैंने अपनी गर्लफ्रेंड को घर बुलाया। उसके साथ मैंने वही फ़िल्म दोबारा देखी। उसके लिए भी अपना पसंदीदा नाश्ता बनाया। फ़िल्म देखने के दौरान मैंने उसके बालों की चम्पी भी की। फ़िल्म के एक बहुत ही ज़्यादा अतरंग दृश्य को देखने के बाद फ़िल्म को रोककर गर्लफ्रेंड के साथ सेक्स भी किया। कुल मिलाकर मैं उस दिन के बारे में ये बताऊँगा कि मैं उस दिन बहुत ख़ुश था। एक आदमी अपना पसंदीदा खाना खाने के बाद, अपनी गर्लफ्रेंड के साथ अपनी पसंदीदा रोमांटिक फ़िल्म देखने के बाद, अपनी गर्लफ्रेंड के साथ ऑर्गेजमिक सेक्स करने के बाद भला ख़ून क्यों करेगा।

इतनी ख़ुशी के बाद भला कोई किसी का ख़ून कर सकता है क्या? हालाँकि घटनाओं को इस तरह बदलकर लिखने से कोई तेज़ तर्रार जासूस या पुलिसवाला डायरी पढ़ने के बाद ये मानकर नहीं बैठेगा की मैंने हत्या नहीं की होगी। एक-बारगी वो अगर इन घटनाओं पर विश्वास कर भी ले तब भी यह साबित नहीं होता कि मैंने हत्या नहीं की है। आदमी की ख़ुशी कब दुःख या क्रोध में बदल सकती है पता नहीं चलता। डायरी पढ़ने वाला ये भी तो सोच सकता है कि मेरे द्वारा बनाया गया नाश्ता मेरी गर्लफ्रेंड को पसंद न आया हो और उसने प्यार से बनाए गए इस नाश्ते को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ नाश्ता घोषित करने की बजाय यह कह दिया हो कि "इसमें नमक कम है, और अंडा ठीक से पका नहीं है। तुम्हें पता है न कच्चे अंडे से मुझे उबकाई आती है। हटो मुझे उल्टी आ रही है।" और मुझे उसकी ये बात बुरी लग गई हो और मैं दुःखी या क्रोधित हो गया होऊँ। या फिर ये भी हो सकता है कि मैं उसके उल्टी करने की

बात पर क्रोधित हो गया होऊँ और मैंने उससे बहस की हो कि अंडा इतना कच्चा नहीं था कि किसी को उल्टी आ जाए। या फिर ये भी हो सकता है कि उसकी उल्टी देख के मुझे लगा होगा कि वो प्रेग्नेंट है और मैंने उसे प्यार भी किया हो। लेकिन फिर ये भी हो सकता है कि उसके शादी करने की बात से मैं अंदर ही अंदर परेशान हो गया हूँ। मैंने उसे समझाया हो कि अभी मैं शादी नहीं कर सकता। मेरे पास न नौकरी है न धेले भर का पैसा है। सड़क छाप मैगजीन में मचलती कहानियाँ लिखकर इतना पैसा नहीं जमा कर सकता कि शादी के आठ महीने बाद ही पिता बनना अफ़ॉर्ड कर पाऊँ। इसलिए हो सकता है मैंने अबॉर्शन की बात की हो और तुमने मुझे निष्ठुर हत्यारा जैसी गालियाँ दी हो। मैं गालियाँ सुनता हूँ। मुझे फ़र्क़ नहीं पड़ता है लेकिन शायद उस वक़्त मैं हत्यारा जैसी चटख लाल रंग की गाली बर्दाश्त नहीं कर पाया होऊँ और मैंने उसे धक्का दे दिया हो और वो गिर गई हो। यूँ मेरे धक्का देने से इंसान जल्दी गिरता नहीं है पर शायद वो गिर गई हो क्योंकि उसके पैर गीले थे। गिरने से आदमी का सर नहीं फटता पर उसका फट गया हो और सर से ख़ून बहने लगा हो। ख़ून बहने से आदमी मरता नहीं पर शायद वो मर गई हो।

इंसान को अपने पैर या अपनी आँखें गीली नहीं रखनी चाहिए, मरने की संभावना बढ़ जाती है। इंसान को प्यार भी नहीं करना चाहिए उसमें भी मरने की संभावना बहुत ज़्यादा होती है। प्यार करने से आदमी को ख़ून की कमी हो सकती है लेकिन आदमी प्यार किए जाने के बाद की जो प्यार की कमी होती है उससे मारा जा सकता है। इंसान को बेरोज़गार आदमी से भी प्यार नहीं करना चाहिए। आदमी ख़ाली जेब के कुएँ में गिरकर भी मर सकता है। आदमी हथियार से नहीं मरता। आदमी मारे जाने की संभावनाओं से ज़्यादा मरता है। 'संभावना' से याद आया उसका नाम भी संभावना ही है। ही है?? या ही था।

मैं तीन दिनों से घर से बाहर नहीं निकला क्योंकि मैंने किसी की हत्या नहीं की। हत्या करने वाले लोग घर से बाहर होते हैं। घर के भीतर किसी लाश के पास बैठकर डायरी थोड़े ही लिखा करते हैं। घर में बस एक कप चाय के लिए दूध है। मुझे अब शायद दूध लाने के लिए घर से बाहर निकलना चाहिए।

पर मेरे पास पैसे नहीं है। मेरे गाँव की वो बुढ़िया जिसने मरते समय साँप वाली बात कही थी वो जब ज़िंदा थी तब उसने एक बार कहा था कि आदमी ख़ाली हाथ आता है और ख़ाली हाथ ही चला जाता है। आदमी अपना कमाया धमाया सब कुछ यहीं छोड़ के चला जाता है। मेरी गर्लफ्रेंड तो जा चुकी है पर उसके पर्स में अब भी शायद इतने पैसे ज़रूर होंगे जिससे मैं इतना दूध तो खरीद ही सकता हूँ कि दो कप चाय मिल जाए। मुझे अब जाना चाहिए।

•••

बुरा आदमी

उसे किसी ने आख़िरी बार फ़ोन पर गाली देते हुए कहा कि तुमसे ज़्यादा बुरा आदमी इस दुनिया में कोई नहीं है। वो इस बात को कभी नहीं मानता कि वो एक बुरा आदमी है क्योंकि उसे पता था कि वो दिल का भला आदमी है। हाँ, थोड़ा आवारा लापरवाह ज़रूर है लेकिन दिल का नेक है। कभी जानबूझ कर किसी का ग़लत नहीं किया। हालाँकि, उस दिन बस उस लड़की के इतना कह देने से उसे लगा कि वो शायद वो सचमुच में बुरा आदमी है। आदमी जिससे सबसे ज़्यादा प्यार करता है या जिस पर सबसे ज़्यादा भरोसा करता है उसका कहा कभी-कभी भगवान के कहे जैसा हो जाता है। शायद इसलिए उसे लगने लगा कि वो बुरा आदमी है। उसे उस दिन के बाद से ये लगा कि वो बुरा आदमी है। उस दिन के बाद से उसने कभी मेट्रो में अपनी सीट किसी बच्चे, थके-हारे लोग, औरत, बुज़ुर्गों को नहीं दी। अलबत्ता वो महिलाओं के सीट पर भी बैठ जाने के बाद बिना झगड़े के नहीं उठता। रोज़ाना वो मेट्रो के सामने वाली बुढ़िया को सिगरेट खरीदने के बाद बचे सिक्के दे देता था। उस दिन के बाद से उसने बुढ़िया के उसकी तरफ़ बढ़ती कातर आँखों पर ताला लगाते हुए ये कहना शुरू कर दिया "जा न कुछ कर लिया कर भीख माँगती है।" उसे पता था कि वो 70 साल की बुढ़िया कोई ज़्यादा मेहनत वाला काम नहीं कर सकती फिर भी वो बुरा बनने की कोशिश में ऐसा कह देता।

उसने ठान लिया था कि वो अब बुरा आदमी हो चुका है इसलिए वो दाढ़ी बढ़ाने लगा। उसे लगता था कि बुरे लोगों की दाढ़ी बढ़ी होती है। हालाँकि, उसने जब ये जाना की कई सारे लोग जिनकी दाढ़ियाँ बड़ी हैं और वो अच्छे हैं तो उसने बुरा बनने के कई और तरीक़े सोचे। उसने किसी धर्मग्रंथ में पढ़ा कि किसी की हत्या करना बहुत बड़ा पाप है तो उसने सोचा कि वो ऐसे ही एक दिन 4-5 लोगों की हत्या कर देगा।

वो एक दिन रात को 9 बजे के क़रीब एक शराबख़ाने की तरफ़ बढ़ा और शराब पीने लगा। शराब पीते-पीते उसने 4 लोगों से दोस्ती कर ली। उस दिन वो उन चारों लोगों के साथ अपने घर आया। उसने इतनी देर में उन लोगों को अपनी बातों से और नशे से प्रभावित कर लिया था। उसके घर में ज़्यादा चीज़ें नहीं थी। एक जमीन पर पड़ा गद्दा था जिस पर उसने उन लोगों को बैठने के लिए कहा और दूसरे कमरे में आ गया। वहाँ से उसने फ्रीज में पड़ी शराब ली और उन सब को शराब पिलाई। उसने ख़ुद शराब नहीं पी। शराब के कई राउंड चले। सब पीकर निढाल हो गए। उसने भी शराब पी, पर उसे इतना होश था कि वो ये याद कर लेता की उस यूट्यूब वीडियो में रस्सी से किस तरह लोगों को बाँधते हैं। उसने उस दिन बहुत चालाकी से उन सारे लोगों को बाँध दिया और चाकू की धार तेज़ करते हुए कहा-

"मैं पहले अच्छा आदमी था पर अब बुरा हो चुका हूँ। आज रात मैं तुम सबका गला रेत कर सच में एक बुरा आदमी बन जाना चाहता हूँ। तुम लोगों से कोई दुश्मनी नहीं लेकिन यार बुरा आदमी बनने के लिए कुछ करना होता है न। घबराओ नहीं, अभी नहीं मारूँगा। कल सुबह मारूँगा।"

उन चार लोगों में से एक लड़के ने उससे कहा

"तुम बुरे नहीं हो। बुरा बनना चाहते हो। ख़ैर क्या मैं अपनी प्रेमिका से तुम्हारे सामने आख़िरी बार बात कर सकता हूँ।"

वो अभी तक बुरा आदमी नहीं बना था तो उसने कहा ठीक है कर लो पर मेरे सामने। उस लड़के ने अपनी प्रेमिका को फ़ोन लगाया। उधर से जो आवाज़ आई वो आवाज़ उस रूम में मौजूद पाँचों लोग सुन सकते थे। सबने वो आवाज़ सुनी लेकिन सबसे ज़्यादा असर उस बुरे आदमी पर हुआ। वो बुरा आदमी अपने कमरे में जाकर रोने लगा। और रोते-रोते सो गया।

उस समय उसकी नींद पूरी ही नहीं हुई थी कि उसने देखा कि उसके सामने पुलिस खड़ी है। उन चारों लड़कों के हाथ में बँधी रस्सियाँ खुल गई हैं। वो लड़का जो अपनी प्रेमिका से फ़ोन पर बात कर रहा था अब सचमुच अपनी प्रेमिका की बाहों में था। बुरा आदमी बिना कुछ कहे पुलिस के साथ जाने ही

वाला था कि उस लड़के की प्रेमिका ने उसे थप्पड़ मारते हुए कहा "तुम सच में बुरे आदमी हो बहुत बुरे आदमी। दुनिया के सबसे बुरे आदमी।"

उस दिन उस लड़की के इतना कहने के बाद क्या हुआ किसी को सही से पता नहीं चला। कुछ लोग मानते हैं कि उस दिन उस बुरे आदमी ने वहाँ खड़े सभी लोगों को मार दिया और भाग गया। कुछ कहते हैं कि उसने पुलिस की रिवाल्वर से ख़ुद को गोली मार ली। कुछ कहते हैं कि उस दिन के बाद से वो कुछ सालों तक जेल में रहा और जेल से छूटने के बाद उसने एक मॉल में नौकरी कर ली। उस शहर के लोग कहते थे कि "फीनिक्स मॉल में एक ऐसा डमी बत्तख है जिसको कितना भी परेशान करो कितना भी तंग करो। उसे गिरा दो मार दो कुछ नहीं कहता। उस डमी बत्तख के लिबास में जो आदमी होगा वो कितना अच्छा आदमी होगा।"

• • •

हैप्पी बर्थडे श्रेया

मुझे पता है मेरी आने वाली ज़िंदगी उसकी तलाश में ही बीतने वाली है। किसी का अचानक से ग़ायब हो जाना कितना ग़लत और अजीब हो सकता है ये अभी कोई मुझसे बेहतर नहीं महसूस कर सकता होगा। आज भी कोई ऐसा एक पल नहीं बीतता जब मैं उसकी तलाश में नहीं होता हूँ। मेरे सारे दोस्त, मुझे जानने वाले सभी लोगों को पता है कि मैं उसके बिना कितना अधूरा और अकेला हूँ। मेरी ज़िंदगी में जितने लोग थे अब वो सब धीरे-धीरे ग़ायब हो गए हैं। मैं रोज़ सुबह उठता हूँ खाना बनाता हूँ खाता हूँ दफ़्तर जाता हूँ शाम को घर लौटने से पहले एक बार उसकी तलाश में घंटों बाहर भटकता हूँ और फिर वापिस आ जाता हूँ। मेरा जीवन बस यहीं तक सीमित हो गया है। कल भी मैं पुलिस स्टेशन में घंटों इसलिए बैठा रहा कि शायद उसका कोई पता मिल जाए। कोई सुराग मिल जाए। पुलिसवालों की बातों पर मुझे यक़ीन नहीं होता की श्रेया इतने दिनों से नहीं मिली तो शायद मर गई होगी। मैं इस बात को आसानी से नहीं मान सकता। मुझे पता है वो ज़िंदा होगी। इसी दुनिया में कहीं किसी कमरे में बैठी मेरे बारे में सोच रही होगी। हाँ! मुझे इस बात का पूरा यक़ीन है। वो मेरे बारे में ही सोच रही होगी।

श्रेया से पहली बार जब मिला था पहली दफ़ा ही मुझे इस बात का अंदाज़ा लग गया था कि ये वही लड़की है जो मेरे लिए बनी है। कभी-कभी हम चीज़ों को इतने क़रीब से चूम लेते हैं कि उनके न होने की कल्पना नहीं कर सकते। श्रेया के साथ भी ऐसा ही हुआ। एक दिन उसने कह दिया की अब वो मेरे साथ नहीं रहना चाहती उसे कोई और पसंद है। मैं ये बात सुनकर बहुत टूट गया था। मैंने मनाने की बहुत सी कोशिशें की पर वो नहीं मानी। और फिर एक दिन ग़ायब हो गई। ऐसे ग़ायब जैसे वो इस दुनिया में एग्जिस्ट ही नहीं करती थी। उसके दोस्त, उसके घरवाले सबने उसे ढूँढ़ा पर वो नहीं मिली। अब तो शायद उसके घरवालों ने उसे मरा हुआ ही मान लिया है लेकिन मुझे अब भी इस बात का अंदाज़ा है कि वो ज़िंदा है। और उसे ज़िंदा रहना ही होगा।

आज उसको ग़ायब हुए 5 साल हो गए हैं। उसका जन्मदिन भी है आज। आज मैंने सुबह नाश्ते में उसकी पसंद का नाश्ता बनाया था। लंच में भी मैं अभी उसके लिए चिकन करी बना रहा था। उसे मेरे हाथ से बनी चिकन करी बहुत पसंद है। ज़िंदा रहने के लिए खाना तो ज़रूरी है न? है न ज़रूरी? बिल्कुल ज़रूरी है। मुझे लगता है कि चिकन करी तैयार हो गई है। मुझे शायद अब नीचे जाना चाहिए। मेरे घर के नीचे एक तहखाना है। सुंदर सा तहखाना। जिसमें एक प्यारा सा कमरा है। उस कमरे में सब कुछ है बस उस कमरे से बाहर जाने की आज़ादी नहीं है। आपको पता है पिछले 5 साल से इस कमरे में एक लड़की क़ैद है। नहीं नहीं क़ैद कहना सही नहीं होगा। क्योंकि क़ैद में तो मैं हूँ। श्रेया की क़ैद में। इतने सालों बाद भी मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर पाया हूँ कि प्रेम कभी-कभी उल्टे ढंग से धीरे-धीरे ख़त्म हो जाता है। श्रेया का भी मेरे लिए प्यार अचानक से ख़त्म हो गया जो नहीं होना था। मुझे भी इंसान ही बना रहना था लेकिन ये भी नहीं हो पाया। ख़ैर ये बातें कभी और। मुझे इस कमरे में जाना चाहिए।

"हाय श्रेया। हैप्पी बर्थडे। देखो मैंने आज तुम्हारे लिए क्या बनाया है। चिकन करी।"

आप लोगों को पता है दुनिया की सबसे कुटिल मुस्कान का घर कहाँ है? मेरे होठों पर। और दुनिया की सबसे बड़ी बेबसी और लाचारी कहाँ है पता है? श्रेया के मुरझाये चेहरे पर।

सच्चे और जूनून भरे प्रेम में प्रेमी, प्रेमिकाओं को कभी दूर नहीं जाने देते।

नोट: ये कहानी पूरी तरह से काल्पनिक है। इसका किसी के जीवन से कोई लेना देना नहीं है।

• • •

पिलर

मैं एक शहर के एक अपार्टमेंट की बेसमेंट में बैठा हूँ। ऐसी जगहों पर अमूमन आदमी या तो गाड़ी पार्क करने आता है या शराब गांजा पीने या अपनी प्रेमिका से फुर्सत के कुछ बेबाक पल बिताने।

मैं यहाँ एक बीयर की कैन लेकर आया हूँ। सोसाइटी नयी है इसलिए बेसमेंट में एक भी गाड़ी पार्क नहीं है। ये जगह बहुत शांत और सुनसान है। ऐसी जगह कुछ लोगों के लिए बहुत अच्छी होती है।

मैं जिस इमारत में रहता हूँ उस इमारत को खड़ा रखने के लिए कई पिलर का इस्तेमाल किया गया है। इस इमारत में ख़ास बात ये है कि इस इमारत को खड़ा रखने के लिए मेरी शक्ल के कई लड़के पिलर बने हुए हैं।

ये मुझे पिछले आधे घण्टे से शराब पीते देख रहे हैं पर इन्होंने मुझे अब तक कुछ कहा नहीं है। मुझे अपनी शक्ल के इन लड़कों को पिलर बनते देख कुछ अजीब नहीं लगा। मेरे साथ इस तरह की घटनाएँ होती हैं जब भी मैं 5 से ज़्यादा बीयर पी लेता हूँ।

मैंने अपनी शक्ल वाले एक पिलर से अभी-अभी कहा है

"भाई आप लेंगे"

"नही मैं पीता नही"

"क्यों"

"मैं पिलर हूँ न, मैं पीऊँगा तो लड़खड़ाने लगूँगा"

"मैं भी पीता हूँ, लड़खड़ाता भी हूँ पर अगले दिन सब नॉर्मल, ट्राई करो यार बड़ी अच्छी चीज़ है"

"भाई आपके कंधे पर बस आपकी ज़िंदगी का भार है, और आपकी ज़िंदगी बहुत हल्की है। मेरे ऊपर कई ज़िंदगियों का भार है, मैं नहीं पी सकता"

"अच्छा, आपने किसी से प्यार किया है"

"हाँ! एक लड़की थी कोचिंग क्लास में। वो अब कलेक्टर बन चुकी है। मैं नहीं बन पाया। इसलिए आज पिलर हूँ।

"आपको उसकी याद नहीं आती"

"आती है पर क्या करें जब भी उसकी याद आती है मैं इस बेसमेंट के दो चूहों को खाने के लिए लड़ाई करते देख लेता हूँ फिर मुझे उसकी याद नहीं आती"

"उनका नाम क्या है"

एक लम्बी चुप्पी

"शीतल"

"काफ़ी ठंडा नाम है, मेरी बीयर की तरह। उनकी शादी हो गई"

"हाँ"

"वाह, आपको उनकी याद आती है"

"हाँ"

"बीयर पियेंगे"

"हाँ, अब पीऊँगा"

"ये लीजिए बहुत प्यारी बीयर है"

पिलर अब लड़खड़ा रहा है। कुछ देर में वो गिर जाएगा।

प्रेम चीज़ों को तबाह करने का अच्छा माध्यम है।

• • •

मेमोरी

"हमें पूरी तरह से इरेज किया हुआ मानव दिमाग़ चाहिए। इनके दिमाग़ में 1 केबी का भी डेटा नहीं बचना चाहिए।"

"सर हमने अपनी सारी तकनीक़ लगा ली है। हमने इन मानवों के दिमाग़ को एक बार नहीं दस-दस बार इरेज किया है लेकिन हर बार इनके दिमाग़ की मेमोरी 1 एमबी का स्पेस ऑक्युपाईड शो कर ही रहा है। हमने अपने पहले प्रयोग में पृथ्वी से 1000 सबसे संवेदनहीन पुरुषों को अगवा किया था। हमें लगा था कि इनके दिमाग़ की मेमोरी को हम आसानी से इरेज कर पाएँगे लेकिन इन सारे लोगों का दिमाग़ कई बार इरेज करने के बाद भी 1 एमबी का स्पेस इरेज नहीं हो पा रहा। हमें पता है सर कि हमारा जो प्रोजेक्ट है उसके लिए हमें ऐसे वयस्क इंसान चाहिए जिनके दिमाग़ में कोई स्मृति कोई याद न हो लेकिन हमें लगता है कि शायद हम अपने प्रयोग में नाक़ाम होंगे।

"क्या तुम मुझे इस 1 एमबी डेटा का कंटेंट दिखा सकते हो?"

"सर हमने इनकी मेमोरी के इस हिस्से को डिकोड किया है। हमनें जिस किसी भी मानव के दिमाग़ के हिस्से के डेटा को एन्क्रिप्ट किया तो एक मानव महिला के अलग-अलग एजेज की तस्वीरें दिखाई दी। ये महिलाएँ शायद इन मानवों की माँ है। मेरा मतलब सर, इन्हीं महिलाओं ने इन मानवों को जन्म दिया है"

ये संवाद जहाँ जिस ग्रह की कक्षा में मंडरा रहे विमान में हो रहा था उसी ग्रह से करोड़ों प्रकाश वर्ष दूर धरती के किसी कोने में अस्पताल की एक बेड के समीप अपनी माँ को दवा खिलाकर सुलाने के बाद एक लड़का अपनी डायरी में लिख रहा था "The only thing that you can't erase from our mind is our mother's face।"

•••

चलते-फिरते यातनाघर

मैंने अपने जीवन में सिर्फ़ दो लड़कियों से प्रेम किया। सिर्फ़ दो लड़कियों से। तीसरी बार मुझे कई बार लगा कि मैं प्रेम में पड़ जाऊँगा लेकिन मैं हमेशा पीछे हट जाता। मुझे लगा कि मेरे जीवन में तीसरा प्रेम, मेरी प्रेम कहानियों पर पूर्ण विराम लगाने के लिए होना चाहिए। मैं चाहता था कि अब इस बार जब प्रेम हो तो मैं अपने अन्दर का सारा प्रेम इसी प्रेम में ख़र्च कर दूँ। जैसे मैं ख़ुद को इस तरह निचोड़ दूँ कि मेरे अन्दर का बचा रत्ती भर भी प्रेम इस प्रेम के अलावा कहीं और ज़ाया न हो। और इसलिए शायद मैं काफ़ी लम्बे समय तक यह चाहता रहा कि मैं तीसरी बार प्रेम में पड़ने में कोई ज़ल्दबाजी न करूँ। हो सकता है कि मुझे तीसरी बार तब प्रेम हो जब मेरे पास जीने के लिए बहुत कम समय बचा हो। मैं तब शायद उस कम बचे समय में अपना सारा प्रेम ख़र्च कर दूँगा। अपने कँपकपाते हाथों से किसी के बालों में अड़हुल का फूल लगाते हुए मैं अपने अन्दर के बचे प्रेम और जीवन दोनों को ख़र्च कर देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं अपने तीसरे प्रेम में, मैं प्रेम ख़र्च करते हुए भी ख़ुद साबुत बचा रहूँ। अगर कहीं किसी जगह कोई साँचा होता होगा जिस से इंसान के पूरा या अधूरा होने को मापा जाता हो तो मैं यह चाहूँगा कि मैं उस साँचे में मापे जाने के बाद थोड़ा सा भी अधूरा न रहूँ। आत्मा का एक कतरा भी कहीं से भी कम न पड़े।

तीसरा प्रेम जैसे भविष्य है। शायद हो कहीं। या न भी हो। पहला प्रेम भूत है। बीत चुका है। दूसरा प्रेम वर्तमान है लेकिन भविष्य और भूत दोनों के मिश्रण जैसा। दूसरी बार मुझे जिस लड़की से प्रेम हुआ वैसे कभी किसी को प्रेम नहीं होना चाहिए। दूसरी लड़की जंगल में बिखरे ख़ूबसूरत फूल की तरह थी जो नितांत जंगल में यूँ ही अपने एकांत और अपनी परिधि में अस्थिर और ठहरी सी बिखरी रहती है। जंगल में पेड़ों पर कविताएँ या कहानियाँ लिखने वाले हम जैसे लोगों की नज़र ही ऐसी फूलों पर पड़ती है। जिसे हम काफ़ी हल्के हाथों से उठाते हैं। और महसूस करने की कोशिश करते हैं। मैंने भी शायद उसे बस

महसूस करने के लिए ही ख़ुद को उसके क़रीब किया था। पहले स्पर्श में ही मुझे उसकी सारी बातें पता चल गई थी।

उसके पहले स्पर्श ने मुझे एक पुराने जंगली वाद्ययंत्र की आवाज़ में बताया कि उसकी आत्मा में एक निशान है। एक बहुत पुराना निशान। आत्मा की उम्र जितना पुराना निशान। वो चाहती है कि मैं उस निशान को चूमकर उसे मिटा दूँ। चूमना आत्मा पर पुराने निशानों को मिटाकर एक ख़ूबसूरत जंगली फूल उगाने जैसा होता है। चूमना कभी भी चाय बनाने जैसा नहीं होता या फिर शरीर के रोम-रोम को महुआ पिलाने जैसा नहीं होता। उसके स्पर्श की बात सुनकर मेरे ज़ेहन में मेरे पहले प्रेम के सबसे नर्म स्पर्श का चित्र बन गया। वो चित्र अब भी शायद मेरे आत्मा के किसी हिस्से में खुदा हुआ है। मेरी पहली प्रेमिका ने जाते-जाते मुझे कहा था कि वो इससे ज़्यादा कुछ मुझे नहीं दे सकती। उसने कहा था "आने वाले किसी जन्म में जब तुम एक निष्ठुर व्यक्ति बनोगे तो शायद तुम्हारी आत्मा पर बना ये चित्र तुम्हें फिर से प्रेम की तरफ़ ले जाए।"

अगर हमें ठीक से छूना आता हो तो शायद हमें बोलने की कोई ज़रूरत नहीं। सबसे पहले मेरी आँख से निकले समय के पिघले पारे ने उसे छूना शुरू किया। उसे मेरा छू जाना इतना अच्छा लगा कि उसने अपनी आँखों से अपने किसी अंधे देवता से हर बार एक जंगली फूल बनने की दुआ माँगी। मैं उसे अपनी एक सबसे पुरानी और कच्ची कविता से चूमना चाहता था और चूमा भी। लेकिन मेरे उसे चूमते ही जैसे समय रुक गया। या यूँ कहें तो हम दोनों रुक गए। हम दोनों ने शायद ग़लती से या जानबूझकर एक दूसरे की आत्मा को चूम लिया। आत्मा को चूम लेना बहुत मामूली बात नहीं है। यह दुनिया की सबसे ग़ैरमामूली घटना है। किसी दुर्लभ खगोलीय घटना से भी ज़्यादा दुर्लभ।

मेरी आँखों के सामने देखते-देखते वो कई और लड़कियों में बँटने लगी। मैं भी जैसे अचानक से कई लड़कों में बँट गया। जैसे आत्मा के चूमे जाने से हम परत-दर-परत खुल गए हों। जैसे हमारे अन्दर बसने वाले सभी लोगों को अचानक से एक क़ैद से आज़ाद कर दिया गया हो। मेरे सामने कुछ ही पल में मेरे अलग-अलग रूप कमरे में अचानक से उगने लगे। वो भी कई लड़कियों

में बँट गई। जैसे उसने भी इन्हें काफ़ी सालों से अपने अन्दर तक छिपा कर रखा हो। आत्मा को मिलने वाला एक मीठा स्पर्श आपको शीशा बना सकता है।

मेरे बच्चे वाले रूप को उसके अन्दर से निकली एक माँ लेकर चली गई। मेरे अन्दर के ख़ूनी को उससे टूटकर निकली एक जासूस लड़की ले गई। मेरे अन्दर के महात्मा को उसके अन्दर से निकली एक मोहिनी जैसी लड़की ले गई। मेरे अन्दर के शैतान को उसके अन्दर से निकली एक देवी अपने साथ ले गई। आख़िर में मेरे अन्दर के कवि ने उसके अन्दर की चुड़ैल का हाथ थामना चाहा।

अचानक से हमारे अन्दर बसे सभी लोग अपनी-अपनी पसंद के लोगों के साथ चले गए। कमरे में बस हम दोनों बचे रह गए। वो जंगल भी चला गया। वो पेड़ भी चला गया। बचने को बस एक कमरा बचा था। मैं बचा था वो बची थी। शायद हम दोनों नहीं बचे थे। ख़ाली कमरे में बस एक ख़ाली मर्द और एक ख़ाली औरत थी। कमरे के ख़ाली मर्द ने ख़ाली औरत से पूछा "क्या मैं आपको जानता हूँ।" ख़ाली औरत ने कमरे से निकलते हुए कहा "मैं ख़ुद को नहीं जानती फिर तुम्हें कैसे जानूँगी।" शायद मैं ग़लती से यहाँ आ गई थी। अलविदा।

• • •

नेकी बीटा वर्ज़न

अभी दो मिनट पहले ही उसने शहर के उस महँगे रेस्टोरेंट में एक प्लेट पास्ता 1 मग बीयर का ऑर्डर दिया था कि उसके मोबाइल पर अंग्रेज़ी में एक सन्देश आया।

"नमस्ते व्यास कुमार, नेकी ऐप में आपका स्वागत है। अभी-अभी आपने जो खाना ऑर्डर किया है टैक्स जोड़कर उसकी कुल क़ीमत 2500 रुपये है। क्या आप किसी और सस्ते रेस्टोरेंट में यही खाना 500 में खाकर बाक़ी पैसे रामकिशोर को दे सकते हैं। रामकिशोर के 8 वर्षीय बेटे का पिछले 3 महीने से एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। क्या आप ये पैसे रामकिशोर के मासूम बेटे की जान बचाने के लिए ख़र्च करना चाहेंगे?

यह सन्देश पढ़ने के बाद वो कुछ देर तक शांत रहा फिर हल्की मुस्कराहट के बाद उसने रेस्टोरेंट के कर्मचारी को कुछ कहा और रेस्टोरेंट से बाहर निकल आया। दूसरी तरफ़ किसी रामकिशोर के बैंक खाते में 2000 जमा हो गए। अभी दो दिन पहले ही इसने अपने मोबाइल पर नेकी नाम का यह ऐप डाउनलोड किया था। इस ऐप में दो लोग रजिस्टर होते हैं एक दान देने वाले दूसरे ज़रूरतमंद जिन्हें पैसों कि ज़रूरत होती है। एक बार डाउनलोड करने के बाद लोगों की सारी जानकारी इस ऐप में स्टोर कर ली जाती है। इस ऐप की सबसे अच्छी बात ये है कि ये यूजर की भावनाओं को डिकोड कर लेती है। इसलिए इस ऐप से पैसे वही निकाल सकता है जिसे सच में इसकी ज़रूरत होती है, जो परेशान होता है और उसके पास पैसे का कोई और विकल्प नहीं होता।

इस ऐप में और भी काफ़ी फीचर थे लेकिन मुख्य फीचर यही था। जब भी कोई व्यक्ति फ़िज़ूल ख़र्च करने की कोशिश करता उसे किसी दूसरे आदमी की मदद का विकल्प दिया जाता था। वो उस रेस्टोरेंट से निकलने के बाद सीधे शहर की सबसे प्रसिद्ध झील के पास गया जहाँ अक्सर लोग बेवजह झील के

किनारे हवा खाने या फिर या इस दुनिया से चले जाने की क्रिया से बनी बेफ़िक्री की मीठी बर्फ़ी खाने आते थे।

वो वहाँ उस झील किनारे एक चबूतरे पर बैठकर मोबाइल फ़ोन की गैलरी में कुछ तस्वीरें देखने लगा। वो ऐसी तस्वीरें थी जिसे देखने के बाद आँखों के अन्दर झीलें रिसने लगती हैं। काफ़ी देर तक वहाँ खड़े होने और उस झील में अपनी आँखों से दो बूँद जोड़ने के बाद वो वहाँ से निकलने के लिए जैसे ही मुड़ा उसके मोबाइल पर फिर नेकी ऐप का एक नोटिफिकेशन आया।

"नमस्ते व्यास कुमार, नेकी ऐप में आपका स्वागत है। आपके भावनात्मक स्वास्थ्य का आकलन करने के बाद हमनें यह पाया कि आप प्रेम की गरीबी से ग्रस्त हैं। त्रिज्या पांडे आपकी मदद करना चाहती हैं। क्या आप उनकी मदद स्वीकार करना चाहते हैं।" वह काफ़ी देर तक इस मैसेज को देखकर हैरान सा था लेकिन फिर उसने हाँ पर टैप कर दिया। कुछ ही देर के बाद सामने से एक लड़की आई और उसे गले लगाते हुए कहा "Everything Will Be Alright".

•••

चमत्कार

16 दिसंबर 2012

आज इस जगह पर इतनी भीड़ होती है सौ साल पहले तक ऐसा नहीं होता था। आज 16 दिसंबर की रात यहाँ काफ़ी बड़ा मेला लगा है। हर साल यहाँ मेला लगता है इस दिन। कहते हैं कि घोर नास्तिक लोग भी यहाँ आकर चमत्कारों पर यक़ीन करने लगते है। यहाँ के इस तालाब में हर साल 16 दिसंबर को रात 10:12 बजे तालाब में आग लगती है। क़रीब 2 मिनट तक आग जलती है और बुझ जाती है। बस इसी 2 मिनट के लिए साल के इस ख़ास दिन को ये आम सी जगह ख़ास हो जाती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस दिन तालाब की देवी का आग के देवता से विवाह होता है। इसलिए यहाँ के स्थानीय लोग इस दिन तालाब की पूजा भी करते हैं।

कई साल पहले जब यह जंगल का हिस्सा हुआ करता था तब सबसे पहले जंगल में भटके एक मुसाफ़िर ने इस घटना को होते हुए देखा था। उसके बाद से धीरे-धीरे यह जगह ख़ास होने लगी। गाँव वालों का यह भी मानना है कि इस रात जो भी गर्भवती महिलाएँ इस तालाब का पानी पीती हैं वो पुरुषों को ही जन्म देती हैं। इसलिए इस भीड़ में ज़्यादातर तादाद महिलाओं की होती है।

अभी 10 बजने में कुछ समय बाक़ी है। थोड़ी देर बाद मैं भी वहाँ रहूँगा। आज पहली बार मुझे रिपोर्टिंग करने का मौक़ा मिला है। मुझे भी एक बेहतरीन रिपोर्ट बना कर देनी है।

16 दिसंबर 1912

आबादी से बहुत दूर जंगल के बीचों-बीच बने इस घर में आज काफ़ी दिनों बाद ऐसा हुआ है कि घर में 4 लोगों के अलावा एक पाँचवा शख़्स भी मौजूद है। एक माता-पिता, बेटा-बहू के अलावा आज इस घर में पास के गाँव से दाई माँ भी आई हैं। पिछले सात सालों में पाँचवी बार वो इस घर में आई हैं।

उन्हें इस बात का डर भी था कि कहीं इस बार भी वो न हो जो अब तक पिछले चार बार हो चुका है। भगवान भी न जाने कैसे खेल रचता है। एक बार शायद उसके गर्भ से एक पुरुष पैदा हो जाता तो शायद कुछ बच्चियाँ नहीं मरती। वो भगवान से मना रही थी कि इस बार राधा के गर्भ से लड़का पैदा हो ताकि बगल के तालाब में घंटे भर का तज़ुर्बा लिए किसी की लाश तालाब से इंसानियत को गालियाँ न दे।

इस बार भी वही हुआ। कमरे से निकलने के बाद दाई माँ ने राधा की सास को इशारों में बताया। आदतन उसकी सास कमरे में घुसी और उस नवजात बच्ची को उठाने लगी। लेकिन इस बार उसे अपने हाथ पर मज़बूत पकड़ का एहसास हुआ। वो शायद उसकी बहू का हाथ नहीं किसी माँ का हाथ था। उसकी सास बहुत ज़ोर से चिल्लाई और घर के बाक़ी लोग भी आ गए। जंगल के बीच बने इस घर में चीखने-चिल्लाने की आवाज़ आई। पास के तालाब ने पहली बार राधा को यह कहते हुए सुना

"इस बार नहीं, मैं गाँव जाकर सरपंच जी को सब कुछ बता दूँगी, वो न सुने तो शहर जाकर कोतवाल से शिक़ायत करूँगी।"

उसके इतना कहने के बाद घर में कुछ देर शांति पसरी रही। तालाब को लगा कि आज रात उसकी छाती पर किसी आत्मा का भार नहीं बढ़ेगा। अगले ही पल तालाब ने एक और चीख सुनी। ऐसी चीख तालाब ने इससे पहले इस घर में नहीं सुनी थी। चीख के साथ घर का दरवाज़ा खुला। ठण्ड से काँप जाने वाली इस रात में राधा आग के कंबल में लिपटी थी। वो तालाब के पास आ रही थी। तालाब यह देखकर बहुत घबरा गया था। तालाब को डर था कि कहीं इस आग से उसका पानी न सूख जाए। पानी सूखने के बाद तालाब की तलहटी में सो रहे वो नवजात न जाग जाएँ। तालाब भी अपने गर्भ में उन चार बच्चियों को कब से पाल रही था। उसे डर था कि वो बच्चे जग न जाएँ।

छपाक की आवाज़ के साथ राधा तालाब में कूदी। तक़रीबन दो मिनट तक राधा के शरीर में हरक़त थी लेकिन दो मिनट के बाद राधा का शरीर उसके

पति की हिम्मत की तरह शांत हो गया। शांत। बिलकुल शांत। राधा डूबकर मरी ? राधा जलकर मरी ?

तालाब को कुछ दिनों बाद पता चला राधा चेचक से मरी।

• • •

पेंसिल

उस दिन ऑफ़िस में पहला दिन था। महीनों बेरोज़गार रहने के बाद मुझे एक बुक पब्लिशिंग कंपनी में एडिटर की जॉब मिली थी मैं बहुत ख़ुश था। मेरी तनख्वाह काफ़ी अच्छी थी। और जिस शहर में मेरी नौकरी लगी थी वो शहर इतना छोटा और सस्ता था कि महीने में, मैं कितना भी ख़र्च करूँ मेरे पैसे बचने वाले ही थे। सब कुछ अच्छा था बस ये दफ़्तर बहुत पुराना था। अब भी यहाँ किताबों को एडिट करने के लिए कंप्यूटर नहीं थे। पेंसिल से ही किताबों की प्रूफ़रीडिंग और एडिटिंग होती थी। ऑफ़िस में जितने लोग थे वो सब बूढ़े थे। मेरे सिवा किसी की भी उम्र 60 से कम नहीं थी।

ऑफ़िस के पहले दिन जहाँ बाक़ी दफ़्तरों में इंट्रोडक्शन जैसी औपचारिकता होती है यहाँ वैसा कुछ नहीं था। पहले दिन मेरे टेबल पर एक बूढ़े आदमी ने 4 किताबें, कुछ पेंसिल एक इरेज़र और एक शार्पनर रखते हुए कहा

"कोई भी दिक्कत हो आप शर्मा सर से कहेंगे। वो आपके बॉस है।"

"जी ठीक है" मैंने अनमने ढंग से जवाब दिया और किताबें देखने लगा।

मैं जिस कमरे में बैठा था वहाँ मेरे बॉस के अलावा 3 और लोग थे जो देर से आए थे। उनके आने बाद शर्मा सर ने मुझे उन सब से परिचय करवाया। रेखा झा। जनक प्रसाद और विपिन शर्मा।

रेखा झा और जनक प्रसाद में कोई चौंकाने वाली बात नहीं थी। लेकिन विपिन शर्मा का नाम और उसकी शक्ल देखकर मैं चौंक गया। उसका चेहरा हू-ब-हू मेरे एक बचपन के दोस्त के साथ मिलता था। अगर मेरा वो बचपन का दोस्त 60 साल का होता तो ठीक वैसा ही दिखता। साँवली सी सूरत। सफ़ेद स्लेटी बाल। थोड़ा झुका हुआ शरीर। चेहरे पर झुर्रियों की महीन रेखाएँ। मुझे उससे मिलकर थोड़ा अजीब लगा क्योंकि उसने बहुत ही अनमने ढंग से हाथ मिलाया और चेहरे पर बिना किसी तरह का भाव लाए अपनी कुर्सी पर बैठ

गया। उस दिन दफ़्तर में न मैंने किसी से बात की न ही किसी और ने मुझसे। मैं उस दिन साढ़े 5 बजते ही ऑफ़िस से निकल गया।

मेरे दफ़्तर से घर तक का रास्ता तक़रीबन एक घंटे का है। मैं उस दिन रास्ते भर अपने बचपन के दोस्त विपिन के बारे में सोचता रहता। मैं जितना उसके बारे में न सोचने की कोशिश करता दिमाग़ में उससे जुड़े दृश्य उतने ही तेज़ी से फ़िल्म की तरह चलने लगते। एक ऐसी फ़िल्म के दृश्य जिसमें मैं एक विलेन था।

वो दृश्य जो मेरी आँखों के सामने तैर रहा था उससे मैंने हमेशा भागने की कोशिश की है। उस दृश्य को अपनी आँखों के कैनवस से हटाने के लिए मैंने न जाने कितने शहर बदले थे, न जाने कितने यत्न किए थे लेकिन हर बार जब भी मैं शांत होता वो दृश्य मेरे आँखों से इस तरह चिपक जाते जैसे बरसों बाद मिलने पर दो प्रेमी एक-दूसरे से लिपट जाते हैं। उस दृश्य में तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले दो ऐसे लड़के थे जिन्हें क्लास रूम के बाहर वाले कॉरिडोर के फ़र्श पर स्लाइड करना पसंद था। वो उन दोनों का फेवरेट गेम था। कॉरिडोर के एक कोने से दूसरे कोने तक स्लाइड मारना। जो ज़्यादा दूर स्लाइड करता वो जीत जाता था। मैं और विपिन रोज़ाना ऐसा करते थे। हर बार मैं ही हारा करता था। मैं बचपन से ही हर काम में औसत था। पढाई में, खेल में, कला में। मैं इतना बड़ा फैल्योर आदमी था कि चापाकल से पानी निकालने वाली प्रतियोगिता में भी हार जाता था। यहाँ तक लूडो के भी खेल में मैं हमेशा हारता था। मेरे अन्दर बचपन से ही एक लूजर ने जन्म ले लिया था, जिसे केवल हारना आता था।

शुरुआत के दिनों में मैं हारने को एक सीख समझ कर, आगे जीतने की प्रेरणा समझकर मान लेता था लेकिन बाद के दिनों में मुझे हारना बेहद अपमानित कर देता। धीरे-धीरे मैं उस छोटी उम्र में ही दिल से बुरा आदमी बनने लगा था। मैंने बचपन से ही हर उस आदमी को जान से मार देने की ठान ली थी जो मुझसे आगे था, जो मुझे हरा देता था। हालाँकि, एक तीसरी क्लास के बच्चे के लिए किसी को जान से मार देना ज़्यादा आसान नहीं था लेकिन किसी को घायल कर देना बहुत हद तक मुमकिन था।

मेरे ज़िंदगी के सबसे ख़तरनाक दृश्य में उस दिन उन दो लड़कों की स्लाइडिंग प्रतियोगिता के ख़त्म हो जाने के बाद एक बहुत ही लोमहर्षक घटना घटी थी। उस दिन उन दो लड़कों में से एक लड़के ने अपने साथ के दूसरे लड़के के गर्दन में एक ताज़ा–ताज़ा शार्प की गई पेन्सिल घुसेड़ दी थी। दूसरे लड़के की गर्दन से ख़ून बह रहा था और हमला करने वाले लड़के की आँखों में ख़तरनाक हँसी चमक रही थी। बाद में हमलावर लड़के को पुलिस के हवाले भी कर दिया गया था लेकिन एक पुलिस बाप ने अपने बेटे को बाल सुधार गृह जाने से बचा लिया था। उस दिन की अच्छी बात ये थी कि हमला करने वाला लड़का जेल नहीं गया, घायल होने वाला मरा नही। उस दिन की घटना के बाद बस इतना हुआ कि वो दोनों लड़के दुबारा उस स्कूल नहीं गए। उस शहर की जमीन से वो दोनों लड़के अचानक से ऐसे ग़ायब हो गए जैसे वो उस शहर में कभी रहे ही नहीं थे।

आज विपिन शर्मा से मिलने के बाद अचानक से वो सारे दृश्य मेरी आँखों में ज़िंदा हो गए थे। मुझे बार–बार लग रहा था कि ये बूढ़ा मेरे बचपन का वही दोस्त है। हालाँकि ऐसा होना बेहद नामुमक़िन था। मैं अगले दिन जब ऑफ़िस गया तब सब कुछ वैसा ही था जैसा कल था। मैं अपने डेस्क पर बैठा एक किताब एडिट कर रहा था। बाक़ी लोगों की तरह विपिन भी अपने डेस्क पर बैठ कर अपना काम कर रहा था। वो दिन बेहद सामान्य सा था लेकिन न जाने मुझे ऐसा लग रहा था कि आज कुछ बेहद अजीब होने वाला है।

उस दिन जब मैं लंच के बाद अपने डेस्क पर बैठने जा रहा था तभी विपिन शर्मा ने मुझे स्टेशनरी रूम में साथ चलने का इशारा किया। मुझे उस दिन लगा शायद उसे मुझसे कोई काम हो इसलिए मैं उसके कहने पर उसके साथ स्टोर रूम चला गया।

“मुझे एक पेन्सिल चाहिए थी। यहाँ पर पड़ी सभी पेंसिलें ख़त्म हो चुकी हैं” वो कमरे की एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला, “आप मुझे मेरे डेस्क पे ही बोल देते मैं वहीं आपको पेन्सिल दे देता। मेरे पास कई पेंसिलें हैं।” मैंने अपनी खीझ को दबाते हुए बड़े ही विनम्र शब्दों में कहा।

"तुम्हें पता है इस दुनिया की सारी पेंसिलें खो चुकी हैं।"

"आप ये कह रहे हैं। अगर सब पेंसिलें ख़त्म ही हो गई हैं तो मैं आपको कहाँ से पेन्सिल दे दूँ। आप मतलब ठीक तो है न। 60 वर्ष में आदमी सठियाना शुरू करता है, एकाएक पागल नहीं हो जाता।" मैंने थोड़ी कड़ी आवाज़ में उससे कहा और वहाँ से जाने के लिए कुर्सी से उठा।

वो कुछ सेकंड बैठा रहा और फिर अचानक से मेरा हाथ अपनी गर्दन की तरफ़ ले जाते हुए बोला "यहाँ है एक पेन्सिल। कई सालों से पड़ी है। बहुत दर्द देती है ये पेन्सिल। अगर तुम चाहो तो मुझे इस दर्द से आज़ाद कर सकते हो। मैं उस दिन उस पेंसिल के जख़्म की वजह से असमय ही बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे हाथ पैर काँपते हैं। मेरी याददाश्त ठीक नहीं रहती। मैं हमेशा एक गहरे दर्द में जीता हूँ। निकाल दो ये पेन्सिल।"

उस दिन उसकी वो बात सुनकर मैं कुछ देर के लिए पत्थर का हो गया। अचानक से मेरे आस-पास की चीज़ें ठंडी और काली होती नज़र आने लगी। मुझे अचानक से एक बच्चे की रोने की तेज़ आवाज़ आने लगी। उस असहनीय स्थिति में अचानक से मैंने उसके गर्दन से वो पेन्सिल निकाल दी। सब कुछ अचानक से पहले की तरह हो गया। आदमी के काँधे से अगर कोई दोष हट जाए तो शरीर बहुत हल्का महसूस करता है। उस दिन मुझे सालों बाद हल्का-हल्का महसूस हुआ। मैं इतना हल्का महसूस कर रहा था कि मेरी आँखें एक नम हो चुकी थी।

मैं उस दिन स्टेशनरी रूम से सीधा वॉशरूम की तरफ़ गया। मैंने पानी की कुछ छीटें अपनी आँखों पर मारी और आईने को देखकर पहले मुस्कुराया, हँसा और चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा।

उस दिन मेरी उम्र अचानक से 60 साल हो गई और मैंने अपनी गर्दन के अन्दर एक पेन्सिल को धँसा पाया।

• • •

बर्बाद ग्रह का देवता

जब दुनिया के सबसे ज़्यादा पूजे जाने वाले देवताओं को पता चला कि इस देवता को सुदूर के किसी ग्रह में पूजे जाने वाली देवी से इतना प्रगाढ़ प्रेम है कि वो उस देवी को इस देवयोनि के किसी भी कालखंड में नहीं भूल सकता तब देवताओं ने एक नए ग्रह के निर्माण करने की योजना बनाई। देवताओं ने तय किया कि इस इस देवता को उस ग्रह का देवता बना दिया जाए। ऐसा करने से शायद ये देवी स्वर्णवर्णा को भूल जाए। इस देवता के पास देवी स्वर्णवर्णा को भूलने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था। देवी स्वर्णवर्णा का विवाह एक शक्तिशाली और समृद्ध देवता से हो चुका था। स्वर्णलता भी इस देवता को भूल चुकी थी।

देवताओं के उस दुनिया के देवताओं का मुख्य कार्य ब्रह्मांड के सभी ग्रहों में चल रहे जीवन का संचालन करना था। सभी देवता किसी न किसी ग्रह के देव थे। जो देवता किसी ग्रह में देव नहीं होते थे वे इसी लोक में अन्य काम देखते थे। स्वर्णवर्णा के प्रेम में विक्षिप्त होने के क़गार पर पहुँचने वाले इस देवता देवानंद के लिए एक ग्रह का निर्माण हुआ। एक बहुत बड़े विस्फ़ोट के बाद जब ब्रह्मांड में एक नए ग्रह का निर्माण हुआ तब धीरे-धीरे उस ग्रह पर जीवन की उत्पत्ति हुई। मानवों का आगमन हुआ। सभ्यताओं का जन्म हुआ। युद्ध हुए। संहार हुए। मानव सभ्य होने लगे। देश बने राष्ट्र बने। आधुनिकता ने इस दुनिया में क़दम रखा। लाखों वर्ष का यह समय देवताओं के लिए क्षण भर का था। देवानंद इस नए ग्रह के देवता के रूप में अपने कार्यों का निर्वहन भली भाँति निभा रहा था लेकिन फिर एक ऐसी घटना हुई कि इस देवता का जीवन पूरी तरह से बदल गया।

इस देवता को इस ग्रह की एक कन्या से प्रेम हो गया। देवानंद का इस कन्या से प्रेम करने का मुख्य कारण था इस कन्या का हू-ब-हू स्वर्णवर्णा जैसा होना। देवलोक का कोई भी देवता देवयोनि में किसी भी ग्रह की कन्या से प्रेम

नहीं कर सकता था न ही देवताओं के वेश में किसी ग्रह पर जा सकता। किसी ग्रह के किसी भी मानव से किसी भी तरह बात करने के लिए देवता को मनुष्य के रूप में ही जाना होता है। और अगर बार कोई देवता किसी ग्रह की धरती पर क़दम रखे तो उसकी देवताओं वाली सारी शक्ति छीन ली जाती है। प्रेम चाहे देवताओं का हो या मनुष्यों का प्रेम त्याग का पर्याय बन जाता है। इस देवता ने अपना मुकुट देवों के मुखिया को सौंपते हुए कहा "आज से मैं अपने देवत्व का त्याग करता हूँ।"

उस लड़की ने पहली बार जब उस देवता को मनुष्य के रूप में देखा तब वो पहली दृष्टि में ही उस पर मोहित हो गई। मनुष्य के रूप में देवानंद ने उस लड़की से प्रणय के बंधन में जुड़ने की कोई ज़ल्दबाजी नहीं की। पूरे 1 साल तक उस लड़की के बगल वाले घर में रहने के बाद उसने पूनम की रात उस लड़की को अपने हृदय की बात बता दी। परिधि ने पहले तो देवानंद को न कहा लेकिन कुछ देर बाद उसे अपनी बाहों में भरते हुए हाँ कह दिया। जब वो दोनों एक दूसरे की बाहों में थे तब ऊपर से देवता इन दोनों पर पुष्प अर्पण कर रहे थे। देवानंद को परिधि के रूप में स्वर्णलता मिल गई थी और परिधि को एक प्रेमी। उस ग्रह पर रहते हुए देवानंद को यह एहसास हुआ कि मनुष्य होना कितना कठिन है। कभी-कभी जब वो अपनी बीमार माँ को देखता तब वो सोचता की अगर वो देवता होता तो वो एक चुटकी में अपनी माँ की बीमारी ठीक कर देता। लेकिन वो देवता नहीं था। वो एक सामान्य आदमी था। उसे मनुष्य योनि में आने के बाद यह एहसास हुआ कि मनुष्य जातियों में बंटे हैं और वो जिस जाति का था उस जाति के लोगों का विवाह परिधि की जाति वाले लोगों से होना काफ़ी कठिन था।

जब उन दोनों के प्रेम का पता आस-पास के लोगों को चला तब चीज़ें ख़राब होने लगी। परिधि अपने घर की परिधि में सीमित हो गई और देवानंद इस बिछोह में शराब का आनंद लेने लगा। चीज़ें ऐसे ही चलती लेकिन देवानंद दूसरी बार स्वर्णलता को नहीं खोना चाहता था इसलिए उसने उस शहर के कॉलेज में दाखिला लिया जहाँ परिधि पढ़ाई के लिए जाने वाली थी। इन दोनों

का प्यार इस नए शहर में परवान पर आ गया। चीज़ें सामान्य हो गई थी। इन दोनों को ऐसा लगने लगा कि वो अब दो देह एक प्राण हैं।

उन दोनों के जीवन में बदलाव की शुरुआत तब हुई जब एक दिन देवानंद उस शहर को छोड़कर वापिस अपने शहर चला गया। मनुष्य योनि में उसकी जो माँ थी वो काफ़ी ज़्यादा बीमार थी। उन दोनों के बीच यह तय हुआ कि वो कुछ साल बाद लौटेगा लेकिन 1 साल हो गए वो वापिस नहीं आया। उन दोनों के बीच शुरुआत में तो फ़ोन और व्हाट्सएप्प के जरिए बातें होती रही लेकिन यहाँ इस शहर में आने के बाद देवानंद शराब का ऐसा शौकीन हो गया कि उसे किसी की ख़बर नहीं रहती। कभी-कभी 5 दिन हो जाते और देवानंद शराब के नशे में धुत्त रहता। वो सुबह जब होश में आता तब अपनी माँ के पास जाकर अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाकर कुछ मंत्र जैसा पढ़ने की कोशिश करता। उसे लगता की शायद एक बार उसे अपनी शक्ति मिल जाती तो सब कुछ ठीक हो जाता। उसे अब मनुष्य होना बेहद दमघोंटू लगने लगा था। उसे जब लगता कि अब वो देवता नहीं रहा तब वो अपने देवत्व के खो जाने के दुःख में घण्टों शराब पीता।

एक रोज़ ऐसे ही वो जब शराब के नशे में धुत्त होकर घर जा रहा तब एक सड़क हादसे का शिकार हो गया। वो उस दिन मर जाता लेकिन उसके ऊपर काफ़ी लोगों की दुआएँ कवच बन कर खड़ी थी। वो बच गया लेकिन असहाय हो गया। उसने परिधि को 10 दिन बाद ये बात बताई कि उसके साथ हादसा हो गया है। परिधि बहुत घबराई लेकिन वो उसके पास नहीं आई। उसने कहा "अपना ध्यान रखो" सब ठीक हो जाएगा। एक दिन बातों-बातों में देवानंद ने परिधि को बताया कि उसके साथ ये हादसा शराब की वजह से हुआ है। परिधि को ये बात बहुत बुरी लगी। और बस उसी दिन से उन दोनों में बातें कम होने लगी। देवानंद घण्टों परिधि का इंतज़ार करता पर परिधि के मैसेज नहीं आते। देवानंद चिढ़ने लगा। उसे फिर से अपने इंसान होने पर गुस्सा आने लगा और एक दिन जब काफ़ी इंतज़ार के बाद परिधि का कोई संदेश नहीं आया तब उसने एक मेल में यह बात कही की वो एक देवता था पर उसके प्रेम में वो मनुष्य

बना। उसने इतना बड़ा त्याग सिर्फ़ उसके लिए किया लेकिन वो उसे इस हालत में छोड़कर अपनी दुनिया में ही व्यस्त है।

उस मेल के जवाब में जब देवानंद ने परिधि को यह लिखते हुए पढ़ा की अब वो उसके साथ नहीं रहना चाहती तब अचानक से उसके पैरों तले जमीन ख़िसक गई वो बदहवास हो गया। वो अपने फटे सर और टूटे दिल के साथ फिर से शराबख़ाने की तरफ़ बढ़ गया। वो उस दिन बहुत रोया। वो जब देवता था तब उसकी आँख से आँसू नहीं गिरे थे पर उस दिन वो बहुत देर तक रोया। उसने परिधि से रोते हुए कहा कि वो उसे छोड़कर न जाए। वो उस हालत में एक ट्रेन पकड़कर 700 मील दूर परिधि के शहर गया।

वो वहाँ उस हर जगह गया जहाँ उसे लगा कि परिधि उसे मिल जाएगी पर परिधि उसे नहीं मिली। उसने बहुत सारे कॉल्स, मैसेज, मेल्स किए पर उसने एक दिन पाया की परिधि ने उसे हर जगह से ब्लॉक कर दिया है। देवानंद को उस दिन एहसास हुआ कि मनुष्य होना नर्क से कम नहीं। सर पे लंबे बाल और चेहरे की खिचड़ी दाढ़ी में वो एक बर्बाद ग्रह के शराबी देवता की तरह लगने लगा था।

उसे परिधि के बिना जीवन इतना ख़ाली लगने लगा कि उसने वापिस देवलोक जाने की सोची। उसे लगने लगा कि देवता होना ही बेहतर था। एक बार उस ग्रह के किसी मंदिर पर जाकर उसने देवलोक के सबसे बड़े देवता से बात करने की कोशिश की। सबसे बड़े देवता ने ज़ल्द ही उसकी बात सुनी और कहा की वो सिर्फ़ एक ही शर्त पर दुबारा देवता बन सकता है। उसके दुबारा देवता बनते ही यह दुनिया तबाह होने लगेगी। इस दुनिया के सभी जीव-जंतु मर जाएँगे। और ये ग्रह बंजर हो जाएगा। जाते-जाते सबसे बड़े देवता ने देवानंद को सोने के कलश में सोमरस दिया और कहा की जिस दिन तुम ये सोमरस पियोगे तुम दुबारा देवता बन जाओगे। देवानंद ने सबसे बड़े देवता की बात सुनी और घर लौट आया।

देवानंद ने उस दिन एक नया नम्बर लिया और उस फ़ोन से परिधि से बात की। परिधि, देवानंद की आवाज़ सुनते ही आग आग-बबूला हो गई और एक

साँस में यह बात कह दी कि वो मरना पसंद करेगी लेकिन दुबारा उसके साथ रहना उसे गवारा नहीं होगा। देवानंद के लिए यह बात ज़हर से कम नहीं थी। उसने इतना सुनने के बाद फ़ोन रख दिया और सीधे एक शराबख़ाने की तरफ़ चला गया।

देवानंद जब 2 बोतल शराब ख़त्म कर चुका था तभी उसकी मेज़ पर एक आदमी आया।

"क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ"।

"हाँ, बेशक बैठ सकते हैं"। देवनांद ने विनम्रता से कहा।

सामने वाला आदमी भी नशे में धुत्त था। उसने नशे में लड़खड़ाती आवाज़ में कहा "तुम्हें पता है मैं कौन हूँ। मैं एक देवता हुआ करता था। बहुत महान और शक्तिशाली देवता। मेरी शादी एक देवी से हुई। बहुत सुंदर थी वो देवी। स्वर्णलता नाम था उसका। लेकिन वो मुझसे विवाह होने के बाद भी मुझसे प्रेम नहीं करती। वो किसी और देवता से प्रेम करती थी। सहस्त्रों वर्षों तक मैंने प्रतीक्षा की शायद उसके मन में मेरे प्रति प्रेम जगे लेकिन जब ऐसा नहीं हुआ तब मैंने अपने देवत्व को ठुकरा दिया और मनुष्य के रूप में इस ग्रह आ गया।

देवानंद ने इस आदमी की पूरी बात सुनी और बहुत देर तक चुप रहा।

कुछ देर बाद उसने जेब से वो सोने का कलश निकाला और सोमरस पीने लगा। बहुत तेज़ विस्फोट हुआ। वो इमारत हिलने लगी। लोग चीखने लगे। सब कुछ तबाह होने लगा। इसी तबाही के बीच देवानंद ने सामने बैठे शख़्स को कहा "बर्बाद ग्रहों के देवताओं को प्रेम नहीं करना चाहिए।"

• • •

44 साल

बहुत छोटी सी कहानी है। शायद हर बार दुनिया भर की यूनिवर्सल माँ द्वारा आटे के डिब्बे में 5 रुपये के सिक्के जैसी छोटी रक़म को बचाकर रखने जैसी। या शायद एक बहुत बड़ी कहानी है। जैसे मैंने इस छोटी सी कहानी के शुरुआत में ही माँ वाली ये बात डालकर इसे बड़ा बनाने की कोशिश की है। उतना ही बड़ा जैसे व्यापारी 2 मिनट में बनने वाले मैगी को माँ द्वारा सर्टिफाइड खाना बताकर एक ख़ास क्षेत्र में बहुत बड़ा व्यापार खड़ा कर देते हैं।

ख़ैर कहानी ये है कि एक बहुत छोटा सा रोशनदान है जिससे होकर ब्रह्मांड जितनी धूप छनकर उस 56 साल की अधेड़ उम्र के औरत के चश्में पर पड़ रही है। चश्में पर पड़ी धूप की किरणें चश्में के भीतर नहीं जा रही। वो किसी बाग़ी नौजवान की तरह चश्में की सतह को घर का दरवाज़ा समझकर, लात मारकर बहुत दूर जा रहीं हैं। बहुत दूर जहाँ इसी 56 वर्ष की अधेड़ उम्र की औरत के क़रीब बैठी 80 वर्ष की बूढ़ी औरत के सर पर सफेद बाल हैं।

यह एक अनाथालय हैं जहाँ ये 56 वर्षीय महिला हर रोज़ इस बूढ़ी महिला की देखभाल करने के लिए आती है। इन दोनों के बीच यूँ तो कोई ऐसा ख़ून का रिश्ता नहीं है लेकिन फिर भी यह औरत पिछले 10 साल से यहाँ इस वृद्ध महिला को देखने आती है। इन दोनों में ज़्यादा बातें नहीं होती। कभी-कभी वृद्ध महिला इस अधेड़ महिला को बस यह कहकर हँस देती कि हमारे समय में यही ओला उबर जमीन पर चला करते थे। आसमान में उड़ते नहीं थे फिर भी हमें जहाँ जाना होता था वक़्त पर चले जाते थे लेकिन अब तुम उड़कर भी आती हो तो तुम्हें काफ़ी देर लग जाती है।

बूढ़ी महिला की इस बात पर अधेड़ उम्र की महिला भी हर बार हँसकर यही कह दिया करती थी कि अम्मा जैसे आपके टाइम पर रोड ट्रैफिक हुआ करता था अबके टाइम पर एयर ट्रैफिक हुआ करता है और आपको तो ये भी पता है कि हर 1 घण्टे में हम सभी को ऑक्सीजन सिलिंडर भी रिफ़िल कराना होता है। अगली बार अगर मैंने ज़ल्दबाजी की और ऑक्सीजन सिलेंडर भराए

बिना यहाँ आई तो बीच रास्ते में ही भगवान के पास जाना होगा। फिर आपके इन सफ़ेद बालों में तेल कौन लगाएगा। 80 वर्ष की महिला इस बात पर कुछ नहीं कहती बस मुस्कुरा देती. उसे अपनी मुस्कुराहट की झिलझिलाती से दूधिया चादर के बीच 32 साल के एक मुस्कुराते हुए लड़के का चेहरा नज़र आता। इस चेहरे के नज़र आते ही वह वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली जाती।

उस कमरे में जहाँ की दीवार पर एक तस्वीर में यह लड़का मुस्कुराता हुआ नज़र आता। यह लड़का आज शायद 82 साल का होता और मुस्कुराते हुए उसके सारे दाँत नज़र नहीं आते लेकिन चेहरे पर अब भी वही ज़िंदादिली वही प्रेम नज़र आता जो शायद 50 साल पहले था।

50 साल पहले उस दिन जब उसने सड़क पर बस की चपेट में आने से एक 6 साल की लड़की को बचाया था और ख़ुद बच नहीं पाया था। उस दिन एक 30 साल की औरत उस 6 साल की बच्ची पर बहुत चिल्लाई थी। जैसे इसी बच्ची ने उस 32 साल के लड़के को सालों तक तस्वीर में बंधे रहने के लिए आमादा किया हो। 30 साल की लड़की शायद उस दिन समझ नहीं पाई थी कि 32 साल का यह लड़का सच में एक प्रेमी है जो दुनिया भर के लोगों से प्यार करता था। 6 साल की उस अनजान लड़की से भी जिसकी उसने जान बचाई थी।

30 साल की उस लड़की को यह बात उस समय समझ आई जब वो 34 साल की लड़की थी। 34 साल की लड़की को भी यह तब समझ आया जब वो 6 साल की लड़की की तलाश में बहुत भटकी थी। उसे एहसास हो गया था कि 32 साल का वह मुस्कुराता हुआ लड़का हो न हो कहीं न कहीं उसी लड़की की मुस्कराहट में चिपका होगा। 34 साल की लड़की ने उस 6 साल की लड़की को बहुत ढूँढ़ा पर वह लड़की न मिली।

मिलती भी कैसे? वह 6 साल की लड़की किसी और देश में थी और 10 साल की थी। इस लड़की को भी 32 साल के उस मुस्कुराते लड़के और 30 साल की इस परेशां लड़की के बारे में जानने में 44 साल लग गए।

वीडियो क्लिप

वीडियो क्लिप में एक लड़की एक कॉफ़ी शॉप की कुर्सी के पास खड़ी है। उसके सामने वाली कुर्सी पर उसी की उम्र का एक लड़का बैठा हुआ है। वीडियो में दिख रहा है कि फ़र्श पर गिरी एक अँगूठी उड़कर लड़की के हाथों में आ गई है। अँगूठी हाथ में आने बाद लड़की कुर्सी पर बैठ रही है। उसके चेहरे पर गुस्से और खीझ के भाव आपस में कुश्ती लड़ रहे हैं। लड़की कुर्सी पर बैठ गई है। लड़की के ठीक पीछे दूर खड़े एक दूसरे शख़्स की जमीन पर गिरी कॉफ़ी धीरे-धीरे वापिस उसके मग में आ रही है। लड़की अब धीरे-धीरे वापिस अपने अँगुलियों में वो अँगूठी पहन रही है जिसे वो पिछले 7 साल से पहनती आ रही है। लड़के के चेहरे पर शून्य का भाव है।

वो शख़्स हर रोज़ अपने आँखों के सिनेमाघर में इस वीडियो क्लिप को देखता है। उसे लड़की का वापिस से अँगूठी पहन लेना अच्छा लगता है। पीछे खड़े आदमी के मग में वापिस कॉफ़ी का आ जाना भी उसे अच्छा लगता है। वो चाहता है कि जिस तरह वीडियो में फ़र्श पर गिरी कॉफ़ी उस शख़्स के मग में वापिस आ जाती है वीडियो वाली लड़की भी वापिस उसकी ज़िंदगी में आ जाए। वो सच से थोड़ा डरता है इसलिए वो इस वीडियो को अपनी आँखों में हमेशा रिवर्स कर के देखता है। कभी-कभी चीज़ें उल्टा करके देखने पर बहुत सीधी नज़र आती हैं।

•••

चम्मच की कहानी

87 डे राइटिंग चैलेंज के अंतर्गत मुझे रोज़ाना कम से कम 2-3 पन्ने लिखने थे हालाँकि इस चैलेंज को बीते 2 दिन हो चुके हैं और मैं आज इस तीसरे दिन यहाँ अपने रचनात्मक लेखन के कार्य को पूरा कर रहा हूँ। यह कहीं से भी थोड़ा सा भी रचनात्मक नहीं है। हालाँकि, यह एक शुरुआत है। क्योंकि मुझे अभी अचानक से ऐसा लग रहा है कि जैसे ऐसे मैं कुछ भी लिखता जा रहा हूँ मेरे मन में रचनात्मक ख़्याल आने शुरू हो रहे हैं। मुझे बस इन ख़्यालों को किसी तरह एक कहानी या रचना का रूप देना है। लेकिन समझ में नहीं आ रहा है कि यह काम मैं कैसे करूँ।

मैंने अंग्रेज़ी में कई ऐसी किताबें पढ़ी हैं या किताबों के नाम सुने हैं जो लोगों को लिखने की कला के बारे में सिखाते है। मेरा हमेशा से यह मानना रहा था कि कोई भी किसी को लिखना सिखा नहीं सकता। हालाँकि, अब मुझे अपनी इस धारणा में पूरी तरह से सच्चाई नहीं दिखती। अब मुझे लगने लगा है कि लिखना भी सीखा जा सकता है। यह अलग बात है कि कई लोगों में स्वतः ही लिखने की कल्पना पनपती है और बिना सीखे भी अच्छा लेखन कर सकते हैं। हालाँकि, इसके लिए भी रोज़ाना या हफ़्ते में एक या दो बार लेखन का अभ्यास ज़रूरी है। हम जब तक लिखेंगे नहीं तब तक हमें कैसे पता चलेगा कि हम कितना अच्छा या कितना ख़राब लिख सकते हैं।

जैसा की अभी मैंने यह जो कुछ भी लिखा है उसे अगर में दूसरी बार फिर से लिखना शुरू करूँ तो मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि मैं दूसरी बार पहली बार की तुलना में ज़्यादा बेहतर ढंग से लिख सकता हूँ।

उदाहरण के लिए:

मान लीजिए की अभी कोई मुझे कह दे कि चम्मच पर कोई कहानी लिखकर दिखाओ। ऐसी स्थिति में मैं क्या करूँगा? मैं यह तो नहीं कह सकता कि चम्मच पर कैसे कहानी लिख सकते हैं? अगर मैं ऐसा कहता हूँ तो फिर

मुझे कहानी नहीं लिखनी चाहिए क्योंकि मैं ऐसा सोचकर ही अपने आप को लेखक होने से ख़ारिज कर रहा हूँ। एक लेखक कुछ भी लिख सकता है और जो लेखक बनना चाहते हैं वो तो वो सब कुछ लिख सकते हैं जो एक लेखक चाहकर भी नहीं लिख सकता। जैसे मैं अभी यहीं चम्मच कि कहानी शुरू कर रहा हूँ। चम्मच की कहानी लिखने के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि मैं शुरुआत ऐसे करूँ कि किसी ज़माने में एक चम्मच था या फिर बहुत पहले की बात है एक चम्मच हुआ करता था। यह भी ज़रूरी नहीं कि मेरी कहानी का मुख्य बिंदु एक चम्मच हो हाँ लेकिन मैं यह इतना कर सकता हूँ कि कहानी किसी कि भी कहूँ कहानी में चम्मच ज़रूर हो और बड़ी-बड़ी आर्ट गैलरी में घंटो दीवारों पर abstract आर्ट को समझने वाले कला के पारखी जैसे लोग मेरी कहानी पढ़कर यह अर्थ निकालने में सफल रहे कि कहानी में मुख्य पात्र एक चम्मच ही है।

चम्मच की कहानी भूख से शुरू होती है। उस भूख से जो अभिराम के आँतों में किसी रास्ता भटके हिरन की तरह कुलाँचे भर रही थी। भूख इतनी तेज़ थी कि पेट से हलक के रास्ते मुँह से 'श्रेया, बहुत भूख लगी है खाना लगा दो' की आवाज़ में तब्दील होकर बाहर निकल गई और उस 3 BHK घर के सभी कमरों और कोनों में श्रेया को ढूँढ़ने लगी। आवाज़ को श्रेया नहीं मिली। आवाज़ वापस मुँह के अन्दर हलक के रास्ते पेट में चली गई और पहले से ज़्यादा तीव्र भूख बन गई। इतनी तीव्र की अभिराम के पैर काँपे और काँपते हुए किचन की तरफ़ बढ़ गए।

किचन में राशन का काफ़ी सामान था। राशन के डब्बों के ऊपर जमीं धूल से यह साफ़ पता चल रहा था कि अभिराम खाना नहीं बनाता था। बाहर ही खाता था। डस्टबिन में ढेर सारे नूडल के रैपर रखे हुए थे। डस्टबिन में रखे नूडल के रैपर किसी जन्म में टाइपराइटर होते तो वह लिखते 'कभी-कभी तेज़ भूख लगने पर अभिराम नूडल्स बना कर खा लिया करता था।' अगर श्रेया किसी जन्म में टाइपराइटर होती तो वह लिखती "अभिराम! नूडल्स खाना सही नहीं है! रुको, मैं तुम्हारे लिए बढ़िया सा राज़मा चावल बना देती हूँ। मैंने कल रात राज़मा भिगो कर रख दिए थे।

कहानी लिखने के बीच मैंने यह चीज़ पाई कि जैसे ही आप कहानी में सोचने लगते हैं आप रचनात्मक होने लगते हैं और आपके लिखने की गति काफ़ी धीमी हो जाती है। बहुत धीमी, इतनी धीमी की आप कहानी लिखने का ख़्याल छोड़ देते हैं और तेज़ी से लिखने के चक्कर में कुछ भी लिखने की कोशिश करने लगते हैं।

पर अचानक आपके मन में यह ख़्याल आता रहता है कि अभिराम का क्या हुआ होगा? श्रेया कौन थी? यह चम्मच की कहानी कैसे हुई? इसमें चम्मच कहाँ है? कहानी भूख से किचन की तरफ़ बढ़ते-बढ़ते डस्टबिन तक रुक क्यों गई? कहानी डस्टबिन से बाएँ वाले स्लैब की तरफ़ जाती तो वहाँ शायद बर्तन रखने वाले ट्रे में चम्मच मिल जाते? उन चम्मच से इतना तो पता चल जाता कि भाई इस कहानी में कहीं न कहीं चम्मच तो है। आख़िर में कहानी तो चम्मच की ही कही जा रही थी। लेकिन कहानी में अभिराम का भी ज़िक्र हुआ। क्या जैसे कोई नूडल का रैपर पिछले जन्म में टाइपराइटर हो सकता है तो क्या यह मुमक़िन है कि पिछले जन्म में अभिराम एक चम्मच हो? या शायद अभिराम कुछ देर बाद बाथरूम में मरा पड़ा मिले और अगले जन्म में चम्मच बनने की तैयारी में लग जाए।

तैयारी तो करनी ही होती है। आदमी जन्म लेने के बाद बूढ़े होने तक कुछ न कुछ तैयारी में ही लगा रहता है। किलकारियाँ लेते समय बोलने की तयारी में, घुटनों के बल घिसटते हुए चलने की तैयारी में, A फॉर एप्पल से J फॉर जॉब की तयारी में, तरक्की की तैयारी में, ठहरने की तैयारी में, ठहरते-ठहरते हमेशा के लिए थम जाने की तैयारी में। अभिराम भी तो काफ़ी सालों से तैयारी ही कर रहा था। चम्मच से चम्मच बन जाने की तैयारी। चम्मच से चम्मच कैसे बनते हैं? शायद अगर कोई अभी यह कीवर्ड यूट्यूब पर सर्च करे तो उसे कोई सही वीडियो न मिले। चम्मच को पिघला कर दुबारा चम्मच जैसे साँचे में डाल कर चम्मच बनाना कोई काम भी है क्या। कोई फ़ायदा नहीं होगा। चम्मच चम्मच ही रहेगा।

अभिराम चम्मच से चम्मच कैसे बना?

अभिराम के चम्मच से चम्मच बनने की कहानी में चम्मच का बहुत बड़ा योगदान है। अभिराम को नूडल्स चम्मच से नहीं काँटे से खाना चाहिए। अभिराम को क्या हम सभी को नूडल्स चम्मच से नहीं काँटे से खाना चाहिए। काँटों को नूडल्स के बीच इस तरह घुमाना चाहिए की नूडल्स धागों की तरह काँटों में उलझ जाए और फिर आसानी से खा लिया जाए। उलझे हुओं को खाना बहुत आसान होता है।

चम्मच, चम्मच था। काँटा नहीं था। फिर भी चम्मच ने अभिराम को अपने आप में किसी नूडल्स की तरह उलझाए रखा था। जैसे चम्मच एक दिन अभिराम को खा जाना चाहता हो। जैसे चम्मच रोज़ाना लाइटर से जले जाने से परेशान हो गया हो। जैसे श्रेया अभिराम से परेशान हो गई हो। जैसे अभिराम उसे मैसेज करता हो "I am clean from 15 days. Come back. I am trying". श्रेया वापस लौट आती हो।

नूडल के रैपर डस्टबिन से ग़ायब हो जाते हो। कटोरे में पानी भरकर राजमा रख दिए जाते हो। डीवीडी प्लेयर में यादों की बारात फ़िल्म की डिस्क डाल दी जाती हो। सोफे के कवर बदल दिए जाते हो। चम्मच के तले के नीचे का कालिख समेटकर आँखों में समेट लिया जाता हो। दुनिया सँवर जाती हो। यादों की बारात फ़िल्म के एंडिंग जैसे चीज़ें ठीक हो जाती हो।

लेकिन अभिराम चम्मच से चम्मच कैसे बना? इतना कुछ लिखे जाने के बाद भी यह सवाल वैसा का वैसा ही है। 'वैसा का वैसा' जसे अभिराम रह गया वैसा का वैसा। जैसे श्रेया के फिर चले जाने जैसा. श्रेया के मर जाने जैसा. चम्मच के तले में फिर से अन्धेरा भर जाने जैसा। श्रेया के दुबारा टाइपराइटर बनकर जन्म लेने की तैयारी जैसा। अभिराम का नूडल बन जाने जैसा। धड़ाम की आवाज़ से बाथरूम में कुछ गिर जाने जैसा। घर के लेटर बॉक्स में न्यू बिगनिंग रिहैब सेंटर के लेटर्स का ज़मा हो जाने जैसा। अभिराम का चम्मच से चम्मच बन जाने जैसा। चम्मच का अभिराम की डेड बॉडी बन जाने जैसा। इस कहानी का यूँ ही बिना कुछ बताए बिना कुछ समझाए ख़त्म हो जाने जैसा।

हिन्दी पंक्तियाँ

सोशल मीडिया पेज से प्रकाशन तक का सफ़र

पंक्तियाँ पहल की शुरुआत 2017 में एक इंस्टाग्राम पेज के तौर पर हुई। IIT Kanpur में पढ़ते हुए दीपक शंकर जौरवाल ने पाया कि जिन लोगों की स्कूल की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से हुई थी वो अभी भी अंग्रेज़ी बोलने में उतना सहज महसूस नहीं करते थे। ऐसे लोगों में दीपक भी थे। उन्हें बहुत कुछ बोलना था लेकिन अंग्रेज़ी सही से न आने की वजह से पब्लिकली बोल नहीं पा रहे थे।

इसलिए अपने 3rd ईयर में दीपक ने पंक्तियाँ पेज बनाया जहाँ लोग अपने विचार, आइडिया या अन्य कोई कलात्मक कार्य हिन्दी या अंग्रेज़ी में भेज सकते थे। दीपक उनमें से अच्छे काम को चुनकर, उसका पोस्टर बनाकर, पेज पर पब्लिश कर देते। धीरे-धीरे यह काम कैम्पस की बॉउंड्री से बाहर निकलकर और लोगों तक पहुँचने लगा और सभी तरह के लोग पेज से जुड़ने लगेl आज फ़ेसबुक, ट्विटर और सभी जगह मिलाकर हिन्दी पंक्तियाँ से 1 मिलियन से भी ज़्यादा लोग जुड़े हुए हैं।

इस अभिव्यक्ति के कार्य को आगे बढ़ाते हुए और नये प्रयोग करते हुए उसी जोश और उत्साह के साथ हम पंक्तियाँ प्रकाशन की शुरुआत कर रहे हैं। उम्मीद है कि सभी पुस्तकों और लेखकों को अपने हिस्से का प्यार आपसे ज़रूर मिलेगा। पढ़ते रहिए, लिखते रहिए और ख़ुद को अभिव्यक्त करते रहिए।

धन्यवाद
टीम पंक्तियाँ

हिन्दी पंक्तियाँ से जुड़ने के लिए:

Facebook : @hindipanktiyaanpage
Twitter : @hindi_panktiyan
Whatsapp : 9129374050
Mail : panktihouse@gmail.com
Instagram : @hindipanktiyaan.official

लेखक से जुड़ने के लिए:

Instagram: @arahaan40
Facebook: @arahaan40
X: @arahaan40
Mail: arahaan40@gmail.com

Instagram

@hindipanktiyaan.official

@panktiprakashan

@panktipustkalay

Instagram: @arahaan40_

ब्रजेश कुमार सिंह मूलतः बिहार के कैमूर से हैं, परवरिश मुजफ्फरपुर में हुई और फिलहाल दिल्ली-NCR में निवास करते हैं। पत्रकारिता की पढ़ाई भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय से की। मीडिया और निजी क्षेत्र में अनुभव रखने वाले ब्रजेश अरहान नाम से लेखन करते हैं। मुराक़ामी और काफ्का से प्रेरित हैं। "इतवार का एक दिन" अरहान का पहला कहानी संग्रह है।

कहानियाँ / Stories

मूल्य ₹249

